CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आधुनिक तेलुगू कविता

संपादक
अनुवादक :— बैरागी

आंध्र-प्रदेश साहित्य एकादमी
कला-भवन, हैदराबाद–४

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आधुनिक तेलुगू कविता

संपादक
अनुवादक :— बैरागी

आंध्र-प्रदेश साहित्य एकादमी
कला-भवन, हैदराबाद-४

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रकाशक:-
आंध्र प्रदेश साहित्य एकादमी
सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रतियाँ-१०००

मूल्य रु. ७.५०

मुद्रक:-
दक्षिण भारत प्रेस
हैदराबाद-४

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

—: विषय सूची :—

विषय-सूची		
कवि-परिचय		
आधुनिक तेलुगू कविता		
कविते हे कविते !	श्रीरंगम् श्रीनिवासराव	३
अवतार	,,	१५
जगन्नाथ के रथचक्र	,,	१७
विदूषक का आत्म-घात	,,	२७
युग-शक्ति का आवाहन	शिष्टलाउमा महेश्वरराव	२९
वैतरणी	,,	३३
प्रेम	,,	३५
घोर-अमास	,,	३९
कपाल-मोक्ष	श्रीरंगम् नारायण बाबू	४१
खिड़की में दीया	,,	४७
क्या बोली	,,	५१
अरुण-कमल	वैरागी	५७
गरमी की रात	,,	५९
वर्णों की वाटिका	,,	६३
चिरंजीवी मानव से मृत्यु	आरुद्रा	६७
नगरी	,,	७५
त्यौहार	श्रीरंगम् नारायण बाबू	८७
श्रीरंगम् नारायण बाबू	वैरागी	८९
फूटा दर्पण	बैरागी	९३
मस्तिष्क में लेबरटरी	दाशरथी	९९
जाग्रत मानव को देखने जाता हूँ	,,	१०९
अचुंबित	,,	१११
मानव-गीत	सि. नारायण रेड्डी	११९
समय पुकारता	,,	१२५
मोड	,,	१२७
रेखा-चित्र	,,	१२९
अक्षर-गवाक्ष	,,	१३१
धूप-छाँह	तंडूरि सुब्बाराव	१३३

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुझे छोड़ गया कहीं मेरा सनम !	,,	१३५
स्वर्ग और नरक	पुरिपड़ा अप्पल-स्वामी	१३७
अंधकार	पालगुम्मि पद्मराजू	१४५
नान्यः पंथा	विद्वान विश्वम्	१५३
उत्कंठा	पठाभि	१६३
हृदय-तलाकी हँसी	तिलक	१६५
विगतम् तरणमत्र वैतरणी	रेंटाल गोपालकृष्ण	१६९
महा-निशीथिनी	भागी नारायण मूर्ती	१७५
जंगल	के. वी. रमणारेड्डी	१८१
विक्षुब्ध विश्व	अनिसेट्टी सुब्बाराव	१८५
ठेला-गाडी	पि. गणपति शास्त्री	१९१
अनल-बीन	मल्लवरपु विश्वेश्वरराव	१९३
पुनरावृति	कालोजी नारायण राव	१९७
अशोक	बेल्लम्कोंडा रामदास	१९९
और जब मैं बूढा हो जाऊँगा	एल्चूरी सुब्रह्मण्यम्	२०१
हे निशीथिनी	गंगिनेनी वेंकटेश्वर राव	२०५
भय-भीत	अजंता	२०९
दिन-दिन देखता रहा हूँ	,,	२१३
काल-रथ	नार्ल चिरंजीवी	२१५
द्वंद्व से परे	नार्ल वेंकटेश्वर राव	२१७
तुम चले जिस साँझ	अब्बूरिवरदराजेश्वर राव	२१९
एक कविता	रायप्रोलु राजशेखर	२२३
पौ फटेगी नहीं !	केशवराव	२२७
आसमान में बाज	,,	२३१
अंबर को दीपित करूँगा	,,	२३५
उषा का स्वागत	मादिराजु रंगाराव	२३७
प्रस्थान	मनमोहन साहे	२४१
मेरे वारिस	यादवरेड्डी	२४५
चाँदनी और कवि	नायनि कृष्णकुमारी	२४७

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कवि-परिचय

श्री श्रीरंगम् श्रीनिवासराव, बी. ए., जन्म-ई. १९१० । विजय-नगरम्, विशाख जिले के निवासी तेलुगू के आधुनिक कवियों में अग्रगी, प्रगति-वादी कवियों के अगुआ । तेलुगू और अंग्रेजी के विद्वान, पत्रकार, सिनीलेखक, महाप्रस्थानम्, खड्ग-सृष्टि, आदि विख्यात कविता-संग्रह हैं ।

शिष्ट्ला-शिष्ट्ला उमामहेश्वरराव बी. ए. । जन्म १८९८ निधन १९३८ गुण्टूर जिले के निवासी । विलक्षण प्रतिभावान कवि । नवमि-चिलुका विष्णु-धनुवु आदि उनके प्रसिद्ध कविता संग्रह हैं ।

नारायण बाबू-श्रीरंगम् नारायण बाबू । जन्म १९०६ निधन १९६२ विजयनगर विशाख जिले के निवासी । तेलुगू और अंग्रेजी के विद्वान, संगीत और नाट्य-शास्त्र के ज्ञाता । प्रसिद्ध कविता-संग्रह-रुधिर-ज्योति' ।

बैरागी-आलूरी बैरागी चौधरी । जन्म-१९२५, तेनाली, गुंटूर जिले के निवासी, तेलुगू, अंग्रेजी और हिन्दी के विद्वान और कई भाषाओं के जानकार । कहानीकार, निबन्धकार । मुख्य रचनाएं-चीकटि नीडलू-(कविता संग्रह) नूतिलो-गोंतुकलु, (काव्य) । बदली की रात (हिन्दी कविता-सग्रह) ।

आरुद्रा-भागवतुल शंकर शास्त्री-जन्म १९२२, विशाख जिले के निवासी, अंग्रेजी और तेलुगू के विद्वान । तेलुगू भाषा के इतिहासकार । सिनी-लेखक; प्रसिद्ध रचनाएं- त्वमेऽहवाम्' 'सिनीवाली' आदि ।

दाशरथी-दाशरथी कृष्णमाचार्य, जन्म-१९२७, हैदराबाद के निवासी संस्कृत और तेलुगू के विद्वान, सिनी-लेखक । आज-कल आल इंडिया रेडियो, मद्रास में काम कर रहे हैं । अग्निधारा, रुद्र-वीणा, महाबोधि, पुनर्नवम् आदि प्रसिद्ध कविता-संग्रह ।

नारायणरेड्डी-डा. सिंगिरेड्डी नारायणरेड्डी, पी. हेच. डी. जन्म १९३० । हैदराबाद के निवासी । प्रसिद्ध कवि, सिनी-कवि । आज-कल उस्मानिया यूनिव-सिटी में तेलुगू के रीडर हैं । नागार्जुन-सागरम्, स्वप्न भंगम्, अजता-सुंदरि, अक्षरालु गवाक्षालु वगैरह प्रमुख कृतियां ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुरिपंडा-पुरिपंडा अप्पलस्वामी-जन्म १९०८। विशाखपट्टणम् के निवासी, तेलुगू आधुनिक कविता के मूल-पुरुषों में से एक। तेलुगू, अंग्रेजी के अलावा हिन्दी, बंगाली भी जानते हैं। मुरली-ध्वनि, सौदामिनि आदि मुख्य कविता-संग्रह। हिन्दी और ओरिया से इन्होंने अनेकों पुस्तकों का अनुवाद किया है।

पा. प.-पालगुम्मि पद्मराजू-जन्म १९१५। गोदावरी जिले के निवासी, कई साल तक लेक्चरार का काम किया। आज-कल सिनी लेखक। प्रख्यात नाटककार और कहानीकार। अंतर्राष्ट्रीय कहानी-प्रतियोगिता में पुरस्कार भी पाया।

विद्वान विश्वम्-जन्म १९१५। अनंतपूर जिले के निवासी, संस्कृत, तेलुगू और अंग्रेजी के विद्वान। प्रसिद्ध पत्रकार, अनुवादक, पेन्नटि पाटा, (काव्य) प्रेमिचानु (उपन्यास) आदि प्रसिद्ध रचनाएं हैं।

पठाभि-तिक्कवरपु पठाभिरामिरेड्डी-जन्म १९१४। आधुनिक कविता के अग्रणियों में एक। इन्होंने कविता में कई तरह के प्रयोग किए। मुख्य रचना, फिडेल रागाल डजन, नीलगिरि नोलिमलु आदि कविता-संग्रह।

तिलक-बालगंगाधर तिलक-जन्म १९१९। निधन १९६६। गोदावरी जिले के निवासी। तेलुगू और अंग्रजी में निष्णात। प्रसिद्ध प्रगतिवादी कवि। इनके असमय निधन से तेलुगू को महान क्षति पहुची।

रेंटाला-रेंटाला गोपालकृष्ण, उम्र ४० के करीब। विजयवाडा के निवासी, प्रमुख प्रगतिवादी कवि। सत्तर्पण, सर्पयागम्, आकलि पाटलु आदि मुख्य कविता-संग्रह हैं। आज कल 'आन्ध्रप्रभा' दैनिक, विजयवाड़ा में काम करते हैं।

श्री भागी नारायणमूर्ती, बी० ए०-उम्र ५७। जन्म विजयनगरम्। आंध्र प्रदेश सरकार में काम करके विराम पा गए हैं। आज-कल हैदराबाद में ही रहते हैं।

रमणारेड्डी-के. वी. रमणारेड्डी, बी ए., जन्म १९२८। नेल्लोर जिले के निवासी तेलुगू और अंग्रेजी के विद्वान। आन्ध्र के प्रमुख प्रगतिवादी कवि और अत्यन्त प्रसिद्ध आलोचक प्रमुख कविता-संग्रह अडवो, भुवन घोष, अंगार वल्लरी आदि। आज कल नेल्लोर जिले में कावली के कालेज में प्राध्यापक का काम करते हैं।

अनिसेट्टी-अनिसेट्टी सुब्बाराव; जन्म १९२८। गुण्टूर जिले के निवासी,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कवि और नाटककार, सिनी-लेखक, प्रमुख प्रगतिवादी कवि, कई पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं। अग्नि-वीणा प्रमुख कविता सग्रह ।

गणपति शास्त्री–पिलका गणपति शास्त्री, जन्म १९११। गोदावरी जिले के निवासी। संस्कृत, तेलुगू और अंग्रेजी के विद्वान। अध्यापक, पत्रकार, संस्कृत से अनेक ग्रन्थों के अनुवादक। विभ्रान्तामरूक, प्रमद्वरा, प्रणि-दीपिका आदि मुख्य काव्य।

विश्वेश्वरराव–मल्लवरपु विश्वेश्वरराव-जन्म १९०६। गोदावरी जिले के निवासी, शान्ति-निकेतन के विद्यार्थी। पत्रकार, रवींद्र की रचनाओं के अनुवादिक। काव्य, कल्याण-किंकिण आदि।

कालोजी-कालोजी नारायणराव, जन्म १९१४। वरंगल जिले के निवासी। तेलुगु के अलावा हिन्दी, मराठी, उर्दू और अंग्रेजी के जानकार। कहानीकार, अनुवादक। मुख्य कविता-संग्रह-ना गोडव।

रामदास बेल्लमकोंडा रामदास-जन्म १९२३, निधन १९६९। गुण्टूर जिले के निवासी। पत्रकार, अनुवादक, तेलुगू, अग्रजी के विद्वान। मुख्य कविता–संग्रह, नयागरा, कविता आदि।

एल्चूरी-एल्चूरी सुब्रह्मण्यम्, जन्म १९२०। गुण्टूर जिले के निवासी। तेलुगू और अंग्रेजी के विद्वान। पत्रकार, कवि। कई अनुवाद ग्रन्थ प्रकाशित किए हैं। आज कल सोवियत रूसी कान्सलेट, मद्रास, में काम करते हैं।

गंगिनेनी-गंगिनेनी वेंकटेश्वरराव-उम्र, ४५ के करीब। गुण्टूर जिले के निवासी, प्रमुख प्रगतिवादी, कवि, मुख्य कविता-सग्रह उदयिनी।

अजन्ता-उम्र-४० के करीब कई पत्र-पत्रिकाओं में काम किया। आधुनिक प्रयोगवादी कवि। आज-कल आन्ध्र-प्रभा, दैनिक विजयवाडा में काम करते हैं।

चिरंजीवी-नार्ल चिरंजीवी, पत्रकार। बच्चों के लिए कहानियां लिखी, नाटककार। आज-कल हैदराबाद में रहते हैं। फिल्मी काम भी किया है। मुख्य रचना विप्लवात्मा आदि।

वेंकटेश्वरराव-नार्ल वेंकटेश्वरराव; जन्म १९०८। प्रख्यात पत्रकार, आन्ध्र ज्योति (साप्ताहिक) और आन्ध्र-प्रभा दैनिक के संपादक रह चुके। आज

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कल 'आन्ध्र-ज्योति' दैनिक के संपादक हैं। नाटककार, राजनीतिक व्याख्या-कार। कोत्तगड्डा-नाटक, नालँ बारि माटा (कविता संग्रह) प्रमुख रचनाएं।

वरदा-अब्बूरि वरदराजेश्वरराव, उम्र ५० के करीब। पत्रकार, नाटक-कार, अनुवादक, अंग्रेजी लेखक। प्रसिद्ध रचना, अंदाका मुक्त यात्रा आदि। आज-कल देहली में रहते हैं।

राजशेखर-रायप्रोलु राजशेखर, उम्र ४७ के करीब। सुप्रसिद्ध कवि रायप्रोलु सुब्बाराव के सुपुत्र, तेलुगू और अंग्रेजी के विद्वान, आजकल आल इंडिया रेडियो, देहली में काम कर रहे हैं।

केशवराव-मानेपल्ली हृषी केशवराव. जन्म १९३९ नई पौध के कवियों में अग्रणी, कहानीकार, सरकारी नौकरी करते हैं। प्रसिद्ध रचना-उदयिंचनि उदयालु।

श्री मादिराजु रंगाराव; पी. हेच. डी. उम्र ४० के करीबन आज-कल वरंगल कालेज में प्राध्यापक का काम करते हैं। 'मेलुकोन्न आकाशम्' आदि अनेक कविता-संग्रह प्रकाशित किए हैं।

श्री के. यादव रेड्डी–बी. ए. उम्र, ३० के करीब। जन्म-स्थल, नलगोंडा नई पौध के कवियों में एक। आजकल हैदराबाद के एक स्कूल में अध्यापक का काम करते हैं। अनेक भाषाओं में प्रवीण जिनमें हिन्दी भी एक है।

श्री मनमोहन साहे-बी. ए. जन्म १९४२, शिक्षा-नरसपूर, विजयवाडा, और हैदराबाद में। आजकल एक दवाओं की कम्पनी में प्रतिनिधि की नौकरी करते हैं। कई भाषाएं जानते हैं।

श्रीमती नायनि कृष्णकुमारी बी. ए. आनर्स और संस्कृत एम. ए.- जन्म १४ मार्च, १९३०। आप तेलुगू के सुप्रसिद्ध कवि श्री नायनि सुब्बाराव जी की सपुत्री हैं। बाल-साहित्य-गीतमी, 'आया था' कहानी-संग्रह। अनेक विद्वत्ता-पूर्ण लेख लिखे। आजकल उस्मानिया यूनिवर्सिटी, हैदराबाद में प्राध्यापिका का काम करती हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आधुनिक तेलुगू कविता

पता नहीं क्यों, लेकिन इतना सत्य है कि आधुनिक कविता का नाम लेने से लोग चिढते हैं। जो कुछ भी अबूझ हो, पहेली जैसी लगती हो और जिसका अन्वय करने या माने लगाने में माथा-पच्ची करनी पडती हो उसकी आधुनिक कविता से उपमा दी जाती है। इसी संग्रह में एक आधुनिक कवि स्वयं कहते हैं:-

"और एक दूसरे के नाते होनी-अनहोनी हो, छूते अछूते हों, जाने अजाने हों, आधुनिक कविता की कड़ियों से दीखते हुए भी" – (नगरी, आरुद्र)

तो क्या यह सच है कि आधुनिक कविता की कडियां ऐसी दीखती हैं जैसे उनमें कोई ताल्लुक न हो, या कवि ने जन-साधारण की धारणा में सिर्फ हां में हां मिला दी है? इसका निर्धारण करने के पहले हमें यह जानना होगा कि आखिर यह आधुनिक कविता है किस चिड़ियाँ का नाम? कविता तो सनातन काल से होती आई है; लेकिन हरेक युग की कविता की कुछ अपनी विशिष्टताएँ हैं, कुछ गुण या अवगुण हैं जो उस युग की कविता के प्रचलित नाम को सार्थक करते है। जैसे रीतिकालीन कविता की शृंगार-परता, शाब्दिक या कोरे आलंकारिक चमत्कार पर जरूरत से बहुत ज्यादा जोर देना, वस्तु और शैली की नितान्त कृत्रिमता वग़ैरह। रीति-कालीन कविता का नाम लेते ही उसके इन सब अवगुणों और कुछ गुणों का भी चित्र हमारे सम्मुख आ जाता है। उसी तरह आधुनिक कविता का नाम लेने से हमारे सामने कैसा चित्र आता है?

आखिर 'आधुनिक' शब्द से हमारा मतलब क्या है? जवाब मिलेगा-आधुनिक युग की। अब सवाल उठता है-'आधुनिक युग' से हमारा मतलब क्या है? जवाब मिलेगा- 'औद्योगिक क्रान्ति' के बाद का युग याने पूंजीशाही का युग या भारत में ब्रिटिश वालों के पैर जमा लेने के बाद का युग। मोटे तौर पर यह

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ठीक भी है। असल में बात यह है कि गत इतिहास पर विचार करने में सहूलियत के लिहाज से युगों का यह काल्पनिक विभाजन मोटे तौर पर किया गया। लेकिन ये युग संसार के सभी देशों में सम-कालीन नहीं हुए। औद्योगिक क्रान्ति यूरप में सब से पहले शुरू हुई। नतीजा यह कि सामंतशाही का अस्त और पूंजीशाही का उदय वहाँ अत्यधिक स्पष्ट रूप से गोचर हुए। इस युग के साथ ही अवतीर्ण रोमांटिक साहित्य का प्रभाव भारत की सभी भाषाओं के साहित्य पर साफ दिखाई देता है; यद्यपि हमारे यहाँ औद्योगिक क्रान्ति द्वारा आई चेतना बहुत ही पीछे फैली और सो भी बाहर से उधार लाई गई।

अंग्रेजी की रोमांटिक कविता पर केवल औद्योगिक क्रान्ति का ही नहीं, बल्कि फ़्रान्स के समकालीन समाज की, क्रान्ति के पूर्व और पश्चात् की जो नई नई विचार-धाराओं की हवाएं चली, उनका भी पूरा प्रभाव दिखाई पडता है। शेल्ली और बैरन की कविता और फ़्रान्सीसी क्रान्ति का प्रभाव एक अंग्रेजी साहित्य ही क्या; सारे संसार के सभी साहित्यों पर पडा। किसी भी देश या समाज में जब कभी किसी महान परिवर्तन का समय होता है तो जैसे वहाँ की हवा में पहले ही उसकी गंध आने लगती है; जैसे प्रातः-काल की वायु में आने वाले नए प्रात की गंध मिश्रित होती है। साहित्य सामाजिक क्रान्ति का परिणाम-दर्शन मात्र ही नहीं, वह उसका भविष्याभास भी है, प्रेरणा और उत्तेजना भी है।

साहित्य का यह भविष्यत्-दर्शन गुण सहज और स्वाभाविक है। उदाहरण के लिए फ़्रान्सीसी और रूसी क्रान्तियों को लीजिए। इन दोनों क्रान्तियों के पहले उन देशों में साहित्य की सृजन-शीलता जिस पराकाष्टा पर पहुंची, सामूहिक और व्यक्तिगत चेतनाओं के सम्मिश्रण से जिस शिखर को प्राप्त हुई, वैसी गरिमा उसे न केवल उन देशों में, बल्कि अन्यत्र भी फिर कभी लभ्य हुई कोई भी समालोचक यह दावे के साथ नहीं कह सकता है। पूर्व-इतिहास में भी हमें कई ऐसी सदियाँ मिलती हैं, जिन्हें हम स्वर्ण-काल कह सकते है– जैसे अंग्रेजी का 'एलिजाबेथीय' युग। ऐसे युग अन्य देशों में भी पाए जाते हैं। इन युगों के कुछ सर्व-साधारण लक्षण होते है। शासन-सत्ता उदार हो और देश में शान्ति हो, जनता एक हद तक अमन और चैन महसूस करे। शासक-जन नवीन भावों के

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रचार का स्वागत करनेवाले हों। मानसिक-परिधि के विस्तरण में रुचि लेने वाले हों और लकीर पीटने वाले न हों। देश में कुछ बाहर की हवा भी चलती हो और उसके कारण मानसिक वातावरण में एक नयी ताजगी महसूस होती हो। ये सब लक्षण जिस युग में मिलें उसमें साहित्य की सृजन-शीलता को एक नई प्रेरणा मिली। जैसे उत्तर में बादशाह अकबर का शासन-काल या आन्ध्र में कृष्ण-देवराय का शासन-काल।

साहित्य का वैसा स्वर्ण-काल क्या आज संभव है? उत्तर मिलेगा-शायद नहीं। इसके कई कारण हैं—एक तो यह कि बीसवी सदी संघर्ष और खिचाव-तनाव की सदी है। इन पैंसठ सालों में विश्व ने दो महान विश्व-युद्ध और अनेक छोटे मोटे युद्ध देखे। फ़ासिस्ट सत्ता का उत्थान और पतन देखा। बीच-बीच में कभी साँस लेने की मोहलत भी मिली तो वह अगामी युद्धों की तयारी में लग गई। इतना ही नहीं; यातायात और प्रचार-प्रसार साधनों की श्रेष्ठता और बहुलता के कारण संसार के किसी कोने में कल्लोल हुआ कि उसका प्रभाव सारे संसार पर दिखाई देने लगा। "वसुधैव कुटुंबकम्" का आदर्श तो पूर्ण हो गया। लेकिन यह परिवार ऐसा हुआ जिसके सदस्य हमेशा आपस में लडते झगडते हों। भला जिस घर में हमेशा चीख-पुकार मची रहे; जिसके रहनेवालों को हमेशा आपस में लडने-झगडने के सिवा कोई दूसरा काम ही न हो; उसमें शान्ति कहाँ से आए और साहित्य और कला कैसे पनपे? इस लिए जो लोग आधुनिक जगत के साहित्य और कला की निंदा करते हैं उन्हें उसके वातावरण पर भी ध्यान देना होगा और परिस्थितियों को दृष्टि में रखना होगा। सिर्फ निंदा करने से कोई फायदा नहीं।

खिचाव-तनाव का वातावरण साहित्य के लिए वर्धक और प्रोत्साहक नहीं होता। औद्योगिक-क्रान्ति के पश्चात् समाज में जो दौड-धूप और खिचाव-तनाव शुरू हो गया, उसके कारण मानव के मानसिक वातावरण में मौलिक परिवर्तन आ गया। उसके सभी मूल्यों में हेर-फेर हो गया। आज का मनुष्य शाश्वत और अपरिवर्तनीय मूल्यों में विश्वास नहीं रखता। वह अपनी आंखों से देख रहा है कि-दिन दिन आस्थाएँ बदल रही हैं और विश्वास उलट-पुलट होते जा रहे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है। सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् से उसका विश्वास धीरे धीरे हटता जा रहा है। वह निश्चय नहीं कर पा रहा है कि क्या सत्य है, क्या शिव है और क्या सुन्दर है? विभिन्न तर्कों के वाद-विवाद, संघर्ष में लग्न पक्षों के भीषण प्रचार के साधन उसके मन को डंवा-डोल कर रहे हैं। वह कुरु-क्षेत्र में खडे अर्जुन की तरह स्विन्न-विलन्न वदन लिए संशय-विकल है। भगवान कृष्ण का शरणागत होकर प्रार्थना कर रहा है– 'या निश्चिन्तम् ब्रूहि-तन्मे' लेकिन उसके मन में एक पुकार उठती है– 'संशयात्मा विनश्यति'। आधुनिक मानव की यह अनास्था, यह विश्वास-हीनता, उसके हृदय की यह संशय-विकलता साहित्य में भी प्लावित होती है।

पूंजीवादी व्यवस्था ने पुराने विश्वासों और आस्थाओं को छिन्न-भिन्न तो कर दिया, लेकिन बदले में कुछ दिया नहीं; रुपया देवता बन गया। और एक हीन, ओछी वैलासिकता, भोग-भावना देवी बन गयी। खूब रुपये कमाओ, गुलछर्रे उडाओ। बस, यही होशियार चलते-पुर्जे आदमी का आदर्श बन गया। आस्था-हीन पतनोन्मुख समाज का साहित्य ऐसा ही होता है। इसमें सिर्फ साहित्यकारों को दोष देने से कोई प्रयोजन नहीं। इस व्यवस्था ने जब तक समाज को सामंत-शाही के लोहे के चंगुल से छुडाने का प्रगतिशील-पात्र निर्वाहण किया तब तक साहित्य में भी एक नई स्फूर्ति और नई आस्था दिखाई दी– जैसे उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध और बीसवीं सदी के प्रारंभ-कालीन साहित्य में; खास कर डिकेन्स वगैहर के साहित्य में।

भारत में भी बीसवीं सदी के प्रारंभ में जो सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यक पुनर्जागरण फैला, वह उसी का परिणाम था। पुराने समाज का गर्भ चीर कर नया समाज जन्म लेने लगा। भारत की सभी भाषाओं के साहित्य में एक महान परिवर्तन प्रारम्भ हुआ। पुरानी ग्रंथस्थ पंडिताऊ भाषा का परित्याग करके, नई, जनता के बोल-चाल की भाषा का उपयोग होने लगा। उपन्यास और कहानी-साहित्य की बाढ आई-समाज-सुधार के आन्दोलनों के साथ-साथ राजनीतिक चेतना भी फैली। कविता में स्वच्छन्दतावादी युग शुरू हो गया। पढे-लिखे लोग पुराने धार्मिक विश्वासों के दकियानूसी दायरे से बाहर निकल कर बुद्धिवाद की ओर झुके। भारत का नवीन मानव प्रश्न करने और सोचने लगा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों ने बाहर की हवाओं के लिए खिडकियां खोल दीं। प्राचीन पूर्व के ऊपर अर्वाचीन पश्चिम का प्रभाव पड़ने लगा।

याँत्रिक सभ्यता ने ज्यों-ज्यों जड पकडी; व्यक्ति की सामाजिक चेतना प्रखर होती गई। इस देश में विलंब से आई हुई स्वच्छन्दतावादी परम्परा के प्रति विद्रोह शुरू हो गया। उपन्यास और कहानी–साहित्य में सामाजिक विषमताओं पर कठोर प्रहार होने लगा। विद्रोह का साहित्य जन्म लेने लगा। यहाँ तक कि पुरानी पीढी के साहित्यकों की कलम भी पैनी हो गई और विद्रोही कटार का काम करने लगी।

यहाँ से आधुनिक या नई कविता का जन्म-काल शुरू होता है। आधुनिक या नई कविता इस जटिल, क्लिष्ट आधुनिक-युग की समस्त संवेदनाओं, भावनाओं और कल्पनाओं का प्रातिनिधिक है। इसमें आधुनिक युग के सुख-दुःख, आशा-निराशाएँ, गिराव-चढाव और ऊंचाई-गहराइयाँ प्रतिबिम्बित होती हैं। आधुनिक और पुरातन युगों में जो अन्तर है, वही आधुनिक और पुरानी कविता में है।

आज का जीवन बहुत जटिल हो गया है। पिछले हजारों सालों में शायद ही कोई ऐसा जमाना गुजरा हो जिसमें मानव को आज के जैसे मानस-मंथन, अन्तः-संघर्ष और परिसर की क्लिष्टता और भीषणता से जूझते हुए गुजरना पडा हो। एक ओर विज्ञान की विजय ने मानव के हाथ में अद्भुत और आश्चर्य-जनक अस्त्र दिए जिनके द्वारा प्रकृति पर विजय पाना उसके लिए बहुत आसान हो गया है। दूसरी ओर इन अस्त्रों के द्वारा जो बेयद शक्ति उन्मुक्त हुई है, वह प्रतीपवादियों के हाथ की पुतली बन कर, मानवी सभ्यता और संस्कृति के समूल विनाश की धमकी दे रही है। राष्ट्र, वर्ग और दलगत संघर्ष प्रखर हो उठा है। यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं कि मानव-समाज आज जैसी भयंकर विचिकित्सा और संशयात्मकता में से कभी नहीं गुजरा। लगता है, जैसे वह एक तरह की सामूहिक हिस्टीरिया में से गुजर रहा है। आज का मानव स्नायु रोगी है। वह शंकित आतंकित और आकुल है। उसका जीवन तूफानी है। पहाड की चोटी से वेग से गिरनेवाले झरने की तरह है। वह शरत्-सरिता की तरह स्निग्ध, शान्त-गति से नहीं बहता।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आज की कविता ऐसे ही जीवन को प्रतिबिम्बित करती है। आज के कवियों के पास अष्टादश-वर्णन-युक्त महाकाव्य लिखने के लिए समय नहीं; वह फुटकर कविताओं से ही संतुष्ट है। और जो महाकाव्य यदा-कदा लिखे भी गये है उनमें कथा कथन नाम-मात्र को हैं; परंपरागत वर्णन हैं ही नहीं। मानवी अंतः-संघर्ष का ही चित्र ज्यादा है (जैसे कामायनी, कुरुक्षेत्र आदि)। आज की कविता में कथा-कथन और वस्तुगत वर्णन का प्रायः लोप हो गया है। आजका कवि प्रकृति या परिसर का वर्णन करता है तो वह केवल मानवी-भावना की पृष्ठ-भूमि के रूप में ही। इससे परे उसका कोई महत्व नहीं। रीतिकाल की सी लच्छेदार शाब्दिकता और कोरी आलंकारिकता के द्वारा वह अपने पाँडित्य का प्रदर्शन नहीं करना चाहता। शब्द और अर्थ उसके लिए भावना तक पहुचने के साधन मात्र है। वह रीति और शैली का पुजारी नहीं।

आधुनिक कविता मूलतः विद्रोह की कविता है। आधुनिक कवि परंपरा का तिरस्कार नहीं करता, बल्कि उसके प्रति विद्रोह करता है। परंपरा का पूर्णतः तिरस्कार करने वाला डोर कटे पतंग की तरह हो जाता है। परंपरा से ही चिपटे रहनेवाला मौलिकता से हाथ धोता है और लकीर का फकीर बन जाता है। आधुनिक कवि परम्परा के सत् को ग्रहण करते हुए अपनी राह आप बनाता है और नये प्रमाण खडे करता है।

याँत्रिक सभ्यता ने व्यक्ति की जडें उखाड कर उसे निराधार बना दिया। जिस मिट्टी में पहले उसकी जडें जमी हुई थीं; वह मिट्टी अब उसकी नहीं रहीं। वह आकाश-वेलि की तरह हो गया। इस तरह के व्यक्त की संवेदनाओं को व्यक्ति करने के लिए आधुनिक कविता में नये भाव-चित्र और नए प्रतीक आए। परंपरागत परिकरण इस विषय में किसी काम के नहीं रहे। आधुनिक जीवन की नई संवेदनाओं, जटिलताओं और क्लिष्टताओं को अभिव्यक्ति देने के लिए कवियों को नई शैली, नये संविधान और नई शब्द-योजना की खोज करनी पडी। इस यात्रा के लिए उसे नये पाथेय की खोज करनी पडी। नगर की गंदी गलियों में हरी घास की, पुरइन भरे पोखरों की झांकी नहीं मिलती। आसमान को धुंये के गुबार से भरनेवाले धुआरों का, पृथ्वी के हृदय की आकाँक्षाओं की तरह

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सिर उठाए खड़े, ऊंचे हरे पेडों से क्या ताल्लुक ? रूज़ पौडर से लिप-पुत कर, शिफान और नैलान में सज-धज कर, ऊँची एँडी के जूते पहने, बेधड़क चलती नागरी नवेली में और चोली-घाँघरा पहन कर घूंघट उतारे, चूडियाँ खनकाती, पग के पायल झनकाती, छुई मुईसी लजाती, चलती, देहात की लाडली लडकी में काहे का मेल ? पौडर, स्नो और वेसलीन कहाँ और चन्दन-लेप और पुरइन के पत्तों का उपचार कहाँ ? क्या परंपरा का नाम लेकर कवि आधुनिक वास्तविकता से मुँह मोड ले ? भूखे मजदूरों की कराहों और पूंजीपति की चमचमाती, नई रोल्स-राइस को मिथ्या कह कर उडा दे और इतिहास के किसी तथा-कथित स्वर्णकाल के एक उज्वल अध्याय या किसी काल्पनिक ऊर्वसी के रूप की बखान के गीत गाए ? आधुनिक कवि का क्या कर्तव्य है ? क्या उसे नग्न, कठोर, विरूप सत्य से मुँह मोड कर काल्पनिक शिवम् और सुन्दरम् का चित्रण करना चाहिए और पढने वाले के मन में यह भ्रम पैदा करना चाहिए कि संसार में सब कुछ ठीक है और कहीं कोई भूल-चूक नहीं ? कदापि नहीं ! इसीलिए आज का कवि कहता है :–

पीड -पाताल पतित
दीन-हीन जनगण के
मौन रुदन की पुकार
चीत्कार फूत्कार
अपने उर में बटोर
इस भीषण अंधकार
का, अंधेर का वज्र-वक्ष चीर
तरुण अरुण अरुण राग गाओ तुम
गहरे पैठ जाओ तुम !

(श्रीरंगम् नारायण बाबू)

आज का कवि कहता है :—

पतित बन्धु ! भ्रष्ट बन्धु !
चिरवंचित नष्ट बन्धु !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

VIII

तेरे लिए कलम पकड
दूर गगन-पथ में उड
घडघडते हडबडाते
बढ़ते उन, चढ़ते उन
जगन्नाथ के रथ के चक्रों को
रथ-चक्रों के प्रलय-घोषण को
भू-तल पर उतारूंगा,
भू-चाल रचाऊँगा।

(श्री. श्री.)

आज का कवि जीवन के संघर्ष से घबरा कर भागता नहीं; वह भी उसमें भाग लेता है। स्वभावत: उसकी सहानुभूति पीडित और दलित लोगों की तरफ होती है। इस तरह की सामाजिक चेतना आधुनिक कविता का एक विशिष्ट लक्षण है।

पुराण-युग की कविता केवल कथा-कथन और प्राकृतिक वर्णन पर निर्भर करती थी। नायक का धीरोदात्त होना अनिवार्य था। साथ ही यह भी आवश्यक था कि वह सर्व-जन-सम्मान्य हो। उस युग की कविता में एक प्रांजलता थी और थी एक स्वस्थ दृढ़ता। उसके बाद रीतिकाल की कविता में रीति, अलंकार और लाक्षणिकता का दबाव अधिक हो गया। कविता सोने के गहनों के बोझ से लदी हुई रईस घराने की रुग्ण-युवती के समान किसी काम की नहीं रही। इस युग में कथा-कथन से ज्यादा शृंगार, चमत्कार की विलक्षणता और बनाव-ठनाव का जोर ज्यादा हो गया। कवि जैसे होशियारी की बात कह कर वाहवाही के लिए श्रोता का मुंह देखने वाला हो गया और यह वाहवाही ही उसकी कविता का ध्येय बन गई। सहज स्वाभाविकता जाती रही और दूर की कौडी लाना ही पते की बात हो गई। लेकिन रीति-काल के कवि निपुण कलाकार थे। इसमें कोई शक नहीं। इसलिए आधुनिक कवि उनका सम्मान करता है। पर उसकी तरह सोने की सांकलों से जकडे रहना नहीं चाहता।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्वच्छन्दतावाद ने कविता को इन सब पुराने बन्धनों से मुक्त किया। कविता में एक नया प्राण लाने की चेष्टा की और कुछ हद तक सफलता भी पाई। पुराने छंदों के बन्धन से कविता मुक्त हो गई। नए मात्रिक छंदों का उपयोग होने लगा। मुक्त छंदों का भी प्रचार हुआ। अलंकारों की पुरानी भारी-भरकम योजना के दले नई, विलक्षण और नाजुक सी योजना होने लगी। भाषा लचीली बन गई और शैली मोहक। कथा-कथन को और निरे प्राकृतिक वर्णन को या तो बिलकुल छोड दिया या नाम मात्र के लिए रहने दिया। प्रकृति का वर्णन मानवी मनोभावनाओं की पृष्ठ-भूमि के रूप में ही होने लगा। कविता-वस्तु की सीमाएँ विस्तृत हो गईं।

कवि ने देवी-देवताओं, देव तुल्य नायकों या राजे-महाराजों के बारे में गाना छोड कर अपने या अपने जैसे लोगों के बारे में गाना शुरू कर दिया। । प्रेम और विरह नाजुक बन गए। पुरानी रीति और लाक्षनिकता को छुट्टी दे दी गई। मानसिक भावनाओं के उद्वग-पूर्ण चित्रण ने ज्यादा स्थान पाया। भाषा, छंद, अलंकार, शैली आदि में कविता को एक अपूर्व-लभ्य स्वतंत्रता और स्वच्छन्दता मिली। कविता ने जैसे अपनी छाती का बोझ उतार कर एक खुली साँस ली।

लेकिन स्वच्छन्दता-वादियों की यह क्रान्ति (इसे क्रान्ति ही कहना चाहिए) एक सीमा तक पहुंच कर वहीं रुक गई। कविता बन्धनों से मुक्त हो कर रसिक जनों के माथे पर चढ कर विहार करने लगी। लेकिन कठोर धरा पर चलना उसने नहीं सीखा। इन कवियों ने जीवन की मिठास ही चखी। इनका शोक और विरह भी कुछ कुछ मीठा मीठा सा ही रहा। गरल की तिक्त-ज्वालाओं का इनको भान न हुआ। जीवन के संघर्ष की चीख-पुकार से ये कुछ बचे बचे ही रहे। इनके "गीले गाने" भी कुछ कुछ मधुर ही रहे। कड़ुवापन जो जीवन का एक खास स्वाद है, उनको नहीं मिला। पुरातन पर इन्होंने विद्रोह किया, लेकिन फिर समझौता कर लिया। ऊंचे बहुत उडे, लेकिन जीवन के रसातल की गहराई तक नहीं पैठे। इनकी भाषा और शैली भी परम्परा से पूर्णतः मुक्त नहीं हो पाई। ललित-मधुर शब्द जाल और अलंकारों का मोह इनसे नहीं छूटा। ये जीवन के

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नग्न सत्य का पूर्ण-रूप से आलिंगन नहीं कर सके। यह आधुनिक कवि के लिए बचा रह गया।

स्वच्छन्दता-वादी पूर्ण रूप से आधुनिक नहीं बन सके। आधुनिक जीवन की विषमताओं को देखते हुए भी उन्होने उन्हें पहचानने से इनकार कर दिया। पुरातन से उन्होंने छुट्टी ले ली, लेकिन उसका मोह मन में बना ही रहा। यही कारण है कि इन्होंने अतीत वैभव के, आशा और विषाद मिश्रित गीत गाए। पुरातन को आधुनिक जामा पहना कर पेश करना चाहा। आगे बढते हुए भी पीछे मुड-मुड कर देखते ही रहे। इनकी आंखों के सामने जो दारिद्रय, निराशा और अंधकार ताण्डव कर रहे थे, उनको इन्होंने भुला देना चाहा। कविता की वस्तु को इन्होंने मधुर, मोहक और सुन्दर में ही सीमित कर दिया। इसी लिए इनकी अधिकांश कविता में एक तरह का जनानापन आ गया। कोमल-कांत-जपदावली और मधुर मंजुल भाव ही इनकी कविता की परमावधि बन गए। आदर्श और वास्तव की सीमाएं अस्पष्ट और धुंधली हो गईं। भावों में और भाषा में एक तरह की अस्पष्टता और धुंधलापन आ गया। वल्कि इसे ही सराहा जाने लगा। खुला-सा कहना कविता के लिए एक अवलक्षण बन गया। पुराने कवियों में जो एक प्रस्तर-शिल्य की सी दृढता और स्वस्थ सबलता थी, उसकी जगह मोम की पुतलियों की सी लिपी-पुती लच -लच नाजुकी ने ले ली। कुछ सूफियों से, कुछ अंग्रेजी स्वच्छन्दता-वादी कवियों से उधार ली हुई भावना, शब्दावली आदि से सजी-धजी स्वच्छन्दता-वादी कविता एक कृत्रिम वातावरण में पली-पनपी। लेकिन उसकी जडें गहराई तक नहीं पहुंची और जरा सी धूप लगते ही सूखने का अंदेशा बना ही रहा।

स्वच्छन्दता-वादी जीवन की बाहरी चमक-दमक से ही तुष्ट हो गए। उन्होंने अंतस्तल तक पैठ कर नहीं देखा। सुन्दरता की असुन्दरता और विरुपता की सुरूपता को उन्होंने नहीं देखा। उन्होंने नहीं जाना कि सुन्दरता सत्य में है और सत्य मानवी हृदय की गहराई में है। उन्होंने नहीं जाना कि सत्य मोहक ही नहीं; भयंकर भी है और इस सुन्दर, विकृत, भीषण, मोहक, सत्य का अन्वेषण और दर्शन ही कला की परमावधि है। हत्यारे के हृदय में, बूढी के झुर्रीदार चेहरे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

में, कुलटा के प्यार में, जब सत्य प्रत्यक्ष हुआ तो उन्होंने चीख कर कहा 'नहीं! तुम सत्य नहीं हो' और आँखें मूंद लीं। उन्होंने जीवन को एक ही तरफ से देखा; दूसरी तरफ वे नहीं देख सके।

स्वच्छन्दतावाद के इस एकांगी दर्शन के प्रति आधुनिक और प्रगतिशील कवियों ने विद्रोह किया। जीवन की विषमता और विरूपता को उन्होंने जान-बूझ कर, खोज-ढूँढ कर प्रस्तुत करने का प्रयास किया। उन्होंने महलों को नहीं; झोंपडियों को देखा। काल्पनिक अप्सराओं को नहीं; नंगी, भूखी, सूखी, पीठ से चिपकी पेट वाले कंकालों को देखा। नंदन–उपवन को नहीं; गंदी, कूडे-कचरे से भरी हुई गली-कूचियों को देखा। इत्र और गुलाब–जल नहीं लहू की गंध देखी। वीणा-वादन और कंबु-कंठ का कल-कूजन नहीं; शास्त्रों की झनकार और घायलों की चीख–पुकार सुनी। कोमल-हृदय कवि कमर कस कर जीवन के युद्ध-क्षेत्र में उतर पडा।

केवल कविता-वस्तु ही नहीं, आधुनिक कवि की भाषा, शैली, शब्दावली, भाव-चित्र और प्रतीक, सब कुछ बदल गए। कवि का जनानापन छूट गया। शब्द-चयन में कोमलता की प्रधानता न रही। निर्दिष्ट अर्थ की वाहकता, दृढता, और पत्थर की मूर्ति कसा कटा-छँटापन प्रधान बन गये। भाषा में मंथरता के बदले एक प्रवाह और ओज आ गया। भाव-चित्र और प्रतीक किताबी न रह कर आधुनिक जीवन की कठोरता में से ताजे-ताजें लिए जाने लगे। जीवन में ऐसी कोई वस्तु नहीं रही, जो कविता के लिए अग्राह्य हो।

और सुनो तो मैंने क्या-क्या देखा और सुना
निशीथ–निद्रा में
सद्यः प्रसवित शिशु को निज छाती से चिपटा
रुचिर स्वप्न में लीन
तरुणि के मनो-जगत की लहरें
शिशु की अद्भुत-निद्रा में
पुराचीन स्मृतियों के झूले की आहट।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अस्पताल में
शस्त्रकार के इंद्रजाल में
जीवन और मरण के सांध्यकाल में
आँखें मूँदे लेटे रोगी की धमनो का स्पंदन ।
गंदे नाले में गिर, हिलने-डुलने से लाचार
शराबी का बदहोश गुन-गुनना,
मन ही मन भुन-भुनाना ।
पेट की आग में जलती वेश्या की राक्षस-रति में
अर्ध-निमीलित नयनों के भीषण पीडामय गीत की टेक
फांसी पर लटके सिर का कहा राज़ ।
पागल के मन की घोर अमा में
घूक की पुकार, भेक की टेर ।
हडताल। मजदूरों के
भूख की अंधेरी आगों का आर्त्तनाद, हाहाकार
लक्ष लक्ष नक्षात्रों के मन की बात
कोटि कोटि जल-पातों का अजस्त्र गीत
सहस्त्र कोटि सागर-तरंगों का मंद्र-घोष ।

(श्री. श्री.)

ऐसा ही और एक उदाहरण :—

भुखी बाघिन सी अंधेरी रात
रग-रग में वधिर लालसा की रुधिर- ज्वाल
खून का चसका लगी बाघिन तो निगल ही जाएगी ।
खून के पसीने से तर सपने
जहर के पसीने से तर पत्थर सी काया;
और ये बेले के फूल

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बाधिन के निगलने से बची-खुची स्मृतियों की
हड्डियाँ उजली-धुलीं,
अपने आप को निगल जाती भूखी रात
मानवी-हृदय की ही भांति ।

(बैरागी)

उपर्युक्त उद्धरणों से स्पष्ट है कि भाषा, भाव-चित्र, प्रतीक आदि की दृष्टि से स्वच्छन्दता-वादी और आधुनिक कवियों में महान अन्तर है । श्री. श्री हमारे सामने वह चित्र पेश कर रहे हैं जिन्हें देखते ही स्वच्छन्दता-वादी मुँह मोड लेंगे । मरणासन्न रोगी, बदहोश शराबी, भूखी वेश्या, फांसी पर लटका सिर, पागल के मनका अंधकार, हडताली मजदूर, ये जीवन के उस पक्ष के चित्र हैं जो स्वच्छन्दतावादियों से अछूता रहा । बैरागी प्रेम की लालसा का एक भीषण चित्र उपस्थित कर रहे हैं । ये शक्कर की गोलियाँ नहीं । कडुई घूँटे हैं । लालसा की रात भूखी बाघिन सी है । प्यार खून से भींगा हुआ है । वह अत्यन्त क्रूर है । उसके सपने मधुर, मोहक, रंगीन नहीं, खून के पसीने से तर हैं । और बेले के फूल अतीत की गंध लिए हुए, स्मृतियों की हड्डियाँ हैं, जिन्हें बाधिन निगल नहीं पाई है । अंत की दो पंक्तियों में मानवी प्यार की सर्व-भक्षकता की ओर संकेत किया गया है । स्वच्छन्दता-वादी प्रेम के इस भीषण चित्र का तिरस्कार करेंगे । लेकिन वास्तविकता इस का कठोर प्रमाण है । यह प्रेम की परंपरागत भाषा नहीं है । प्रेम के लिए प्रयुक्त ये भाव-चित्र और प्रतीक परंपरा से सिद्ध नहीं हैं । फिर भी इनकी प्रभावोत्पादकता और प्रज्ज्वलित वास्तविक्ता से इनकार नहीं किया जा सकता और यह कहना भी सत्य से दूर होगा कि प्रेम का यह चित्र वास्तविकता के समीप नहीं ।

और एक उदाहरण लीजिए :—

रात बढती जा रही,
शीत बढती जा रही,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शीत भी शीत से कांप रही।
और इस क्रूर घोर शीत में
पूर्ण-गर्भिणी इस महा-निशीथिनी के गर्भ का ज्योतिष्पिण्ड
ठिठुर कर, सिकुड कर जम न जाय
यही सोच, मैं अपने हृदय का प्रबल ताप
लेश लेश बटोर, राशि राशि उंडेल
गीतों के गरम मुलायम शाल बना, उसका तन ढंकता हूँ।
अपने प्राणों की सांस फूंक उसको गरम रखता हूँ।

(भागी)

भीषण शीत की रात है। कवि सोचता है कि कहीं इस शीत में रात्रि के गर्भ का ज्योतिष्पिंड जो आने वाले विश्व को काँति-दान करेगा, ठिठुर कर जम न जाय, इस लिए अपने हृदय के ताप से भरे गीतों के गरम शाल से उसको ढँकता है और अपने प्राणों की साँस फूक कर उसे गरम रखता है। इस कविता में विश्व की चेतना के साथ जो तादात्म्य है, आनेवाले कल के प्रति जो आशा-भाव है वह आधुनिक कविता की एक विशेषता है। अपने को सामूहिक चेतना का एक अंश मानना स्वच्छन्दता-वादी कवियों की सीमा से बाहर की बात है। विश्व की पीडा के प्रति समवेदना तभी उत्पन्न होती है जब कवि स्वयं संघर्ष के कोलाहल में निमज्जित हो जाता है। किनारे पर बैठकर तैरने की अनुभूति नहीं हो सकती।

बहुत से लोग आधुनिक कविता पर अस्पष्टता का आरोप लगाते हैं। कुछ हद तक उनका आरोप सत्य भी है। आखिर कविता में अस्पष्टता क्यों आती है? पुराने काव्यों में अस्पष्टता क्यों नहीं है? आधुनिक कविता में ही यह अस्पष्टता क्यों आ गई? ये सभी विचारणीय अंश हैं।

पुराने कवियों का मार्ग बहुत सुगम और सुलझा हुआ था। कथा-कथन और वर्णन इन दोनों से उनका काम चल जाता था। वर्णन में निपुणता और पात्रों के चरित्र-चित्रण में चतुराई, यही उनके लिए काफी था। उनकी कविता के पाठक भी इतने से सन्तृप्त हो जाते थे। आज का कवि कहानी तो कहता ही

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नहीं। पात्रों के जटिल चित्रण का सवाल ही नहीं उठता। वर्णन वह करता भी है तो महज वर्णन की दृष्टि से नहीं। आज के कवि की कहानी सारे संसार की कहानी है। उसके सभी पात्र उसी के हृदय में हैं। जैसे शरीर को छोड कर आत्मा मुक्त हो जाती है, उसी तरह से आज का कवि कथा-कथन का बोझ उतार कर मुक्त हो गया है। लेकिन इससे उसका कार्य भी कठिन हो गया है। बिना किसी आलंबन के चलना मुश्किल है। विभिन्न पात्रों के आलंबन के बिना ही आज का कवि समस्त मनो-भावों का चित्रण करता है। अपने हृदय की गहराई में पैठ कर, वह सारी मनुष्य-जाति के हृदय के अँधेरे कोनों को टटोलता है। क्योंकि मूलतः मानव एक है। न कोई पूर्ण-रूप से देवता है, न दानव। न कोई निरा पशु है, न पहुंचा हुआ सन्त कथा-कथा और उपर्युक्त पात्रों के बिना ही मनो-भावों का चित्रण करना टेढी खीर है। आधुनिक कविता की क्लिष्टता का यह एक प्रधान कारण है।

आधुनिक कविता-कला किसी एक भाव, भावना या मनो-विकल्प का ही नहीं, बल्कि चित्त की स्थिति-दशा और विकार के सूक्ष्म से सूक्ष्म-पल, पल परिवर्तित; वर्णों की बारीक से बारीक झीनी से झीनी झांइयों का भी चित्रण करती है। आज का कवि प्राथमिक वर्णों के सम्मिश्रण मात्र से सन्तुष्ट नहीं है। वह सभी बारीक झांइयाँ भी चाहता है; जिनके जरिए वह मानव की समस्त चित्त विकृतियों का सम्यक-संदर्शन करा सके। वह मानव-हृदय के मूल भावों और रसों का ही नहीं, उनसे संलग्न अन्य कतिपय नई भावना, कल्पना और सूक्ष्म विकृतियों का भी चित्रण करना चाहता है।

एक तरह से देखा जाए तो कथा-प्रधान पुराने काव्य कविता का बाल्य-काल थे। स्वच्छन्दता-वाद उसका यौवन था। आधुनिक काल उसकी प्रौढता है। प्रौढता में बाल्य और यौवन सी मोहकता नहीं है। चपलता या मत्तता नहीं है। उसके ललाट पर सिकोड हैं। भौंहें कुंचित हैं। क्योंकि उसने चिंतन सीखा है। आधुनिक काव्य की यह एक प्रधान विशेषता है। इतः- पूर्व की कविता में प्रायः चिंतन का विलोप था। आधुनिक कविता की यह विशेषता आधुनिक उपन्यास और कहानी में भी पाई जाती है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चिंतन और दर्शन का घनिष्ट संबंध है। आधुनिक कविता में विविध दर्शनों का तुमुल संघर्ष भी पाया जाता है। पुरानी कविता में भक्ति-योग या वैराग्य पाया जाता था; लेकिन इसे दर्शन नहीं कहा जा सकता। जीवन का एक सम्यक दर्शन आधुनिक कविता की एक विशिष्टता है।

सामाजिक चेतना आधुनिक कविता की एक विशिष्टता है। शायद किसी भी काल का कवि समाज की समस्याओं के प्रइतना सचेत नहीं रहा जितना कि आज का कवि है। आज का कवि चाहे वह किसी भी दल का हो, किसी वाद या मत का अनुयायी हो, वह इतना तो अवश्य मानता है कि समाज से, उसकी विषमताओं से, भलाई-बुराई से अलग होकर उसका कोई निजी भविष्य नहीं। घोर से घोर व्यक्तिवादी भी यह स्वीकार करता है कि वह समाज से कटकर नहीं जी सकता। समाज की विषमता, असमता, मूढता, अंधेर इन सब के प्रति सचेत जागरुकता ही नहीं; सक्रिय प्रतिरोध का मानव आधुनिक कवि की एक खासियत है।

आधुनिक कविता की भाषा बोल-चाल की चलती भाषा है। किताबी या पंडिताऊ अकड की बू तक नहीं आती। इसके माने यह नहीं कि वह बिलकुल सीधी-सादी है। आधुनिक कवि आवश्यकतानुसार अप्रचलित या कोश के पत्रों में भूले-भुलाये शब्दों का भी प्रयोग करता है। दूसरी भाषाओं से शब्द उधार लेने में भी नहीं हिचकिचाता। लेकिन उसकी शैली और ढांचा जनता के बहुत नजदीक हैं। वह रीति या अलंकार-सौन्दर्य के भान की दृष्टि से शब्द नहीं चुनता। उसका ध्येय शब्दों की चंकाचौंध से पाठक को अंधाकर देना नहीं है। शब्द वह आधार है जिस के जरिए वह भावना और अनुभूति के लिए मार्ग बनाता है। लेकिन आधुनिक कवि के भाव चित्र या कल्पना की उडाने सीधी सादी या सुगम नहीं। क्यों कि उसका चिंतन सुगम नहीं है।

आखिर कोई वाक्य या वाक्यांश जटिल क्यों होता है? शब्दों की जटिलता आसानी से पकडी जाती है लेकिन भावना की जटिलता जो कभी-कभी सूक्ष्मता के कारण होती है, आसानी से पकड में नहीं आती, भाव उलझे हुए हैं या इतने बारीक हैं कि आसानी से समझ में नहीं आते। अगर भाव उलझे हुए हैं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तो कोई कुछ नहीं कर सकता। लेकिन वे बारीक हैं तो बात दूसरी है। क्योंकि कवि उन्हें जान-बूझ कर आसान बनाना चाहेगा तो उनकी बारीकी खो जाएगी। यह तो सच है कि कवि को बारीक से बारीक भाव को आसानी से प्रस्तुत करना चाहिए। लेकिन यह साध्य नहीं तो उसे चाहिए कि जटिल-रूप में ही क्यों न हो, वह उसे समग्रता के साथ प्रस्तुत करने की चेष्टा करे।

कल्पना और भाव-चित्रों की बात दूसरी है। क्योंकि ये दोनों यत्न साध्य नहीं है। ये कवि के चेतन और अवचेतन मन, बुद्धि, अनुभूति, प्रवणता और समस्त जीवन के जाने या अजाने संस्कार के फल हैं। यदि कवि का व्यक्तित्व जटिल है, उसका मानस देश और समस्त दूरी को मापने वाला है, उसकी चेतना की नसें इतनी तनी हुई है कि मृदुल से मृदुल स्पर्श भी तूफानी झंकार पैदा कर सकता है, उसके निगूढ अंतरांतर से समस्त मानव जाति की समस्त अनुभूतियां परस्पर गुँथ कर मुक्त होने को उलझ रही हैं तो उसकी कल्पना और भाव-चित्र जटिल होंगे ही। उनको जान-बूझ कर सुधारने-संवारने का यत्न करना उन्हें नष्ट ही कर देना होगा।

एक उदाहरण ली जिए :—

सोम की बत्तियाँ बुझ गईं
क्लोरोफार्म सा अंधियारा छा गया,
विपुल विश्व ने निज मरण-पत्र लिख लिया;
विदूषक ने आत्म-घात कर लिया।

यंत्रों का मंत्र-गान
विष-धूमों का तूफान
स्टीमर में चिंपांजी
नांदी में भरत-वचन
मरण में सृजन—
विदूषक का आत्म-घात।

विदूषक के विकट-हास में खोंपडी खिलखिला उठी,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

XVIII

भूख ने भोजन पका लिया।
हंसने आकाश छू लिया।
विदूषक का विषाद
सागर में बडवानल,
भूचाल बीच फूट सलाद।
लेकिन मोम-बत्तियाँ फिर से सुलगीं और
मरण-पत्र जल गया।

(विदूषक का आत्म-घात, श्री. श्री.)

जिसे आधुनिक कविता की जटिलता और दुर्बोधता कहते हैं, उसका यह अच्छा उदाहरण है। इस कविता में कवि एक महान विश्व-विपदा का संदर्शन करता है, जिसका संकेत विदूषक का आत्म-घात है। विदूषक जिसका काम दुनियाँ को हँसाना है स्वयं आत्म-घात कर लेता है। कैसी विचित्र बात है? सारी कविता में परस्पर-विरोधी तत्वों का सम्मिश्रण है, वर्तमान और अतीत का मेल हैं, पुराने और नए का जुटाव है, आदि और अंत का आलिंगन है। मृत्यु और सृष्टि का समाश्लेषण है। इस विश्व-व्यापी विषाद और अवसाद से कवि पुनरुत्थान और नवीन सृष्टि की ओर संकेत करता है। क्योंकि मोम-बत्तियां मृत्यु-संबंधी संश्लेष ही नहीं रखतीं, बल्कि नव-जीवन और दिव्य प्रकाश का भी संकेत हैं। इस आधुनिक कविता में न केवल हिन्दू, बल्कि ईसाई भाव-चित्रों और प्रतीकों का भी समावेश है।

और एक उदाहरण लीजिए :–

छाया नयन-नीलिमा में बालातप की विलोल मुसकान
पातों पर, पंखुडियों पर निखरती झिल-मिल झांकी की शान,
पंछी के डैनों पर चमकती हेम-मई आभा में
झरनों के जल में दमकती नंगी छुरियों की शोभा में
प्रणय-मरण-तोरण बन झूलते से शत सहस्र शक्र-चाप।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रुधि-स्मांस मधुवन में वर्ण-मत्त वसन्त का पदार्पण
मौत की संगममंरी गोदी में खेलते बाल-गण ।

(फूटा दर्पण—बैरागी)

उपर्युक्त उद्धरण में जीवन, प्रणय, मरण का एक संलग्न चित्र दिया गया है । इन तीनों से संबद्ध एक अनिर्वचनीय सुषमा की ओर संकेत किया गया है । इस कविता की जटिलता शब्द और अर्थ के पीछे की भावना के कारण है । कवि प्रकृति की सुषमा की ओर संकेत करता है । लेकिन सिर्फ प्रकृति की ही सुषमा नहीं, समस्त मानवी जीवन, प्रणय और मरण की हर्ष-विषाद भरी झिलमिल झांकी और इन तीनों पर निखरती एक दिव्य सुषमा । भाव-चित्र और प्रतीक सभी परम्परा से ग्राह्य; लेकिन उनका एक नया प्रयोजन, वाक्यांशों को एक नया मोड, यही इस कविता की विशेषता है । भावना अत्यन्त सूक्ष्म और बारीक है । इसलिए कविता तनिक दुर्बोध हो गई है । इसमें एक संकेत मात्र है और है एक मनो-दशा का सृजन जिसमें जीवन, प्रणय और मरण बालकों के खेल से लगते हैं ।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त ने तेलुगू साहित्य में एक पुनर्जागरण देखा । तिरुपति-वेंकट कवियों की जोडी ने अपने शतावधान और अष्टावधान द्वारा लोगों में कविता और साहित्य के प्रति एक अभिरुचि पैदा की । जगह जगह कविता गोष्टियां होने लगीं और लोग उनमें चाव से भाग लेने लगे । उनकी देखा-देखी अवधान करने वाले अनेक कवि निकले । लेकिन उनकी सी ख्याति किसी को न मिली । श्री चेल्लपिल्ल वेंकट शास्त्री के कई शिष्य-प्रशिष्य निकले जिनमें कुछ आगे चल कर अत्यन्त विख्यात हुए, जैसे श्री विश्वनाथ सत्यनारायण और कविराज श्री त्रिपुरनेनी रामस्वामी । श्री तिरुपति-वेंकट कवि प्रकांड विद्वान थे । भाषा पर अनन्य अधिकार रखते थे । आशु-कविता, हास्य और समय स्फूर्ति में अपना सानी नहीं रखते थे । लेकिन थे वे पुराने ढर्रे के कवि । उन्होंने एकाध काव्य जो लिखे वे बिलकुल पुराने ढंग के ।

लेकिन तब तक नई हवा चल रही थी । अंग्रेजी, बंगाली, हिन्दी आदि के साहित्यों का प्रभाव तेलुगू पर पडने लगा था । समाज-सुधार के आँदोलन भी चलने लगे थे । कुछ साहित्यकार मशहूर समाज-सुधारक भी हुए । उनमें श्री

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कंदुकूरि वीरेशलिंगम, गुरजाड अप्पाराव और चिलकमर्ति लक्ष्मी-नरसिंहम, आदि उल्लेख-योग्य हैं। बंगाल की देखा-देखी ब्रह्म-समाज और राष्ट्रीय आंदोलन के प्रभाव-स्वरूप हरिजन-आंदोलन भी चलने लगे थे। इस भूमिका पर आन्ध्र में स्वच्छन्दतावाद (भाव-कविता) का पदार्पण हुआ।

तेलुगू के स्वच्छन्दतावादी कवि अंग्रेजी के शेल्ली, कीट्स और बैरन और बंगाल के रवीन्द्रनाथ की कविता से बहुत प्रभावित हुए। श्री रायप्रोलु सुब्बाराव और श्री देवुलपल्ली कृष्ण शास्त्री पर यह प्रभाव अधिक गोचर होता है। ये दोनों ही प्रमुख स्वच्छन्दतावादी कवि हैं। इस परम्परा के अन्य कवियों में नायनि सुब्बाराव, वेदुल सत्यनारायण, श्री शिवशंकर शास्त्री, अब्बूरि रामकृष्ण-राव, पेनुमर्त्ति वेंकटरत्नम, अडवि बापिराजु आदि उल्लेख-योग्य हैं। श्री विश्व-नाथ सत्यनारायण जी कुछ दूर तक इनके साथ चले। लेकिन फिर अपनी अलग राह बना कर परंपरा की ओर मुड गए। इसी काल के श्री त्रिपुरनेनि रामस्वामी बिलकुल स्वतन्त्र मार्ग पर चले। उन्होने व्यंग्य-प्रधान काव्य लिख कर अपनी कविता शक्ति को पुराने मूढ, अंध विश्वासों की खिल्ली उडाने और उन पर चोट करने में प्रयुक्त किया। पिंगलि लक्ष्मीकान्तम् और काटूरि वेंकटेश्वर राव इनके समकालीन होते हुए भी किसी धारा से प्रभावित न हुए और पुरानी काव्य परि-पाटी का ही पालन करते रहे। नंडूरि सुब्बाराव ने ग्राम्य-भाषा में कुछ सुन्दर गीत लिखे। इन गीतों की भाषा ग्राम्य है, लेकिन भावना स्वच्छन्दतावादी और अत्यन्त उच्च कोटि की है। इनसे जरा पीछे के कवियों में इन्द्रगंटि हनुमत् शास्त्री, मल्लवरपु विश्वेश्वरराव, पिलका गणपति शास्त्री वगैरह उल्लेख-योग्य हैं। पुरानी परिपाटी के फुटकर कवियों में एटुकूरि वेंकट-नरसय्या, तुम्मल सीताराममूर्ति चौधरी, बोड्डु बापिराजू, माधवपेद्दि बुच्चिसुन्दरराम शास्त्री, दुव्वूरि रामि-रेड्डी आदि के नाम उदाहरणीय हैं। दुव्वूरि रामिरेड्डी ने "पान-शाला" नाम से उमर खयाम की रुबाइयात का बहुत सुन्दर अनुवाद किया।

स्वच्छन्दतावादी और प्रगतिवादी या आधुनिक कविता के बीच का जो अंतराल है उसको लांघते हुए एक विराट मूर्ति की तरह श्री· श्री उदित हुए। इन म इन दोनों धाराओं का मिलन इतना साफ साफ नजर आता है जितना कि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

त्रिवेणी में गंगा और यमुना का मिलना। ज्यों ज्यों श्री श्री. की कविता विकसित हुई, उन्होंने पुराने प्रभावों का केंचुल उतार फेंका और नवीन स्फूर्ति के साथ प्रगति-पथ पर अग्रसर हुए। वे नवीन कविता-शैली के अग्रणी ही नहीं बने, बल्कि उनके अनुयायियों का एक बहुत बड़ा दल तयार हो गया। छंद, भाषा, शैली, भाव, शब्द-चित्र और प्रतीक, सब में इन्होंने नवीन परिवर्तन लाया और अच्छे-बुरे अनेक नये नये प्रयोग किये। सामाजिक चेतना से परिपूर्ण इनकी कविता अनुगामी कवि-गण के लिए आदर्श-प्राय बन गई। कुछ ही कवि ऐसे बचे रहे जिन पर इनका प्रभाव न पडा हो। भाषा पर अनन्य आधिकार रखने वाले इस कवि ने अन्य-देशीय प्रभावों के लिए भी द्वार खोल दिया और समस्त प्रकार के प्रयोगों के लिए मार्ग सुगम कर दिया। विद्रोही इस कवि ने परम्परागत काव्य-शैली पर अधिकार प्राप्त करके उसके प्रति विद्रोह किया। परम्परा से जो कुछ प्राप्त करना था उसे भी नहीं छोडा। उनका अनुकरण करने वाले अनेक कवियों में उनकी यह संलब्धि नहीं पाई जाती। श्री. श्री. ने नई कविता को एक पताका दी, नये नारे दिए और उसे एक महान आन्दोलन का रूप दिया। उन्होंने अपनी "नई कविता" नामक एक कविता में लिखा कि 'नई कविता के लिए सिंदूर, रक्त-चन्दन, लाल झंडा, कलकत्ता की काली की जीभ, धुआँरों की गुबार, ये सभी चाहिए। उन्होंने लिखा कि जो मानव को झकझोर कर जगा दे, उसको बदल दे, आगे बढाए और संपूर्णता दे, वही नई कविता है। इस संग्रह में श्री. श्री, की जो चार कविताएं दी गई हैं, वे उनकी प्रतिभा की अच्छी झलक देती हैं। 'कविता हे कविता' जगन्नाथ के रथ-चक्र, आदि तेलुगु की नई कविता में मकुट-रूप हैं। मैं 'जगन्नाथ के रथ-चक्र' को भारत में क्रांति पर लिखी गई, इनी-गिनी सर्व-श्रेष्ठ कविताओं में से एक मानता हूं। इस कविता से पता चलता है कि छन्द, शब्दावली, ध्वनि और व्यंजना पर श्री. श्री. का कितना अधिकार है? सरल भाषा और उससे भी सरल छंद, लेकिन इस कविता में चंद शब्दों के आवर्तन और पुनरावर्तन द्वारा, उनकी ध्वनि और व्यंजक-शक्ति के संपूर्ण सदुपयोग द्वारा, ताल और गति के सामंजस्य द्वारा, प्रास और तुक के समुचित सुनायास सप्रयोग द्वारा जिस महान तूफानी आवेग का सृजन किया गया है, वह क्रांति के विलयंकर पदार्पण का विराट, भीषण, मोहन, प्रज्वलित चित्र देता है:-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सिंहाचल विचल उठा
हिमाचल पिघल उठा
विन्ध्याचल दहल उठा
सिंहाचल, हिमाचल
विन्ध्याचल, सन्ध्याचल
महानग उडने लगे-
महारथ चलने लगा।
चूर्णमान घूर्णमान
दीर्णमान शैल शिखर
सर-सर-सर चकराए।

'कविता हे कविता' में श्री. श्री. की कोमल, प्रबल कल्पना का दर्शन होता है। इसमें कवि के कविता-संबंधी आदर्श का भी पता चलता है। परम्परा और नवीनता के मिश्रण का यह अच्छा उदाहरण है। इस कविता से स्पष्ट है कि श्री. श्री. अन्तः-पुर-वासिनी कविता के उपासक नहीं। उनका आदर्श जनता के नजदीक आता है और अपनी अनुभूति का आनन्द सारे विश्व को बाँटता है। 'अवतार' कविता में श्री. श्री. ने बडी चतुरता के साथ परम्परागत सामग्री का नवीन भावना की अभिव्यक्ति और संयोजन के लिए उपयोग किया है। 'विदूषक का आत्म-घात' बिलकुल आधुनिक कविता है।

श्री. श्री. ने नई कविता को एक आदर्श दिया, उसको पूरा करने की शक्ति दी और दी एक मर्यादा। उन्होंने एक मार्ग बनाया और अपने पीछे आनेवालों को उस पर चलने की प्रेरणा दी। तेलुगू की प्रगतिवादी, आधुनिक कवि-परम्परा में श्री. श्री. का स्थान अग्रणी है, इसमें सन्देह नहीं।

आधुनिक तेलुगू कविता में शिष्ट्ला उमामहेश्वरराव का एक विशिष्ट स्थान है। वे विलक्षण प्रतिभा वाले कवि थे, इसमें कोई संदेह नहीं। उनके असमय देहावसान ने तेलुगू साहित्य को बड़ी क्षति पहुंचाई। उनके जीवन की अव्यवस्था कहीं कहीं उनकी कविता में भी लक्षित होती है। उनकी प्रतिभा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सर्वथा मौलिक और देशी है। उनकी भाषा, उक्ति-चमत्कार, शब्द-चयन, सब उनका अपना और निराला है। उनकी कविता पर अंग्रेजी या किसी अन्य भाषा का प्रभाव प्राय: नहीं के बराबर हैं। वे वास्तव में अछूती प्रतिभा और मौलिक दृष्टिकोण वाले कवि थे।

स्वर्गीय शिष्ट्ला कैसी विशाल कल्पना वाले कवि थे, यह युग-शक्ति का आवाहन पढने से पता चलता है। कवि ने जिस विराट शक्ति का दर्शन इस कविता में किया है, उसका भीषण, प्राणाँतक सौन्दर्य मानो भाषा के बन्धनों को तोड कर फूट पडना चाहता है। शब्दों का प्रवाह वर्षा-काल के जल-प्रपात की तरह अजस्र, उद्दाम वेग से झर पडता है, लेकिन अंतर्निहित भावों का आवेग उससे भी वेगवान है।

विलय घना-घन में गोपित अनल सी,
दहकती धूप में बिजली के तारों पर
होली खेलने वाली विवास्त्र सुन्दरते!
तरल अनल से प्रोज्वल गरलमय शत-दल सा
तेरा वदन शाश्वत तरुण,
प्रणय के अनल हेतु मानों पवन।

इस कविता में वर्णित महान सौन्दर्य उस निगूढ आदि-शक्ति का है जो अपने अनंत रूपों में प्रत्यक्ष होती हुई, देश-काल से ग्रथित त्रिभुवन को चलाती हुई भी, स्वयं उनसे परे है।

आदि-अंत-योग-चलित नीरव काल-चक्र मणिमय-मेखला सा
तेरी नाभि का है अलंकार।
सृजन और निधन-मध्य जीवन का
हाहाकार, पत्वर्दापित जय-जय कार।

यह कविता, इस विराट शक्ति का विश्व-रूप-संदर्शन करती है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'वैतरणी' उस मानव का चित्र है जो पूर्व-पाप वश-जन्म से ही अभिशप्त है। अपने इस अभिशाप के कारण वह जीवन का आनन्द लेने से विवश है।

युग युग का विषाद मेरे हृदय में प्रवेश कर, निवेश कर,
कब्र सी बन गयी है, मेरी फूलों की सेज।
मैं हूं जीवच्छव, मेरे कार्य सभी निर्जीवन,
क्योंकि मेरी धमनियों में बहती है,
युग-युग की काई जमी मलिन विपरीत वैतरणी।

यह वैतरणी और कहीं नहीं; वह मानव के ही पूर्व-कर्मों की मलिन स्मृतियों का प्रवाह है जो उसके अंतस्तल में घर कर गया है।

'घोर अमास' एक सुन्दर प्रेम-कविता है, जिसका प्राण अंत की दो-तीन पंक्तियों में है। 'प्रेम' बडी मसृण कविता है जिसमें प्रेम को सीता के रूप में देखा गया है।

प्रेम तो आत्म-निर्वाण द्वारा आराधन है;
और सीता वह माता है।
जन्म में जन्म लेती जीवन की इच्छा बन
जन्म के अंत तक जीती है; सीता है।

वह कोई मामूली शक्ति नहीं, सारे संसार को चलाने वाली शक्ति है; विपुल वसुन्धरा का भार ढोने वाली शक्ति है।

विपुल वसुंधरा का भार वहन कर, मंथर-गति चरण धर
चलती विश्व-शक्ति, श्री-शक्ति।

कवि इस विश्व-शक्ति का दास है, प्रजा भी है, प्रेमी भी है। शक्ति के इस विराट रूप का दर्शन शिष्ट्ला की कविता में कई जगह कई रूपों में आता है। शिष्ट्ला ने परंपरा से बहुत कुछ लिया है, लेकिन अपने ढंग पर और उसका उपयोग भी किया है अपने ढंग पर। वे सर्वथा विलक्षण और मौलिक हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

XXV

स्वर्गीय श्रीरंगम नारायण बाबू श्री· श्री· के समकालीन और रिश्ते में उनके भाई लगते थे। वे भी प्रगतिशील आधुनिक कवि थे, लेकिन उनकी प्रतिभा सर्वथा स्वतंत्र थी। वे तेलुगु में अधि-वास्तविकता-वाद के आदि प्रवर्तक थे। वाद से परे भी उनकी विलक्षण प्रतिभा को कोई आंच नहीं आती। वे बडे विचित्र व्यक्ति थे और उनके स्वभाव में और उनकी कविता में भी पूरब, पश्चिम, प्राचीन, नवीन और आकाश-पाताल का एक विचित्र मेल था। निपट आदिम और अत्यन्त आधुनिक का आलिंगन था। इसी संग्रह में श्री बैरागी की एक, कविता, उनके नाम पर, जो उनके निधन के बाद लिखी गई थी दी गई है। उसको पढने से उनके व्यक्तित्व का पता चलता है। वे बडे ही निरीह, सज्जन और संत पुरुष थे। उनकी अनेक कविताएं लापरवाही के साथ लिखी गई सी मालूम होती हैं। लेकिन प्रतिभा की प्रखरता और अनुभूति की मार्मिकता स्पष्ट लक्षित होती है।

उनकी 'कपाल-मोक्ष' कविता स्वर्गीय भगत सिंह पर लिखी गई थी यद्यपि कविता में कहीं नाम नहीं लिया गया है। कविता भारत की धार्मिक और प्राचीन काव्य-परंपरा से भींजी हुई है–

> श्वेत·शैल के शिखरांचल में
> कनक-मांड हिल उठा और उस
> स्वाहा-पति के स्वर्ण-गर्भ में
> मची खलबली, उठी पीर।
> जाह्नवी वक्ष में उमड क्षीर का ज्वार
> सिंधु-गर्भ में, लवणांबुधि की
> गहराई में, गुप्त-नयन-ज्वाला ने
> रूप धरा मानव का।

तप के उपरांत बुभुक्षित शिवने भिक्षा-पात्र के लिए हाथ पसारा लेकिन वह उग्र-तप की ज्वाला में भस्म हो गया था। अब महादेव को एक कपाल चाहिए था।

> उस भारत के वीर पुरुष का
> महित कपाल कपर्दि-हस्त में आन गिरा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

XXVI

वही भगतसिंह का कपाल था। धन्य भगतसिंह !

कितने पैदा हुए, मर गए,
कहाँ मिला उनको हालाहल-पायी
कर का स्पर्श और अधरों का चुंबन !

यही कपाल-मोक्ष है !

खिडकी में दीया पढ कर ऐसा लगता है मानों कवि कोई पहुँचा हुआ संत है, जैसे उसने जीवन का रहस्य पा लिया है।

'एक ही अंधकार
जीवन-रहस्य।'

कविता पढने में बडी सीधी-सादी लगती है, लेकिन बहुत मर्म से भरी हुई है।

मेरा शपथ है कि
जीव-हिंसा न करूँगा
न देखूंगा—
किन्तु उधर कमरे की दीवार पर
कांति के लोभ से
एकत्र कीटकों का
भक्षण करती
भूखी छिपकली।

शब्द-चित्र की सुघरता देखिए :—

खिडकी में दीपशिखा
हकलाई, चकराई, थर्राई—
बावरे की बुद्धि-सदृश
डाँवाडोल झूल-झूल
खींच-खींच तान-तान
लाल खर की टुकडी
बन कर कट गई।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'त्योहार' असीम निराशा का चित्र है :—

जलती प्रेयसि का शरीर-चिडाँध भरा संसार

कवि क्यों लिखता है सुनिये :—

शीत से भूख से काँपते, कलपते
भिखमंगे के कंधे पर फटा-चिरा चिथडा संतोष हेतु
जीवन-पतझर के शीत से भीत कवि के हेतु एक गीत ।

'क्या बोली में कविता' कवि से कहती है:-

काल-व्याल यह जीवन
भूल जाय गरल गंध
झूल जाय राग-अंध
छेड दे ऐसी तान–
अरे, उठा अपनी बीन ।
वह बोली ।

यह अत्यन्त-सुन्दर कविता है जिसमें जीवन और कविता की परिभाषा है और है उनके अविनाभाव-संबंध का चित्रण । इनमें कवि की प्रगति-शीलता और दीन-दुखियों के प्रति उसकी समवेदना का, अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध उसके आक्रोश का प्रभावशाली उदाहरण है ।

नारायण बाबू ने अपने अनुवर्ती अनेक कवियों को प्रभावित किया । इनकी भाषा सरल और जनता के अत्यन्त समीप हैं । उन्होंने अपना कोई अलग वाद नहीं चलाया, लेकिन उनका प्रभाव बहुत ही विस्तृत और गंभीर रहा । अभिव्यक्ति में दोष होने के कारण कहीं-कहीं अस्पष्टता होने पर भी उनकी प्रतिभा की प्रज्वलता नहीं छुपती । अनुभूति की गंभीरता और वेदना-प्रवणता में कुछ ही कवि इन के स्तर तक पहुंचते हैं । आधुनिक तेलुगू साहित्य में इनकी स्वतंत्र सत्ता निर्विवाद है ।

श्री बैरागी अपने ढंग के एक निराले कवि हैं । इनकी कविता से इनके विशाल अध्ययन और सर्वतोमुखी प्रतिभा का पता चलता है । ये बडे ही क्रमिक विकासवाले कवि हैं । इनकी कविता कहीं-कहीं जटिल और दुर्बोध होती है । इस

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लिए कुछ समालोचकों ने इन्हें "कवियों का कवि" कहा है। जन-प्रियता के लिए कुछ भी रियायत न करके ये अपने निर्दिष्ट मार्ग पर सीधे चलते जाते हैं। मौलिक दृष्टिकोण और तात्विक विचार इनकी कविता की संपन्नता के कारण हैं। बुद्धि और कल्पना की दुहरी शक्तियों का मिश्रण इनके भाव-चित्रों और प्रतीकों को दो-धारी तीक्षणता देते हैं। उथली भावुकता का अभाव, शब्द-शिल्प की दृढता इनकी कविताओं को पत्थर की मूर्तियों का साठोसपन देती हैं।

उजली साडी और उजले बेले के फूल
तरुण-हृदय में उमडा ज्वार
यही प्यार ?
लेकिन हृदय तो लोहू का लोथडा है।
प्रेम-देवता का फूलों की गेंद नहीं;
मोह के कटीले झाड-झंखडों में फंस कर तडपता है, जलता है
खून उगलता है।
नरम चरबी की परत हटा दो तो
हृदय बस लोहू का लोथडा है।
(गरमी की रात)

इस कवि की कविता में, भावना की सूक्ष्मता और अभिव्यक्ति में अलंकारों की बहुलता अतिरिक्त सुन्दरता का सृजन तो करती हैं, लेकिन उसे दुग्राहिय बना देती हैं।

जागर-वारुणी पिए अरुण नयनों की कोरों पर
प्रेम-पूर्णिमा के कुँआरे सपनों की खून भरी पौ फटती।
नील नयन नीर मध्य रुधिर-रेखा सी जुटती।
(फूटा दर्पण)

लेकिन ये कहीं-कहीं इने गिने शब्दों में सबल चित्र उपस्थित कर देते हैं:–

कुबडा गगन रीढ टूटे तरंगों के भुजंग
अंधेरी खिडकियों की आँखें।

श्री बेरागी एक ऐसे कवि है जिन पर देशी-विदेशी तरह-तरह के प्रभाव

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ऐसे मिल-जुल गए हैं कि आसानी से पहचाने नहीं जाते। भाव-चित्र क्लिष्ट होते हैं और कल्पना बहुत ही ऊंची। लेकिन एक बात हैं, इनकी कविता को जितना पढा जाय उतना आनन्द मिलता है।

श्री आरुद्रा विख्यात आधुनिक कवियों में से एक हैं। इनकी कविता पर अंग्रेजी का प्रभाव स्पष्ट दीखता है। कहीं-कहीं, खास कर आडेन का। शायद हम इनको अति आधुनिक कवि कह सकते हैं। यही एक ऐसे आधुनिक कवि हैं जिन पर परंपरा का प्रभाव बहुत ही कम, प्राय: नहीं के बराबर दीखता है। इनकी शैली, शब्दावली और भाव-चित्र अत्यन्त आधुनिक और दैनंदिन जीवन के हैं:-

घिसे-पिटे ग्रामोफोन रिकार्ड जैसे शब्द
अर्थ का प्रतिपादन नहीं कर पाते।
हुकूमत के चुंबक के दायरे में
विज्ञान की घडी रुक जाती।
लाल-फीता-शाही की ऊसर धरा पर
स्वतंत्रता का अंकुर फूट नहीं पाता।

श्री आरुद्रा की कविता कहीं-कहीं विनोद के लिए लिखी गई सी मालूम होती है। लेकिन उसके पीछे गंभीर भावना होती है।

कठघरा खोलते ही मुंह बाकर दहाडनेवाली
बाघिन है नगर की रात;
अगणित अफसानों के लंबे हाथ पसार, स्वागत-पत्र पढती
है नगरी।
जिंदगी की बाढ की कीचड भरे ताल-तलैयों के तले
इधर उधर ऊंटपटांग उछल-कूद मचाते जीव-जन्तु,
तब तक न जाने, कहाँ-कहाँ घूम कर
तब कहीं पहुंचते हैं अपने घर
याने चौडे चबूतरों पर, लंबे फुट-पाथ पर।
नगर की रात

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नरक में चैत ।

आरुद्रा की कविता में आधुनिक जीवन की झांकी ही नहीं, उसकी आलोचना भी मिलती हैं ।

यहां तो वेदना का शिशिर है,
नर के पशु होने में नहीं कोई कसर है ।
यह कडुई चसक है;
यह नरक की झलक है ।

आरुद्रा की भाषा सरल और चलती है । उनके ऊपरी विनोद के पीछे जीवन की समालोचना और भविष्य के लिए शिक्षा भी होती है । मानों वे पाठकों को चटपटी चीजों के जरिए कडुई दवा देते हैं ।

श्री दाशरथी अत्यन्त लोकप्रिय आधुनिक कवियों में से एक हैं । उन्होंने पुरानी परिपाटी के गण-बद्ध पद्य भी लिखे हैं और आधुनिक मुक्त-छन्द की कविताएँ भी । दोनों शैलियों पर उनका समान अधिकार है । श्री दाशरथी जनता से सन्निहित संबंध बनाये रखने वाले कवि हैं । आन्ध्र में जब-जब सबल आंदोलन चले तः उन्होंने उसमें सक्रिय भाग लिया और देश-भक्ति की कविताएँ लिखीं । इनकी भाषा स्वस्थ, सबल और प्रवाह-वान होती है । भावना तीक्ष्ण और कल्पना उच्च-कोटि की होती है । यें अनेक भाषाओं की जानकारी रखते हैं । इनकी सामाजिक चेतना अत्यन्त बलवती है ।

जीवन की नागफनी को
लहकते लहलहे नए फूल फूलने दो ।
माटी को प्रोटीन बना दो ।
दूध, दही, घृत और अमृत के सागर रचाओ ।
रूखी-सूखी ठठरियों की ठूंठों पर
नई मांस-पेशियों की कोपलें उगाओ ।

इस कवि का आदर्श अत्यन्त ऊँचा है:–

हृदय-दृग-अदृश्य रूप
शब्द-श्रवण दुर्लभ-स्वर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्राण से अग्राह्य गंध
बुद्धि से अलंघ्य शिखर।
मृदुल भावनांगुलियाँ
कर न सकें जिसे स्पर्श
जिसका तनु-मात्र अर्थ
आत्मागत महादर्श।

इस महादर्श को सामने रख कर आगे बढने में दाशरथी के मार्ग में अडचनें आएँगीं। लेकिन वे उनको दूर करने में समर्थ हैं। इसमें कोई शक नहीं।

डाक्टर सी. नारायणरेड्डी जिनको लोग सी. ना. रे. कहते हैं, तेलुगू के बिख्यात आधुनिक कवियों में से एक हैं। मात्रा और गुण, दोनों में इनकी कविता उल्लेख-योग्य है। ये अच्छे समालोचक भी हैं। इनकी भाषा बहुत ही प्रांज्वल और मृदुल होती है। इनकी शैली पर स्वच्छन्दतावादियों का काफी प्रभाव दीखता है। श्री दाशरथी की तरह इन्होंने भी गण-बद्ध पद्य और आधुनिक मुक्त-छन्द दोनों लिखे हैं। मानव के उज्ज्वल भविष्य पर इनकी दृढ आस्था है।

कंठ-मध्य गरल धार
बांट रहा स्मिति-अमृत
शिव के प्रति-रूप मनुज
के आगे में प्रणमित।
सुर से वर करुणामय
मानव के सिवा कौन ?
मंदिर-रहित देवता
मानव के सिवा कौन ?

नव-युग की पुकार के प्रति भी वे सचेत हैं:–

हाथ हिला कर समय पुकार रहा,
जीर्ण-शीर्ण कंकाल आगे पग धार रहा।
घुंघुआती जिंदगी में पथराता मानव

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धरा-गगन हेतु सेतु बना रहा ।

इनकी कल्पना अत्यन्त मसृण और सुकुमार होती है:—

ऊषा को हेमंत-शर्वरी की भेंट
हरी-भरी दूब के गले में झिलमिल मुक्ता-हार ।

o o o

काल के कपोल पर लाल एक तिल खिला,
मौत की पौ फटते सयम प्रात का तारा भला ।

सि ना. रे की कविता में मानवता के विजय पर अविचल विश्वास उसके भविष्य के प्रति अटल आस्था, उसकी मर्यादा की उच्चता का भान वारंवार ध्वनित होते हैं ।

श्री पुरिपंडा अप्पलस्वामी श्री. श्री. और नारायण बाबू के समकालीन और आधुनिक कविता के प्रवर्तकों में से एक हैं । इनकी विलक्षण प्रतिभा किसी भी परिभाषा की पकड़ में नहीं आती ।

तेरी आँखों की नीऊमी छांह
तेरे गानों की सुनहरी राह
तेरे सपनों के मधु-वन में
पालकी पर आऊंगा ।
अपनी आँखों की उल्का से
जगत को सुलगा दूंगा ।

श्री पालगुम्मि पाद्मराजू ने जो पा. प. के नाम से कविता लिखते हैं कविता से ज्यादा कहानी और नाटक लिखे हैं । लेकिन उन्होंने जो इनी-गिनी कविताएँ लिखी है, अत्यन्त सुन्दर हैं । 'अंधकार' नामक कविता उनकी विस्तृत दार्शनिक पृष्ठ-भूमि की, उनके गहन चिंतन की झलक दिखाई देती है । वे गद्य के क्षेत्र में निमग्न न हो गए होते तो आधुनिक तेलुगू कविता न जाने और कितनी समृद्ध होती ?

प्रगतिशील कवियों में विद्वान विश्वम् का एक विशिष्ट स्थान है । भाषा पर उनका पूरा अधिकार है और उन्होंने कथा-प्रधान काव्य भी लिखे हैं और आधु-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निक कविता भी। वे कुशल पत्रकार भी हैं। वर्ग-संघर्ष का सुन्दर चित्र देखिए:-

बेहाली बेकारी
लाचारी एक ओर
जरदारी सरदारी
बरजोरी एक ओर
बेढंगे, अध-नंगे
भिखमंगे एक ओर
स्वर्णभरी संदूकें
बंदूकें एक ओर
नीति-न्याय धर्म-शास्त्र
सरकारें एक ओर
जनता की कम से कम
दरकारें एक ओर
भीषण संघर्ष-ज्वाल
धू-धू जलते त्रिलोक
कौन सुने यह ढोंगी
धर्म-बोध, नीति-श्लोक ?

पठाभिने आधुनिक कविता में अनेक प्रयोग किए हैं। उक्ति का चमत्कार उनकी कविता की विशिष्टता है।

स्वर्गीय तिलक, श्री रेंटाल गोपालकृष्ण, श्री रमणारेड्डी, श्री अनिसेट्टी सुब्बाराव, श्री ऐलूरी, श्री रामदास, श्री गगिनेनी वेंकटेश्वरराव, प्रगतिशील धारा के प्रमुख कवि हैं। इन सब पर श्री· श्री· की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। वर्ग-संघर्ष, दलित जनों के प्रति सहानुभूति, शोषण-कारी अत्याचारियों के प्रति आक्रोश इनकी कविता के प्रधान लक्षण हैं। इन कवियों ने आधुनिक कविता को बहुत कुछ दिया है। इन सब कवियों की मानवता पर अचल आस्था है और भविष्य के प्रति प्रगाढ विश्वास है। इनकी यह आस्था और यह विश्वास इनकी कविता को बल देता है और इनके कंठ को स्फूर्ति देता है। श्री. श्री. की परंपरा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

को इन्होंने आगे बढाया और समृद्ध किया। इनमें कुछ अत्यन्त प्रतिभावान कवि हैं। लेकिन उन्होंने अपनी प्रतिभा का पूरा-पूरा सदुपयोग किया, इसमें कुछ लोगों को शक है। कुछ ने वस्तु की उपादेयता पर ही सारा ध्यान केन्द्रित किया और शिल्प की निपुणता पर बिलकुल ध्यान नहीं दिया। यदि ये कवि इस ओर थोडा ध्यान देते तो इन की कविता को और बल मिलता। इस संग्रह में जो इनकी कविताएँ दी गई हैं, वे अत्यन्त सुन्दर हैं। खास कर श्री तिलक, श्री एल्चूरी और श्री रामदास की कविताएं। तिलक की कविता प्रणय संबंधी है और श्री एल्चूरी की उस भविष्य के बारे में जब यह सारा कल्लोल शान्त हो जाएगा :—

और जब मैं बूढा हो जाऊंगा,
मानस-कल्लोल शान्त हो जाएगा
और सुन्दर धरा का वदन
खिले हुए कमल सा दिखाई देने लगेगा;

श्री रामदास की छोटी सी कविता आज के जीवन की दुख-दुर्दशा का चित्रण करती है और भविष्य के प्रति आशा-भाव प्रकट करती है।

बैठी हूं मैं पवनात्मज की राह देखती,
भावी लंका-दाह देखती।

श्री भागी की कविता "महा-निशीथिनी" इस संग्रह की अत्यन्त सुन्दर कविताओं में से एक है। यों तो निशीथिनियां अनेक हैं, लेकिन महा-निशीथिनी वह है जो आने वाले 'कल' के प्रोज्वल ज्योतिष्पिंड को जन्म देने वाली है। भयंकर शीत और अंधकार में सारा जगत ऊंघ रहा है। अध-नंगे भिखमंगे जिनके पास नींद भी नहीं फटकती, जगह जगह कूडे-कर्कट की होली जला रहे हैं।

विपुल विश्व यह धूमावृत श्मशान,
जहां बस, मृत्यु की चिता-गंध का ही भान।

कवि इस भीषण शीत में पूर्ण-गर्भिणी निशीथिनी के गर्भ का ज्योतिष्पिंड ठिठुर कर बरफ न बन जाय, यह सोच कर अपने हृदय का प्रबल ताप उँडेल कर, गीतों के गरम मुलायम शाल से उसका तन ढंकता है, और अपने प्राणों की साँस फूंक कर उसे गरम रखता है। कवि की आशा की प्रोज्वलता अद्वितीय है। मानव

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के भविष्य के प्रति उसका विश्वास अविचल है और वह इस कविता के प्रत्येक शब्द से बोल रहा है।

अजन्ता एक युवक कवि हैं, जिनकी कविता पर रिंबा और बाद्लेयर का प्रभाव दीखता है। ये अत्यन्त प्रतिभा-शाली कवि हैं और इनकी कविता अपने में पूर्ण है। इनका शिल्प अत्यन्त आधुनिक और उच्च कोटि का है।

जब निशीथ का भीभत्स जागता है,
वसुधा को असुर-गण नोच नोच खाते हैं,
मौत खिड़की सी खुल जाती है–
तो मैं शून्य पर शून्य सा बैठकर
टूटते तारों पर अपने गीत लिखता हूँ।

(भयभीत; अजंता)

श्री केशवराव उदीयमान नये कवियों में अग्रणी हैं। इनकी कविता अत्यन्त आधुनिक है और इनकी प्रतिभा की धारा बहुत प्रखर है। इस युव-कवि ने थोडे ही समय में अपनी उर्वरा कल्पना के द्वारा तेलुगू की आधुनिक कविता को बहुत संपन्न किया है। 'पौ फटेगी नहीं' कविता में कवि खंडहरों के पत्थरों में अतीत के हर्ष-शोक की गाथाएं देखता हैं :–

रात में इन पत्थरों पर
उनके नयनों के बाणों में
सपनों में, लंबी उसासों में
अस्त-प्राय राका-रजनियां चली गईं,
रानियां पथरा गईं
वेणियों में गुंथे फूल धूल बन गए।

कवि राही से कहता है कि तुम ध्यान से देखोगे तो वे सब गाथाएँ तुम्हारी हो जाएंगी। 'अंबर को दीपित करूंगा' में कवि का अपनी प्रतिभा के प्रति अटल विश्वास दिखाई देता है :–

अक्षर जब पत्थर बन जाएंगे
तारे सब एक एक टूट गिर जाएंगे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और नस नस में अंधेरा हो जाएगा
तो मैं इतिहास की दंष्ट्रा के सिंहासन से उठकर
समय को थाम लूंगा।
पत्थर की ज्वाला की छाती पर
अपना गीत रचूँगा।
अपने गीत से अंबर को दीपित करूंगा।

'आसमान में बाज' उनकी एक अद्भुत कविता है। यह बाज जीवन के अनंत सौन्दर्य और आनन्द का प्रतीक है। यह आनन्द विशुद्ध है। इसे अपने परिसर से, नीचे की लहरों से या संघर्ष के कोलाहल से कोई वास्ता नहीं; यह अपने में परिपूर्ण है। केशवराव से आधुनिक कविता को आगे भी बडी आशा है।

और भी कई होनहार नए कवि प्रकाश में आ रहे हैं, जिनकी कविताएं इस संग्रह में नहीं आ पाई हैं। इनकी कविता-कला अभी सुधर कर एक ढांचे में नहीं ढल पाई हैं। फिर भी कुछ का भविष्य आशा-जनक दीखता है। उनमें कलिसेट्टी वेंकटेश्वरराव, मादिराजू रंगाराव, वरवरराव, यादवरेड्डी, साहे, गोपाल चक्रवर्ती आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

तेलुगू के प्रायः सभी आधुनिक कवि प्रगतिशील धारा के अंतर्गत ही आते हैं। यहाँ 'प्रयोग-वाद' नाम की कोई धारा नहीं चली। अधिवास्तविकतावाद या सर्रियलिज्म का नाम कुछ दिन तक सुनाई दिया। लेकिन वह क्रमशः प्रगतिवादी धारा में ही विलीन हो गया। 'बीटनिक'-वाद की सी एक तरह की कविता हाल में कहीं-कहीं दिखाई देने लगी है। लेकिन इनकी कोई अलग सामाजिक, राजनीतिक, मनो-वैज्ञानिक या दार्शनिक पृष्ठ-भूमि नहीं है। इनके विचार सुलझे हुए नहीं हैं। निरी आधुनिकता पर अवलंबित यह कविता क्रमशः प्रगतिवाद में विलुप्त हो जायेगी। क्योंकि इन लोगों के लिए कोई अलग वेदिका नहीं है। साहित्य में किसी भी वाद के जड पकडने के लिए अलग सामाजिक, राजनीतिक और दार्शनिक पृष्ठ-भूमि की आवश्यकता होती है। इस तरह की पृष्ठ-भूमि के बिना वह वाद फैशन मात्र बन कर रह जाएगा और क्रमशः अपने आप अंतर्हित हो जाएगा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तेलुगू की प्रगतिशील कविता में ही तरह तरह के प्रयोग नजर आते हैं। इसीलिए प्रयोगवाद नाम की कोई धारा यहाँ नहीं चल सकी। प्रायः सभी प्रगतिशील कवि आधुनिक हुए हैं और दोनों का मेल ऐसा रहा है कि आधुनिक कविता कहने से ही लोग प्रगति-शील कविता समझते हैं।

तेलुगू की आधुनिक कविता अत्यन्त समृद्ध है। भारत की किसी भी भाषा की आधुनिक कविता के सामने वह गर्व के साथ सर उठा कर खड़ी हो सकती है। इस कविता का बहुत प्रचार है। जब व्यवहार की भाषा आन्ध्र के विश्व-विद्यालयों, कालेजों और स्कूलों में भी स्थान पा जाएगी तो यह और भी प्रचार में आ जाएगी। आज आन्ध्र के विश्व-विद्यालयों, कालेजों और स्कूलों में जो भाषा पढाई जाती है, वह बोलचाल की भाषा नहीं है। वह पुरानी ग्रन्थों की भाषा है जिसे ग्रांथिक कहते है. आज-कल के कुछ पुराने पंडित-गण उसे जो अनादर के भाव से देखते हैं, वह भी दूर हो जाएगा और तेलुगू की आधुनिक कविता वह स्थान पा जाएगी जो स्थान उसे मिलना चाहिए।

पांडित्य और कविता का नाता बहुत दूर का ही है। कवि पंडित हो तो अच्छा है, लेकिन यह कोई जरूरी नहीं है। कभी कभी तो पंडिताऊपन कवि के मार्ग में बाधा बन कर खड़ा हो जाता है। इस लिए कवि को पांडित्य प्रदर्शन का लोभ संवरण करना चाहिए। हां, विविध विषयों, भाषाओं और शास्त्रों और विज्ञान के आदान से कवि का परिचित होना उसके लिए सहायक हो सकता है; क्योंकि इससे उसकी मानसिक पृष्ठ-भूमि विशाल और उदार होती है। लेकिन कविता की आत्मा मानव-जीवन के सुख-दुःख, हर्ष-विषाद, आशा-निराशा और हेमन्त-वसन्त की कहानी है। मानवी-हृदय के स्वर्ग और पाताल को छानना ही उसका लक्ष्य है। कविता माता सरस्वती के पदों की विभूति है।

जिस कवि के हृदय की अनुभूति जितनी गहरी और पैनी होगी, जो मानवी-हृदय की गहराइयों में जितनी दूर पैठेगा, उसकी कविता उतनी ही उच्च और चिर-स्थाई होगी। जो कवि तात्कालिक फैशनों और सत्वर यश की मरीचिका के पीछे दौडेगा, वह क्रमशः विस्मृति के गर्भ में विलुप्त हो जाएगा।

तेलुगू के आधुनिक कवियों ने मानव के सुख-दुख की, उसके हृदय की

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अनुभूतियों की कहानी गाई है। उसके शोक, दारिद्र्य और निराशा के अंधकार की कहानी गाई है। उसके अंतस्तल में पैठ कर, अवचेतन मन के काले कर्दम में घुस कर, उन स्रोतों की छान-बीन की है, जिनसे कल्पना के कमलों का पोषण होता है। इसलिए उनकी कविता टिकेगी।

वास्तव में समस्त मानवी संस्कृति और कला का स्त्रोत एक है। देश, जाति, प्रांत, भाषा या धर्म की पृथकता से जो अंतर पैदा होता है, वह केवल बाहरी वेष-भूषा का और साज-सिंगार का है। वह उसकी आत्मा का अन्तर नहीं। हरेक देश या प्रान्त की संस्कृति में कुछ खासियतें होती हैं। लेकिन इनके कारण वह समस्त मानवी-संस्कृति से विलग नहीं होती। बल्कि यह कहना चाहिए कि ये खासियतें विश्व-संस्कृति की संपन्नता को, उसकी रंगीनी को, उसकी बहु-रूपी छटा को बढाती है; उसमें एक ताजगी और विलक्षणता लाती हैं। हरेक देश, प्रांत, या जाति की विशिष्ट संस्कृति से समस्त मानवता की संस्कृति का सौध निर्मित होता है।

तेलुगू की आधुनिक कविता की जो विशेषताएं हैं, वे उसकी अपनी हैं। लेकिन उसकी आत्मा समस्त भारत, समस्त विश्व की कविता के साथ एक है। साहित्य, कविता और कला मानवी समाज की उपज हैं। समाज के परिवर्तन के साथ उनमें भी परिवर्तन आता रहता है। लेखक या कवि को इन परिवर्तनों के साथ चलना चाहिए और उनका स्वागत करना चाहिए। लेकिन ऐसे भी कुछ मूल्य हैं जो कभी बदलते नहीं है; इन विभिन्न परिवर्तनों के बीच ये मानवता की परंपरा को अविच्छिन्न रखते हैं। ये मूल्य वे सूत्र हैं जो आदिम-काल से लेकर आज तक के समाज की विभिन्न दशाओं को गूंथती हैं और उन्हें एक हार बनाती हैं। लेखक या कवि को चाहिए कि वह उन मूल्यों को न भुलाए।

श्री. श्री. से लेकर आज तक की तेलुगू कविता का विहंगावलोकन करने से कुछ विशेष शिखर नजर आते हैं। एक तो यह कि इसकी प्रगतिवादी धारा अंत्यन्त समृद्ध है। वह केवल समृद्ध ही नहीं, बल्कि उसी के अन्तर्गत अन्य धाराएं भी विलीन हैं। तेलुगू की आधुनिक कविता कहिए तो प्रगतिवादी धारा पर ही ध्यान जाएगा। क्योंकि उसको हटा देने से आधुनिक कविता बहुत कम

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बचेगी। उसी तरह तेलुगू में प्रयोग-वाद की कोई अलग धारा नहीं है। जितने प्रयोग किये गए हैं प्राय: प्रगति-वादियों ने ही किए हैं। जिन्होंने आधुनिक या प्रयोग-वादी कविता से शुरू किया, वे भी पीछे प्रगति-वादी धारा में शामिल हो गये।

दूसरा यह कि तेलुगू के प्रगति-वादी प्रगति मात्र से संतुष्ट न रहे। उन्होंने अधिवास्तवविकता-वादी प्रतीकवादी और यहां तक कि कुछ निरर्थक प्रयोग-वादी कविताएं भी लिखी जिनका लक्ष्य केवल प्रयोग मात्र रहा। इनके इन प्रयोगों के कारण तेलुगू कविता समृद्ध ही नहीं हुई; बल्कि उसमें एक विलक्षणता और विविधता आई। यहां तक कि इन कवियों ने पैरडियां, लिमरिक और कार्टून के शीर्षकों जैसी कविता भी लिखी।

ज्यों ज्यों साक्षरता बढ़ती जा रही है, त्यों त्यों लोगों में कविता के प्रति अभिरुचि भी बढती जा रही है। आधुनिक कविता की परंपरा को आगे बढाने वाले नए नए कवि उदित हो रहे हैं। उनको देखते हुए भविष्य के प्रति निराश होने का कोई कारण नजर नहीं आता।

तेलुगू की कविता का भविष्य क्या होगा, यह कहना मुश्किल है। क्योंकि कविता का भविष्य भावी समाज पर निर्भर करता है। यदि समाज समृद्ध और सुखी होगा और उसकी भूमि उर्वरा होगी तो कविता अवश्य फूले-फलेगी। लेकिन यदि सामाजिक जीवन अशान्ति-पूर्ण होगा, हमेशा लडाई-झगडे और खींच तनाव का वातावरण बना रहेगा तो कविता पनपेगी नहीं। क्योंकि कविता के सृजन के लिए उसके पठन-पाठन के लिए, शान्ति और समृद्धि के वातावरण की अत्यन्त आवश्यकता है। अन्य साहित्य और उसमें यह अंतर है कि कविता केवल विनोद के लिए नहीं पढी जाती। वह ज्ञान की वृद्धि के लिए भी नहीं पढी जाती। उसके पाठक में एक तरह की मानसिक उत्तेजना और साथ ही साथ एक प्रकार की मानसिक निर्द्वंद्वता भी चाहिए। एकाग्र और लग्न होकर पढे बिना उसका आनन्द नहीं आता। कविता का आनन्द अत्यन्त प्रखर उच्च-कोटि का और उन्माद की सीमा को पहुंचने वाला होता है। यह आनन्द हर किसी से अनुभवनीय नहीं है। इसके अनुभव के लिए पाठकों के मानस की धरा का भी सरस और उर्वरा होना अनिवार्य है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

XXXX

यदि मानव समाज विनाश की ओर न बढ कर, शान्ति और विकास की ओर बढेगा, यदि जीवन के परम्परागत मूल्यों का ह्रास न होगा तो अवश्य कविता का भविष्य उज्ज्वल होगा, इसमें कोई शक नहीं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आधुनिक तेलुगु कविता-2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कविता ! ओ कविता !

कविता ! ओ कविता !
ना युवकाशल नवपेशल सुमगीतावरणं लो,
निनु नेनोक सुमुहूर्तलो
अतिसुन्दर सुस्यन्दनमन्दुन
दूरंगा विनुवीथुल्लो विहरिंचे
अन्दनि अन्दानिविगा
भाविंचिन रोजुललो,
नीकै व्रतुके ओक तपमै
वेदुकाडे निमुषालन्दु निषालन्दुन,
ऍटुनेचूचिन चटुलालंकारपु
मटुमायल नटनललो
नी रूपं कनशानन्दुन,
ना गुहलो, कुटिलो, चीकटिलो
ओक्कडनै स्रुक्किन रोजुलु लेवा ?
नी प्राबल्यंलो,
चिर दीक्षा शिक्षा तपस्समीक्षणलो,
निश्चल समाधिलो,
स्वर्गद्वारपु तोरणमै व्रेलिन ना
मस्तिष्कंलो
ए ये घोषलु, भाषलु, दृश्यालु तोचायो !
ने नेये चित्रविचित्र श्यमन्त
रोचिर्निवहं चूसानो !
ना गीत एये शक्तुललो
प्राणस्पन्दन पोन्दिन्दो ?
नीकै ने नेरिन वेये ध्वनुलो ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कविते ! हे कविते !

कविते ! हे कविते !
मंजुल प्रांजल गीत-गुंजरित कुसुम कुंज से
मैंने तुझ को किसी शुभ समय
सुन्दर स्यन्दन पर सवार दूर वियत पथ में विहार
करती दुर्लभ सुषमा भर समझा था जिस दिन
मेरा सारा जीवन
तव अन्वेषण में एक कठोर साधना-सा बन
उस खुमार में बार-बार तव पथ निहार
चटुल जटिलतम अलंकार
या रीतिकाल के स्वांग-ढोंग में
तेरी झांकी नहीं मिली जब
अपनी गहन गुफा में
कज्जल तिमिर भरी कुटिया में
तेरे लिए अकेला
क्या क्या झेला ?
तेरी प्रबल शबलता में
चिर शिक्षा-दीक्षा या तप की कठिन परीक्षा में
निश्चल समाधि में
सर्ग-द्वार- तोरण समान झूलते डोलते
मम मस्तक में
क्या क्या भाषा घोष सुने और विचित्र चित्र देखे
मैंने कैसी अद्भुत श्यमन्त रोचिर्मरीचिकायें देखीं
किन किन सत्ताओं से मेरे
गीतों ने जीवन-स्पन्दन पाया
क्या क्या ध्वनियाँ चुनीं तुम्हारे लिए

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एये मूलल वेदकिन प्रोवुल
प्रोवुल रणन्निनादालो
नडिरे याकस मावर्तिचिन,
मेघालावर्षिचिन,
प्रचंड झंझा प्रभंजनं
गजगजलाडिंचिन
नडिसंद्रपु केरटाल्लो ऊगिन
शंखारावं, ढंकाध्वानं !
आ रात्रे,
कारडवुललो लयातीतमै
विरुतिंचिन नानाजंतु ध्वनुलो ?
नक्षत्रांत निबिड निखिलगानं
भूकंपालु, प्रभुत्व पतनालु,
विप्लवं युद्धं,
अन्नी नी चैतन्यं !
नी विश्वरूप साक्षात्कारं !
मरि निन्नु स्मरिस्ते
ना कगुपिंचे दृश्याला ?
विनिपिंचे भाष्याला ?
अग्नि सरस्सुन विकसिंचिन वज्रमु ?
ऍगिरे लोह श्येनं ?
फिरंगिलो ज्वरं ध्वनिंचे मृदंगनादं !
इंका ने नें विन्नना ?
नडिरे निद्दुरलो
अपुडे प्रसविंचिन शिशुवु नेडद निडुकोनि
रुचिर स्वप्नालनुकांचे
जवरालि मनः प्रपंचपु टावर्तालु !
शिशुवु चित्रनिद्रलो
प्राचीन स्मृतुलूचे चप्पुडु !
वैद्यशाललो,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और कोने कोने से क्या क्या नाद-निनाद खोज लाया
गहन निशीथ ढँका नीलाम्बर
सघन घनाघन आते घिर घिर
प्रबल प्रभंजन का गर्जन सुन
थर थर थर थर कम्पित सागर की लहरों में
व्यंजित गुंजित शंखनाद ढंका-निनाद
हाँ उसी रात भीषण कानन में
लय से परे अधीर गूंजते नाना जीव जन्तुओं के रव
लक्ष लक्ष नक्षत्र-खचित नीलांतरिक्ष में
निबड़ निखिल गीतों के स्वर
भूमिकंप शासन-सत्ता का पतन क्रांति या समर
सभी में तेरी व्यक्त चेतना
तेरे विश्व-रूप का ही दर्शन
और तुम्हारे स्मरण मात्र से मुझ को
क्या क्या दृश्य दिखायी देते
क्या क्या भाष्य सुनायी देते
अनल सरोवर में विकसित वर हीरक
उड्डीन लोहमय श्येन
भीकर शतघ्नि-ज्वर के प्रतिस्वर-सा मृदंग का नाद
और सुनो तो मैंने क्या क्या देखा और सुना—
निशीथ-निद्रा में
सद्य:प्रसवित शिशु को निज छाती से चिपटा
रुचिर स्वप्न में लीन
तरुणि के उर की मधुर मधुर लहरें

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शस्त्रकारुनि महेंद्रजालंलो,
चावुब्रतुकुल संध्याकालं लो
कन्नुलु मूसिन रोगार्तुनि
रक्तनाळ संस्पंदन !
कालुव नीळ्ललो जारिपडि
कदलगनैना चालनि
त्रागुबोतु व्यक्ताऽव्यक्तालापन !
प्रेलापन !
कडुपु दहिंचुकु पोये
पड्पुकत्ते राक्षसरतिलो
अर्ध निमीलित नेत्राल
भयंकर बाधल बाटल पल्लवि !
उरितीयबड्ड शिरस्सु चेप्पिन रहस्यं
उन्मादि मनस्सिनीवालिलो
घूकं केका, भेकं बाका !
सम्मे कट्टिन कूलील,
सम्मे कट्टिन कूलील भार्यल, बिड्डल
आकटि चीकटिचिच्चुल
हाहाकारं ! आर्तारावं !
ओक लक्ष नक्षत्राल माटलु
ओक कोटि जलपातल पाटलु,
शतकोटि समुद्रतरंगाल म्रोतलु !
विन्नानम्मा ! विन्ना नेन्नो विन्नानु ।
ना विन्नवि कन्नवि विन्नविचगा
माटलकै वेदुकाडगबोते—
अवि,
पुंखानुपुंखंगा
श्मशानालवंटि निघंटुवुल दाटि,
व्याकरणाल संकेळ्ळु विडिचि,
छंदस्सुल सर्प परिष्वंगं वदलि —

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शिशु की अद्भुत निद्रा में
पुराचीन स्मृतियों के झूले की आहट
अस्पताल में शस्त्रचिकित्सक के इन्द्रजाल में
जीवन और मरण के सान्ध्यकाल में
आँखें मूंदे लेटे रोगी की धमनी का स्पन्दन
गंदे नाले में गिर
हिलने डुलने से लाचार
शराबी का बदहोश गुनगुनाना
भुनभुनाना
पेट की आग में जलती
वेश्या की राक्षस रति में
अर्धनिमीलित नयनों के
भीषण पीड़ामय गीत की टेक
फाँसी पर लटके शिर का कहा राज
पागल के मन की असित अमा में
घूक की पुकार, भेक की टेर
हड़ताली मजदूरों के बीबी-बच्चों की
भूख की अंधेरी आगों का आर्तनाद, हाहाकार
एक लक्ष नक्षत्रों के मन की बात
एक कोटि जलपातों का अविरत गीत
कोटि कोटि सागर तरंगों का भीषण घोष
सुना सुना; क्या कहूँ कि क्या क्या सुना
अपनी देखी-सुनी सुनाने हेतु
किया जब शब्दों का आवाहन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वडिगा वडिवडिगा
वेलुवडिनै, परुगिडिनै, नायेद नडुगिडिनै
आ चेलरेगिन कलगापुलगपु
विलयावर्तपु
बलवत् झरवत् परिवर्तनलो,
नै नेये वीथुललो
चंक्रमणं चेसानो,
ना सृष्टिंचिन गानंलो
प्रक्षाळित मामक पापपरंपर
लानंद वशंवद हृदयुनि चेस्ते—
नीकै मेलुकोनिन
सकलेंद्रियमुलतो
एदि रचिस्तुन्नानो, चूस्तुन्नानो,
ऊपिरितीस्तुन्नानो,
निर्विकल्प समाधिलो
ना प्राणं निर्वाणं पोंदिंदो
अट्टु ननु मंत्रिंचिन,
सम्मुग्धं गाविंचिन आ गांधर्वानिकि,
तारानिवहपु प्रेमसमार्गंलो
जन्मिंचिन संगीतानिक....
ना नाडुल तीगलपै सागिन
नादब्रह्मपु परिचुंबनलो,
प्राणावसानलेश जनितं,
नानागानासूनस्वानावळितं,
ब्रदुकुनु प्रचंडभेरुंड गरु
त्परिरंभंलो पट्टिन गानं,
सुखदुःखादिक द्वंद्वातीतं,
अमोघ, मगाध, मचिंत्य, ममेयं,
एकांतं, एकैकं,
क्षणिकमै शाश्वतमैन दिव्यानुभवं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तो वे
पुंज पुंज जुट राशि राशि बढ़
मरघट-से कोषों को पारकर
व्याकरण की शृंखलायें तोड़कर
छन्दों का भुजंग-परिष्वंग छोड़कर
जल्दी जल्दी-जल्दी
आयीं दौड़ी आयीं मेरे मन में घिर घिर छाईं।
अंध-धुंध उस चकाचौंध में
विलय विवर्तन की हलचल में उथल-पुथल में
दुर्दम झर सम परिवर्तन में
किया विहार न जाने किस किस वीथी में मैंने।
मेरे सर्जित गीतों में
पाप ताप सारे धुल कर
हर्ष-माधुरी में उर घुलकर
तेरे हित जाग्रत सकल इंद्रियों से
जिस को जन्म दिया पोसा-पाला
निज साँसों में घोला
निर्विकल्प जिस की समाधि में
मेरे प्राणों को निर्वाण मिला
जिस का जादू मुझ पर बोला
जिस गांधर्व-कला ने मुझको मंत्रित कर मुग्ध किया
तारागण के प्रेम-समागम में जिस
दिव्य-नाद ने जन्म लिया
मेरे नस नस की ताँतों पर कंपित
नाद-ब्रह्म के परिचुंबन में
प्राणावसान-वेला-उद्गत

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

బ్రహ్మానుభవం కలిగించిన,
నను కరిగించిన కవనఘృణీ !
రమణీ !
కవితా ! ఓ కవితా !
నా జనని గర్భంలో,
ఆకారం లేకుండా నిద్రిస్తున్న
నా అహంకారానికి
ఆకలి గొలిపించిన నాడో !
నా బహిరంతరింద్రియాలలో
ప్రాణం ప్రసరించగ, నేనీ భూలోకంలో పడి
సుఖ దుఃఖాలేవేవో
వస్తూంటే తలదాలించి
ప్రపంచ పరిణాహంలో
ప్రయాణికుడనై,
పరివ్రాజకుడనై
విహ్వలంగా వర్తించేవేళ
అభయ హస్తముద్రతో నను దరిసిన,
నన్ను పునీతుని కావించిన కవితా !
లలిత లలిత కరుణా మహితా !
అనుపమితా
అపరిమితా !
కవితా ! ఓ కవిత !
ఏడో, నా ఊహాంచల
సాహసికాంసం కప్పిన నా
నిట్టూర్పుల విసిపిస్తాయా ?
నే నేదో విరచిస్తానని
నా రచనలలో లోకం ప్రతిఫలించి,
నా తపస్సు ఫలించి,
నా గీతం గుండెలలో ఘూర్ణిల్లగ
నా జాతి జనులు పాడుకోనే

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नाना-गान-अनून-स्वान-शबलित
जीवन को उद्दंड चंड गारुड परिरंभण में जकड़ा गीत
सुख-दुख आदि के द्वंद्व से अतीत
अमोघ, अगाध, अचिंत्य, अमेय
एकांत तथा एकैक
शाश्वत क्षणिक, अलौकिक अनुभव
ब्रह्मानंद–विभूति–दायिनी !
मुझ को पिघलाने वाली कविता-घृणि !
मणि !
कविते ! हे कविते !
जननि-गर्भ में
निराकार निद्रित मेरे अहंकार को
क्षुधा दी गई थी जिस दिन
मेरे बहिरंतर- इंद्रिय में
प्राण प्रसारित हो
मैं भू पर निपतित हो
आगामी सुख-दुःखों को सिर पर धर
जगती के परिणाह मध्य
यात्रिक हो, परिव्राजक हो
विह्वल वर्तन करता, इस वेला में
मुझे अभय देकर और निकट आकर
पावन करने वाली कविते !
ललित ललित करुणा महिते!
अनुपमिते! अपरिमिते!
कविते हे! कविते!
और आज मम ऊहांचल
साहसिक अंस पर आच्छादित!
मेरे निश्वसन तुम्हें सुनाई देंगे क्या?
मैं कुछ रचना करूँ कि
मेरी कविता में प्रतिबिंबित जगती-तल हो

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मंत्रंगा ओंगिचालनी,
ना आकाशालनु
लोकानिकि चेरुवगा,
ना आदर्शालनु
सोदरुलंता पंचुकुने
वेलुगुल रव्वल जडिगा,
अंदी अंदकपोये
नी चेलांचलमुल विसरुल
कोस गालुलतो निर्मिचिन
ना नुडि नी गुडिगा,
ना गीतं नैवेद्यंगा, हृद्यंगा,
अर्पिस्तानो
ना विसरिन रस विसृमर
कुसुम परागं
ओहो ! ओ रसधुनि ! मणिखनि ! जननी ! ओ कविता !
कविता ! कविता ! ओ कविता !

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मेरी साधना सफल हो
मेरा गीत हृदय में घोषित
सफल-राष्ट्र-जन-संपोषित
मंत्र बने, गूँजे चारों दिक!
मेरा आकाश लोक के नजदीक आ बसे
मेरा आदर्श विभा-हीरक बन बरसे
जिस में मेरे बंधु भाग लें!
छूता भी जो रहा अछूता
तेरे उस चेलांचल की अनिल-लहर की
छहर-फहर में निखरी
मेरे वाणी तेरा मंदिर हो
रस-विसृमर-कुसुम-पराग बिखेरा
मेरा गीत हृद्य नैवेद्य बने,
तेरे चरणों में अर्पित हो
अहो रस-धुनी! मणि-खनी! जननी!
कविते! कविते! हे कविते!

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अवतारम्

यमुनि महिषपु लोहघंटलु
मब्बुचाटुन
खणेल् मन्नायि !
नरलोकपु जागिलस्मुलु
गोलुसु त्रेंचुकु
उरिकि पड्डायि !
उदयसूर्युनि सप्तहयमुलु
नुरुगुलेत्ते
परुवु पेट्टेयि !
कनकदुर्गा चंडसिंह जूलुदुलिपि आवुलिंचिदि !
इंद्रदेवुनि मदपुटेनुगु घींकरिस्तू, सवाल् चेसिंदि !
नंदिकेशुडु
रंकेवेस्तू,
गंगडोलुनु कदिपि गंतेडु !
आदि सूकर
वेद वेद्युडु
घुर्घरिस्तू, कोरसाचाडु !
पुडमितल्लिकि
पुरुटिनोप्पुलु
कोत्त सृष्टिनि स्फुरिंपिचायि !

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अवतार

यम-महिष के लोह-घंटे
मेघ-पथ में
घनन-घन गूँजे ।
नरक के शत श्वान भीकर
तोड साँकल
लपक कर झपटे ।
प्रात-रवि के सात घोड़े
फेन उगले
दौड़ते आए ।
चंडिका का सिंह-वाहन
झटक केसर
जम्हा कर जागा ।
इंद्र का मद-मत्त ऐरा-
वत चुनौती
में चिघाड़ उठा ।
क्षुब्ध नंदी क्रुद्ध हुंकृति
भर धरा को
खूंदने लगा ।
आदि शूकर वेद-वेद्य
पसार दंष्ट्रा
घुर्घुराने लगा।
जननि-भू की प्रसव-पीडा
नव सृजन का
भान ले आई ।

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जगन्नाथुनि रथचक्रालु

पतितुलार !
भ्रष्टुलार !
बाधासर्प दष्टुलार !
ब्रतुकु कालि,
पनिकिमालि,
शनि देवत रथचक्रपु
टिरुगुललो पडिनलिगिन
दीनुलार !
हीनुलार !
कूडुलेनि; गूडुलेनि
पक्षुलार ! भिक्षुलार !
सखुलवलन परिच्युतुलु,
जनुलवलन तिरस्कृतुलु,
संघानिकि बहिष्कृतुलु—
जितासुवुलु
च्युताशयुलु
हृताश्रयुलु
हताशुलै
एडवकं डेडवकंडि !
मी रक्तं कलगि कलगि,
मी नाडुलु कदलि कदलि,
मी प्रेवुलु कनलि कनलि,
एडवकं डेडवकंडि !
ओ व्यथा निविष्टुलार !
ओ कथावशिष्टुलार !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जगन्नाथ के रथ चक्र

पतित लोग
भ्रष्ट लोग
पीड़ा-सर्प-दष्ट-लोग
ज्वलित-प्राण
विगत-मान
शनिरथ के
चक्रों की धुरी बीच दलित-गलित
सीन लोग
हीन लोग
बेचारो ! बेकारो !
अधनंगो, भिखमंगो
सकल-स्वजन-परिच्युत हो
अखिल मनुज-तिरस्कृत हो
निखिल भुवन-बहिष्कृत हो
प्राण-हीन
ज्ञान-हीन
स्थान-हीन
अति हताश
रोओ मत ! रोओ मत !
लोहू सब भभक भभक
धमनी सब खिसक खिसक
आंतें सब धधक धधक
रोओ मत ! रोओ मत !
हे व्यथा-निविष्ट बंधु
हे कथावसिष्ट बंधु

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पतितुलार !
भ्रष्टुलार !
बाधासर्प दष्टुलार !
एडवकंडेडवकंडि !
वस्तुन्ना योस्तुन्नायि...
जगन्नाथ,
जगन्नाथ,
जगन्नाथ रथ चक्राल्
जगन्नाथुनि रथ चक्राल्
रथ चक्राल्
रथ चक्राल्
रथ चक्राल् रथ चक्रा
लोस्तुन्ना योस्तुन्नायि !
पतितुलार !
भ्रष्टुलार !
मोयिल्दारिनि
बयल्देरिन
रथचक्राल् रथचक्रा
लोस्तुन्ना योस्तुन्नायि !
सिंहाचलं कदलिदि,
हिमाचलं करिगिदि,
विंध्याचलं पगिलिदि —
सिंहाचलं,
हिमाचलं,
विंध्याचलं, संध्याचलं...
महानगा लेगुरुतुन्नायि !
महारथं कदलुतुन्नादि !
चूर्णमान
घूर्णमान
दीर्णमान गिरिशिखराल्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पतित बंधु
भ्रष्ट बंधु
पीड़ा-सर्प-दष्ट बंधु
रोओ मत ! रोओ मत !
वह देखो ! वह देखो !
जगन्नाथ जगन्नाथ
जगन्नाथ रथ के चक्र
जगन्नाथ के रथ के चक्र
रथ के चक्र रथ के चक्र
रथ के चक्र वह आए
लो आए, आ गए, आ ही गए !
पतित बंधु !
भ्रष्ट बंधु !
मेघ-पंथी
वेग वान
रथ के चक्र
रथ के चक्र
वह आए ! लो आए !
सिंहाचल विचल उठा
हिमाचल पिघल उठा
विंध्याचल दहल उठा
सिंहाचल
हिमाचल
विंध्याचल
संध्याचल
महानग उड़ने लगे !
महा रथ चलने लगा !
चूर्णमान
घूर्णमान
दीर्णमान

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गिरगिरगिर तिरुगुतुन्नायि !
पतितुलार !
भ्रष्टुलार !
बाधासर्प दष्टुलार !
रारंडो ! रंडो ! रंडि !
ऊरवतल नीरिंकिन
चेरुवुपक्क, चेट्टुनीड—
गोनेलतो, कुंडलतो
ऎट्टु चूस्ते अट्टु चीकटि,
अट्टु दु:खं, पट्टुनिराश—
चेरसाललु उरिकोय्यलु
कालुवलो आत्महत्य !
दगापडिन तम्मुलार !
मी बाधलु ने नेरुगुदुनु···
वडलो, कडु
जडिलो, पेनु
चलिलो तेग नवसि कुमुलु
मी बाधलु, मी गाधलु
अवगाहन ना कवुतायि !
पतितुलार !
भ्रष्टुलार !
दगापडिन तम्मुलार !
मीकोसं कलं पट्टि,
आकाशपु दारुलंट
अडावुडिग वेळ्ळिपोये,
अरुचुकुंटु वेळ्ळिपोये
जगन्नाथुनि रथचक्राल्
रथचक्र प्रळयघोष
भूमार्गं पट्टिस्तानु !
भूकंपं पुट्टिस्तानु !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शैलशिखर
सर सर सर चकराए !
पतित बंधु !
भ्रष्ट बंधु
पीडा-सर्पदष्ट बंधु
आ जाओ ! आओ ! आओ !
गाँव दूर, हीन-नीर
ताल पार पेड़ ओर
बोरी ले बँधना ले
जिधर देखो उधर रात
उधर शोक उधर निराशा का भूत !
जेलों में फाँसी पर,
नहरों में आत्म-घात ।
वंचित हे बंधु-वृंद
मुझ को मालूम तुम्हारी विपदाएँ !
गरमी में बरखा में
सरदी में सूख भींज ठिठुर निठुर
व्यथा भरी कथा सभी
जानता हूँ, मानता हूँ !
पतित बंधु !
भ्रष्ट बंधु !
चिरवंचित नष्ट बंधु !
तेरे लिए कलम पकड़
दूर गगन पथ में उड़
धड़-धड़-धड़ बढ़ते उन
चढ़ते उन
जगन्नाथ के रथ के चक्रों को
रथ-चक्रों के प्रलय-घोषण को
भूमि पर उतारूँगा !
भूचाल रचाऊँगा !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नट धूर्जटि
निटालाक्षि पगिलिंदट !
निटालाग्नि रगिलिंदट !
निटालाग्नि !
निटालार्चि !
निटालाक्षि पटालुमनि
प्रपंचान्नि भयपेट्टिन्दि !
अरे झा८ ! झा८ !
झटक्, फटक्...
हिंस नचण
ध्वंस रचन !
ध्वंस नचण
हिंस रचन !
विषवायुवु, मरफ़िरंगि,
टार्पीडो, टोर्नाडो !
अदि विलयं,
अदि समरं
अटो इटो तेगिपोतुंदि !
संरंभं,
संक्षोभं,
सम्मर्दन, संघर्षण !
हालाहालं पोगचूरिंदि !
चेलरेगिंदि !
पतितुलार !
भ्रष्टुलार !
इदि सवनं
इदि समरं !
ई यंगिरिन इनुपडेग !
ई पंडिन मंट पंट—
द्रोहालनु तू गोट्टि,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नट-राट् शिव
विकट-नयन फूट पड़ा ।
विकट-अनल छूट पड़ा ।
निटल-नयन
निटल-अनल
विकट-अनल
प्रकट देव धरा सकल थर थर थर थर्राई ।
अरे धांय ! धांय !
झटक फटक
हिंस्र निपुण
ध्वंस रचन
ध्वंस निपुण
हिंस्र रचन
विषवायू-मेशीनगम
टार्पीडो, टार्नेडो
यही विलय
यही समर
वारा-न्यारा हो जायेगा
अंधाधुंध-चकाचौंध
सम्मर्दन-संघर्षण
हालाहल धुंधुआया
कोलाहल बौराया
पतित बंधु
भ्रष्ट बंधु
यही सवन
यही समर
यह उड़ता लोह-श्येन
यह बढ़ता अग्नि-शस्य
द्रोही को मीच देगा
दोषों को पोंछ देगा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दोषालनु तुडिचिपेट्टि !
स्वातंत्र्यं,
समभावं,
सौभ्रात्रं,
सौहार्दं
पुनादुलै इळ्ळु लेचि,
जनावळिकि शुभं पूचि—
शांति, शांति, कांति, शांति
जगमंता जयिस्तुंदि,
ई स्वप्नं निजमौतुंदि !
ई स्वर्गं ऋजुववुतुंदि !
पतितुलार !
भ्रष्टुलार !
बाधासर्प दष्टुलार !
दगापडिन तम्मुलार !
एडवकंडेडवकंडि !
वच्चेशाय्, वच्चेशाय्,
जगन्नाथ,
जगन्नाथ,
जगन्नाथ रथचक्राल्,
जगन्नाथुनि रथचक्राल्
रथ चक्राल्,
रथ चक्राल्,
रथ चक्राल्, रथ चक्राल्,
रारंडो ! रंडो ! रंडि !
ई लोकं मीदेनंडि !
मी राज्यं मीरेलंडि !

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्वतंत्रता
औ समता
भ्रातृ-भाव
स्नेह-भाव
बनियादें नवजग की
जनता के शुभ्र-युग की।
शाँति शांति कांति शांति
अग जग पर छाएगी
स्वप्न यहाँ सत्य होगा
स्वर्ग यहाँ आ बसेगा
पतित बंधु
भ्रष्ट बंधु
पीड़ा-सर्प-दष्ट बंधु !
हे वंचित भ्रातृ-वृंद !
रोओ मत ! रोओ मत !
आ गए-आ ही गए;
जगन्नाथ
जगन्नाथ
जगन्नाथ रथ के चक्र
जगन्नाथ के रथ-चक्र
रथ के चक्र
रथ के चक्र
रथ के चक्र
रथ के चक्र
आ जाओ ! आओ ! आओ !
यह दुनियाँ तुम्हारी भैया !
अपना राज सम्हालो भैया !

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विदूषकुनि आत्महत्य

क्रोव्वोत्तु लारिपोयिनै
क्लोरोफ़ारंला चीकटि क्रम्मिंदि
प्रपंचं तन मरणशासनं व्रासुकोन्दि ।
विदूषकुडु आत्महत्य चेसुकोन्नाडु ।
यंत्राल मंत्रगानं
विषधूमाल तुपानु
स्टीमर्लो चिंपांजी
नांदि लो भरतवाक्यं ।
मृत्युवुलो सृष्टि
विदूषकुनि आत्महत्य
विदूषकुनि विकट हासंलो
कपालं पकालन्नदि
आकलि अन्नं वंडुकोन्दि ।
हंस आकाशं अंदुकोन्दि
विदूषकुनि विषादं
समुद्रंलो बडबाग्नि
भूकंपंलो फ्रूटसलाड
कानि क्रोव्वोत्तुलु मळ्ळी वेलिगि
मरण शासनं मंडिपोयिदि ।

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विदूषक का आत्म-घात

मोम की बत्तियाँ बुझ गईं।
क्लोरोफारम सा अंधियारा छा गया।
विपुल विश्व ने निज मरण-पत्र लिख लिया।
विदूषक ने आत्म-घात कर लिया।
यंत्रों का मंत्र-गान
विष-धूमों का तूफान
स्टीमर में चिंपांजी
नांदी में भरत-वचन
मरण में सृजन।
विदूषक का आत्म-घात।
विदूषक के विकट-हास में
खोपड़ी खिलखिला उठी।
भूख ने भोजन पका लिया।
हंस ने आकाश छू लिया।
विदूषक का विषाद
सागर में बड़वानल
भूचाल बीच फ्रूट-सलाद।
लेकिन मोम-बत्तियाँ फिर से सुलगीं
और मरण-पत्र जल गया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

युगशक्तिकि आह्वानमु

ओहो ! सौंदर्यनिशीध साम्राज्यमूर्ति !
रक्तारुणप्रवाह समरकल्लोलमुलो प्रजल
प्रफुल्ल सौंदर्यजीवितानंदमुग्धुलं जेयुदुवु !
अनंत मुखमुलुगल अंदाल अनलमा !
नी सय्याट पाटल याराटमुलतो कुंदकिट
कुंडलंबुल कांति ब्रम्हांडमुनकु तेजश्शक्ति यौनु !
जीराडु वोणील नोय्यारमुग नेत्ति विजामरल्
वीवगा नीवु, आशक्ति सर्वव्यापकमु जेंदुनु ।
कल्लोलमेघाग्निवै नडियेंडलो मेरुपुतीगलपै
वसन्तमुलाडु विवस्त्रमूर्ती ! नी शरीरमु पैन
बंगारु नूगारु विद्युन्मालयै वधिल्लु चन्नदि !
अनलमुल दळमुलतो वेलुगोन्दु नाभीलपद्मम्मै
नी मुखमु नित्य यौवनमै प्रणयाग्निपवनमै
ना हृदय अंबुधी दावाग्नि धवळ मौतुन्नदि !
ओहो तेजमा ओजमा आभील बीजमा ! स्फूर्जिताक्रांतमा !
नी ज्वाललो सकलवर्णमुलुनू निलयमै युंडुनु ।
पलकलतो विकसिंचु वज्रमुल धवळतलु अललुपैजिम्म
सम्मोद भरितलै विरुचुकोनि वेदजल्लु अंबुधुल माणिक्य
हाराल वर्णमुलु, अनंत चैत्रमुल निबिडमौ
केञ्जाय चिगुराकु पूतलो रकरकपु रीतुलु
उय्याललूगु नीलधवळिमल मिळितमगु मंचुबिंदुवुल
जिलुगैन रंगुलु, नी प्रेम ज्वाललो निबिडमै नीरुकावुलदेलु !
ओहो सौंदर्य साम्राज्यमूर्ती ! विराड्विश्वेश
राधींग पत्नी ! नक्षत्र
स्फटिकमुल नवरवलाडे वेलुगुत्रै, तळुकुत्रै निबिडांध

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

युग-शक्ति का आवाहन

अहो निशीथ-सुषमा-साम्राज्य-प्रतिमा !
रक्तारुण-प्रवाह-प्रबल-कल्लोल-लोल जन-गण को
प्रफुल्ल-जीवनोल्लास से विमोहित करती हो।
अहो अनंत-आननवाली अति सुंदर अनल-शिखे !
उन्मत्त-नृत्य लीलांदोलनशील लोल तव कुंडलों की कनक-कांति;
विपुल-विश्व-हृदय ज्वलित तेजश्शक्ति भाँति।
चंचल निज अंचल चामर समान उठा हवा करती हो जब
जग में जीवन की बिजली सी दौड़ जाती।
विलय-घनाघन में गोपित अनल सी
दहकती धूप में बिजली के तारों पर
होली खेलनेवाली विवस्त्र सुंदरते !
तेरे शरीर पर हेमाभ रोमावलि।
विद्युत्-वल्लरी सी विराजित होती।
तरल अनल सम शोभित गरलमय शतदल सा
तव आनन शाश्वत तरुण।
प्रणय के अनल हेतु जैसे पवन
मेरे हृदय-सागर में बडवानल
सा रह रह उठता जल।
अहो तेज ! अहो ओज ! अहो आभील-बीज !
निरताशांत, निराक्रांत
तेरी ज्वाला में विविध वर्ण विविध रुचियाँ है विलीन।
हीरक-फलक विकसित सप्तवर्ण-सम्मिलित झिलमिल धवलिमा
सागर-वीचिका-विकीर्ण रमणीय मणियों का रोचिर्मरीचि-जाल
नूतन चैत्र के नव नव पल्लवों की धौत-पीत-हरित अरुण राग-माल
ओस की बूंदों पर डोलती नील-धवल विरल तरल टलमल झांकी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कारांध्र देशाकाशान, वज्रायुधमु वले
एनाडु गन्पडेदवो तेल्पुमु: त्रिपुरांतकुडनै
लेचेदनु, प्रळयकालाभील गर्जपर्जन्यमुलतो,
निशीध निबिडांधकारांतराळाग्नि नगु नेनु. . .!
उदयोदयालनडुम, प्राक्पश्चिम प्राकारमुल मध्य,
जीवितानंतरपु निश्शब्दरूपमुग, मोलकेत्तु मुन्नें
चीकटिलो निरीक्षिंचु चुंडेटि वित्तनपु रूपुगा
नी यालयमु निर्मिम्परबडिनदि । उत्पत्ति लयमुललो
जीवितपु हाहाकारालु, संतोषध्वानालु, नीयंदु
नीवुच्चरिंचे ह्लां, ह्लीं, ह्लूं ! ह्लः अने
यच्चैस्स्वरालु
आद्यंतमुलु मिळितमै नगयु निश्शब्द कालचक्रं
बंगारु वड्डाण रूपमै नीनाभिकलंकारं ।
नी नर्तनल नालिंचि जीवितमु विकसिंचु-मृत्युवे ध्वानिंचु
आकुपै आकुतो वेरुपै वेरुतो पूवुपै पूवुतो
संधि संधुल मध्य वासिल्लु रहस्याल गर्भानने दाचि,
ए मृत्युवुनुंडि जनिंचि ये मृत्युवुनकै तानु
पेरगुनो या जीवितानंदपुकळलनु वेन्नाडुचू,
अंधकारांतराळालनुंडि, वर्णाल वित्तनालिवकसिंचु !

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तेरी प्रणय-ज्वाला में निहित सुषमा की छवि बाँकी ।
अहो सुषमा-साम्राज्य-प्रतिमा !
विराट विश्वेश्वर की अनुपम अर्धांगिनि !
तारक-हीरकों की झिलमिल झलक बन
निविड नील तिमरमय देश के काल-भाल-फलक पर तिलक बन
भीषण अग्नि बन, कब दर्शन देगी तू बता दे कि
में भी जाग पड़ूं विकट त्रिपुरांतक बन
प्रलय-काल का आभील गर्जित-पर्जन्य बन
निश्चल निशीथ के अंध अंतरंग में
विलीन कालानल कीलिका सा ।
उभय-संध्या-समय बीच; प्राची और प्रतीची के प्राकार बीच
जीवन-अनंतर के निपट निस्वनता-रूप ।
अंकुरार्पण-पूर्व तिमिर निरीक्षण रत बीज-रूप;
निर्मित तेरा मंदिर ।
सृजन और निधन मध्य जीवन का हाहाकार जयजयकार
त्वदुच्चरित 'ह्राम्! ह्रीम! ह्रोम्!' आदिक तांत्रिक मंत्रोच्चार!
आदि-अंत-योग-चलित नीरव काल-चक्र
मणिमय मेखला सा तेरी नाभि का है अलंकार ।
तेरे नर्त्तन द्वारा विकसित जीवन, मरण का गायन;
मूल में मूल बन, पर्ण में पर्ण बन, फूल में फूल बन
संधि-संधि में महकते रहस्य निज गर्भ में कर गोपन
जिस मरण में से जनम ले जिस मरण हेतु निज विकास
होता, उस जीवन की आनंद-कला का पीछा करते
अंधकार के अंतर में वर्ण-वर्ण के बीज उपजते ।

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वैतरणि

अनाथ बालिकल जीवालु
अनाघ्रात कुसुमालु रालिन रीतिगा निराधारालेट्लो,
निष्प्रयोजक प्रतिभावंतुल जीविताल‌ु अट्ले
निष्ठूरालुगा ना देशजनुललो निलिचिपोयिनवि !
ना देश जनुललो निलिचिन निष्ठूराले,
ना जीवितांतं वरकू तरुमुतुन्न दय्यालु !
दीर्घायु दीलुतो दीनवदनालतो दूविल्लु दय्यालु !
दोगाडु दय्याल दीनालापालु
पूदोट विहरिंचु
क्रूर सर्पाल बुसबुसल कुसुम सुवासनवले
भयान्नि भ्रांतिनी पुरिगोल्पुतुन्नवि !
निशीथ सौंदर्यमूर्ती ?
मैमरचि नीयधर चुंबनानंदितुडनै ना
निष्ठूर सर्पाल निश्श्वास कुसुम वासनलु
नन्नाराट पेट्टि काराडि कराडि
ना जीवाल रापाडु चुन्नविगदे !

× × ×

ओहो सौंदर्य समाज्ञ निशीथमूर्ती !
तरालनुंचि व्यापिंचि वच्चु विचार व्याधिग्रस्तुडौ
साम्राज्याधिपुनि बोलुदुनु;
तराल विचारमु ना हृदयान प्रवेशिंचि व्यापिंचि
समाधि चेसे ना पुष्पाल शय्यनु !
निर्जीव कार्यालुगा नुंडु मृतजीवि नौ ने जेयुनवि !
एमंदुवा ओ निशीथ सौंदर्यमूर्ती !
ना रक्तनाळमुलो पसरेक्कि पेरुकोन्नदि विपरीत वैतरणि !

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वैतरणी

अनाथ तरुणियों के जीवन
अनाघ्रात सुमन बन झर जाते निराधार।
निष्प्रयोजन प्रतिभा-शालियों के जीवन भी वैसे ही
उपालंभ बनकर झर जाते मेरे इस देश में।
और वे उपालंभ आजीवन मेरा पीछा करते भूत-प्रेत !
दीन-वदन आजीवन मेरा पीछा कर भूत-प्रेत !
लंबे लंबे डग भर मेरा पीछा करते
उन प्रेतों का दीन-विलाप
उपवन में सुमनों के परिमल बीच विहार
करते क्रूर सांपों की फुफकार
बनकर फैलाती भीति और भ्रांति।
हे निशीथ-सुषमा की प्रतिमे !
तेरे अधर-आस्वादन-चुंबन में
जब मैं अपने को भूल जाना चाहता
तो उन उलहनों के सांपों की कुसुम-परिमल बसी निश्वास
मुझ को झकझोर कर, मेरे प्राणों को
मसल मसल कुचल कुचल ज.ती है।

× × ×

हे सुषमा-साम्राज्य की निशीथिनी प्रतिमे !
युगयुग से अंतर को नोचती खरोचती
विषाद-व्याधि-राहु-ग्रस्त, त्रस्त सम्राट जैसा मैं।
युगयुग का विषाद मेरे इस हृदय में
घुस कर ज्यों बस गया है !
कब्र सी बन गई है मेरी फूलों की सेज !
मैं हूँ जीवच्छव ! मेरे सभी कार्य निर्जीवन !
क्यों-कि मेरी धमनियों में बहती है
युग युग की काई जमी मलिन मलीमस विपरीत वैतरणी !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रेम

—शिष्ट्ला उमामहेश्वर राव

प्रेमयनगा चूचुटगादु, पलुकुटगादु,
विह्वल चित्तमुनो वापोवुटगादु !
प्रेमयनगा मंत्रमुगादु, तंत्रमुगादु,
आत्मनिर्वाणमुचे आराधिचुटये !
अनगनंगा प्रेमयनंग अपूर्वगाथ !
पूर्वकर्म परिपक्व महागूढगाथ !
सीतयनगा चेञ्चीतयनग
त्रेतायुगपु पराशक्ति ! द्वापरलक्ष्मि !
कलिलो ना लक्ष्मि !
जन्मतो जन्मिचुनोयी जीवेच्छलन्नी
जन्मांतमु जीविंचुनोयी !
जनकुनि गृहमुननुन्न सीत, ना
कललो, वेन्नेल जल्तारु भूमिपै नडुवगा कालि
गोलुसुल विलास रासकळ लीललु
नन्नु निलुवुन चेङगुट्टुग्यालल
ऊचि मेल्कोल्पु !
घरणिनि वहिंचि मंदगमनयी
जगश्शक्ति, श्रीशक्ति ! सीतनु चूचि सहिंच लेनु !
ऍन्तभारमो कनुमूयक मोयि,
क्षेत्रवति सीत स्वेदवनमु वैकुंठमु दहिंचु !
चेमट बिदुवुल चेदिरिंचि राल्चु
पय्येट वीवगारालु मुत्याल तलंब्रालेन्नडो !
एन्नडो पडति कीनीड वेनुक
वेनुकगा, वेनुकगा, वेनुकगा वेन्नाडि
कव्विंचि नव्विंचि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रेम

–शिष्ट्ला उमामहेश्वर राव

प्यार के माने दुलार नहीं, निहोर, मनुहार नहीं,
विह्वल-चित्त का व्यवहार नहीं।
प्रेम कोई मंत्र नहीं, तंत्र नहीं
प्रेम तो आत्म-निर्वाण द्वारा आराधन है।
कहते हैं कि प्रेम एक अद्भुत पीडा है
पूर्व-कर्म-परिपाक लभ्य एक निगूढ क्रीडा है।
और सीता वह माता है
त्रेता की पूज्य-शक्ति, द्वापर की लक्ष्मी
और कलि में वह मेरी लक्ष्मी है।
जन्म में जन्म लेती जीवन की इच्छा बन
जन्म के अंत तक जीती, वह सीता है।
जनक-गृह-वासिनी वैदेही
मेरे सपनों में, चाँदनी की जरी के बेल-बूटे
कढ़े हुए मेरे हृदय पर पग धर जब चलती है
तो उसकी किंकिणी की किलकार, नूपुरों की झनकार
मुझे नींद के झूले पर झुला कर डुलाकर
जगा देती है।
विपुल वंसुधरा का भार
वहन कर, मंथर-गति चरण धार
चलती विश्व शक्ति, श्री शक्ति सीता को
देख मैं सहन नहीं कर सकता।
दुर्भर भार सिर पर धार
ढोती क्षेत्रवती सीता के स्वेद बिंदु
विकल वैकुंठ में ज्वाल सुलगा देते।
बिखरे स्वेद-बिंदु खरे मोती ज्यों, मंगल-अक्षत ज्यों

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सीता ! मौथिली ! वैदेही यनि
पेलंतो कूँचि कौगिट जेचि वैकुंठमुनु
भूमिकि देच्चुटेपुडो !
चेमटलन् चिम्मुचु मुत्याल बिंदु
वुल ओडलु, भारमुन कृंगिन
ओडलु, नडुवगा, ना
गुंडे दडदडयनि जगद्भारमुनु
धरिंचु धरणिजये तोट्र, रुपडिन जगति येमौनंचु
मूडु कोट्ल कंड्लु गलवाडनै, मुज्जगमुल
वीक्षिंचुचू
आत्रुतार्ति
हृदयुडनै
क्रुंगुचुंटि !
सर्वमानव समिष्टि बाध्यतनु
वेललेनि वेन्नेमुकपै
मोयुचुन्नदि सीत ! —अडुगु
पडिनपुडामेर आमेर
कूकटिवेळ्ळतो पाताळमु कदिलिनटुल
क्रुंगगा, क्रुंगगा, ना हृदयमु
कूलुतू कुप्पग दोन्त्र दोन्तरुलुग कूलिपोये !

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मंद-मंद आँचल डोले और
मैं उस सती की छाया में, पीछे से, पीछे से, पीछा कर
छेड कर, हँसा कर
'सीते ! मैथिली ! वैदेही !' कह कर प्यार से पुकार
निज छाती में बसा कर
कुंठित वैकंठ को इस भू पर न जाने कब उतारूँगा ?
मोती-हार स्वेद-नीर बिखेर कोमल-शरीर
भार से तनिक झुका शरीर ले वह चलती जब
थर थर थर मेरा उर थर्राता कि
जग का भार सिर पर धार
धरणिजा के चरण यदि लड़खड़ाये
तो इस जगत की न जाने क्या गत होगी ?
यही सोच सोच त्रिकोटि नयन उघार
त्रिभुवन में निहार
विकल विह्वल हृदय में घुलता हूँ ।
सर्वमानव समष्टि-दायित्व को
महित निज मेरू-दंड पर
वहन करती सीता । और वह
जहाँ जहाँ पग धरती वहाँ वहाँ
समूल पाताल डोल जाता ! खिसक जाता ! धसक जाता!
और मेरा उर ढुल-मुल हो, टल-मल हो
चलित, विचलित स्खलित हो जाता ।

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महालय अमावास्य !

—शिष्ट्ला उमामहेश्वर राव

इट्टु वेन्नल अट्टु वेन्नेल
नडि शिरसुकु श्री वेन्नल
इट्टु वेन्नेल अट्टु वेन्नेल
चिरु नव्वुल कल वेन्नेल
इट्टु वेन्नल अट्टु वेन्नल
विरुलल्लिन जड वेन्नेल
इट्टु वेन्नेल अट्टु वेन्नेल
चेङगलवल जिगि वेन्नल
इट्टु वेन्नेल अट्टु वेन्नेल
ईश्वरुनिकि तल वेन्नेल
इट्टु वेन्नेल अट्टु वेन्नेल
आकाशमु मोल वेन्नेल
इट्टु वेन्नेल अट्टु वेन्नेल
मनसुल्लो मरुवेन्नेल
इट्टु वेन्नेल अट्टु वेन्नेल
एट्टु चूचिन कनु वेन्नेल
इट्टु वेन्नेल अट्टु वेन्नेल
पिच्चेत्ते वळ्ळंता
वेर्रेत्ते दिक्कुलकै
परुगेत्ते ना मनसुन
वेन्नेल्लो प्रेयसि लेक
अमावास्य ! अमावास्य ! अमावास्य !

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

घोर अमास !

–शिष्ट्ला उमामहेश्वर राव

इधर चाँदनी उधर चाँदनी
मेरे शिर पर मधुर चाँदनी
इधर चाँदनी उधर चाँदनी
सपनों की मुस्कान चाँदनी
इधर चाँदनी उधर चाँदनी
धवल कुसुममयंबनि चाँदनी
इधर चाँदनी उधर चाँदनी
श्वेत कुमुद की वास चाँदनी
इधर चाँदनी उधर चाँदनी
लगी ईश के शीस चाँदनी
इधर चाँदनी उधर चाँदनी
आसमान में रास चाँदनी
इधर चाँदनी उधर चाँदनी
किस के मन का मोह चाँदनी
इधर चाँदनी उधर चाँदनी
किस के दृग की टोह चाँदनी
इधर चाँदनी उधर चाँदनी
जिधर निहारो मधुर चाँदनी
किंतु इस चाँदनी में
दहकते हुए तन में
अकुलाये बिलखाये
बौराये इस मन में
पिया बिना
अमास ! अमास ! अमास !
कारी कजरारी, अँधियारी घोर अमास !

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कपाल मोक्षम्

–श्रीरंगम् नारायण बाबू

वेदसन्निहितु आदि शंकरु
तपस्समाधिनि ओंकारम्मे
हुंकरिंचिनदि ।
चलिंचिनवि चराचरम्मुलु
भूताल्द्रेकिंचिनवि ।
काट्टुक पेट्टिन नयनेंद्रियमै
कर्म साक्षिये चीकट्लुरिलाड्डु ।
अभ्रगंगलो शुभ्रवीचिकल
हलाहलम्मे तलयेत्तिंदि ।
शेषुनि फणाल मणुलकांतुल
वीसरवोयिनवि ।
पूदोटलु लेनेलेवु
वसंतमुलु रानेरावु
मुल्लोकंबुल तबिसि मिन्नलु
मुर्मुरिंचिनारु
अनंतकोटि जीवरासुलु
हाहाकारं चेशायि ।
हरों हरा यनि पाहि पाहि यनि
प्रणमिल्लायि ।
आर्द्रमैनदि आ महामहुनि
अंत: करण ।
अंतट अक्षुलु विधि आकलि आकलि अंटू
भिक्षापात्रकु चेयि चापिनाड्डु ।
उग्रतपस्सुन अग्गिनदि
वेडि कंटिकि सूडिद पेट्टिन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कपाल–मोक्ष

–श्रीरंगम् नारायण बाबू

वेद वेद्य उस आदि-देव की
तप-समाधि में
ओंकार हुंकार भर उठा ।
विचलित हुए निखिल सचराचर
भूत सवार हुआ भूतों पर
कर्म-साक्षि सा विश्व-चक्षु वह
कजरा कर कालिख बिखेरने लगा और
अभ्र-जाह्नवी शुभ्र-वीचि में
हालाहल ने शीस उठाया,
मलिन हो गई आदि-शेष के
फन के मणियों की माया ।
बाग-बगीचे यहाँ नहीं हैं !
यह वसंत की राह नहीं है ।
तीन लोक के मुनिवर-ऋषिवर
उठे खलबला कर
कोटि कोटि उन जीव-योनियों,
ने बस, हाहाकार किया,
'हर हर बम !' कह 'पाहि ! पाहि !' कह
प्रणमित जयजयकार किया ।
आर्द्र हो गया अंतरंग उस
महादेव का !
आँख खोल कर 'भूख ! भूख' कह
भिक्षा-पात्र के लिए अपना हाथ पसारा ।
किंतु कहाँ वह ?
उग्र तपो-ज्वाला में जल कर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ब्रह्मकपालं,
पटपट पळ्ळु कोरिकिनाडु
नटराजु ।
भूतपिशाचाल् बोब्बरिल्लिनवि
वंदिमागधुलु वणिकारु
भयपडि बसवडु रंके वेसिनाडु ।
भूलोकम्मुन तुरकल गोरीलंदु
क्रैस्तवुल समाधुल लोन हिन्दू श्मशान वाटुल
कपालम्मुलु विकविक नव्विनवि !
पुनुकलु पुलकरिंचिनवि;
कंकाळम्मुलु घल्लुन मोगिनवि;
श्वेतपर्वतपु शिखरांचलमुल
कनक भांडमे कदिलिंदि
स्वाहावल्लभु सुवर्ण गर्भं
सळुपरिंचिनदि कळवळिंचिनदि ।
गंगवक्षमे पालपोटुतो
सिंधु गर्भमुन गंगकडुपुलो
लवण सागरपु लोतुल्लो
दागिन नेत्राग्नि
मानव रूपं दाल्चिंदि ।
मन्ने वेलिगिंचिदि, मिन्ने पोगचूरिंदि ।
मंटल्लोने पुट्टाडु मंटल्लोने पेरिगाडु
मंटल्लोने मडिशाडु
अग्निवीणयै भुग्नकंठयै
भग्नगीतियै तारकमंत्रं
परंज्योतिगा वीरशैवुडु
भारतवोरुनि कपालमोक्कटि
कपर्दि चेतिकि रिव्वुन वालिंदि
केव्वुन केकेशाडु कंठेकालुडु !
फालनेत्रमे स्पंदिंचिंदि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कब का खाक हो गया था वह
अनल-नयन-भव ब्रह्म-कपाल बिचारा ।
दांत पीसने लगे ईश नटराट !
भूत-पिशाच चीख चिल्लाने लगे;
बंदि-मागध-जन, सकल प्रमथ गण भर्राए ।
भय कंपित नंदी हुँकार भर उठा ।
और धरा पर, मुसलमान-जन की कब्रों में
ईसाई-गण की समाधि में, हिंदू लोगों के श्मशान में
अट्टहास कर उठे कपाल !
रोमांचित हो उठे हाड !
झनन झनन बज उठे सकल कंकाल !
श्वेत शैल के शिखरांचल पर
कनक-भांड हिल उठा और उस
स्वाहा-पति के स्वर्ण गर्भ में
मची खलबली, उठी पीर
जाह्नवी-वक्ष में उमड़ क्षीर का ज्वार
सिंधु-गर्भ में लवणांबुधि की
गहराई में गुप्त नयन-ज्वाला ने
रूप धरा मानव का ।
दहक-दहक कर धधकी माटी
आसमान का मुंह काला कर;
नर-पुंगव ने लिया जन्म ज्वाला में
हुआ बड़ा ज्वाला में:
और अंत में अंतर्धान हुआ ज्वाला में—
अग्निवीणा बन भुग्नकंठ बन
भग्न-गीत बन तारक-मंत्र-मूर्त्ति बन
परम-ज्योति सा शैव वीर वह ।
उस भारत के वीर-पुरुष का
महित कपाल कपर्दि हाथ में आन गिरा ।
नीलकंठ चीत्कार कर उठे,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अंडपिंड ब्रह्मांडम्मंता
तांडवनृत्यं चेशिदि ।
आनंदाश्रुल ि विदि ।
शेषुनि फणाल मेत्तनि शय्य
पुडमि ओत्तिगिलिदि
एडारि पुष्पिंचिदि
एंदरु पुट्टलेदु इंकेंदरु गिट्टलेदु
अंदरिकी लभियिस्तुंदा
हालहलमंटिन
हस्त स्पर्शं
पेदवुल चुंबनमु
कपाल मोक्षं !
कपाल मोक्षं !

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

फाल-नेत्र ने पाया स्पंदन
अंड-पिंड-ब्रह्मांड डोल कर
तांडव नृत्य कर उठे; दृग से
झरे हर्ष के आँसू झर-झर !
आदि-शेष के अगणित फण की
मसृण सेज पर धरती ने करवट बदली !
मरु-भू फूली और फली।
कितने पैदा हुए, मर गए ?
कहाँ मिला उनको हालाहल-पायी
कर का स्पर्श और अधरों का चुंबन !

कपाल-मोक्ष !
कपाल-मोक्ष !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किटिकिलो दीपम् !

—श्रीरंगम् नारायण बाबू

जितेंद्रियुनि बुद्धिलागु
जयगंट लागु
किटिकि लो दीपं !
गोडिवतल
गदिल्लोपल
पेरुकुन्न कांति
गोडवतल चीकटि
हृदयंलो
ओकटि रेण्डु
वेलुतुरु गायालु
स्वर्गं नरकं
चावु ब्रतुकु
गोप्प बीद
व्यत्यासं,
तेलिवितक्कुव
चदुवेक्कुव
तारतम्यं !
जीवहिंस
चेयननि
ना शपथ !
गोडमीद गदिलोपल
वेलुतुरु कासिचि
चेरिन जीवुल
आकलितो
भक्षिचे बल्ली !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

खिड़की में दीया

—श्रीरंगम् नारायण बाबू

जितेंद्रिय कीं बुद्धि सदृश
विजय-घंटिका-सदृश
खिड़की में दीया !
दीवार के इस पार
कमरे में
पुँजीभूत प्रकाश !
दीवार के उस पार
अंधकार के उर में
एक दो रोशनी के घाव।
स्वर्ग-नरक
जनन-मरण
राव-रंक
का अंतर
बुद्धि की तंद्रा में
अपढ़ अंधेरे में
छू-मंतर !
मेरा शपथ है कि
जीव-हिंसा
न करूँगा;
न देखूँगा।
किंतु उधर
कमरे की
दीवार पर
कांति के लोभ से
एकत्र कीटकों का

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पक्कलो पालु तागे
पसि पिल्लडु
उक्किरि बिक्किरि
यैनट्टु
गोप्प गालिरेगिदि ।
गोडवतल
चीकटि नव्विदि
किटिकिलो दीपं
कंपिचे ऊपेत्तिन
वेर्रि पोरिला
ऊगि ऊगि सागि सागि
तेगिपोयिन
एर्रनि रब्बरु मुक्कै
तेगटारेनु !
यिपुडो किटिकिलो
गोडिवतल गोडवतल
ओकटे चीकटि !
जीवरहस्यं ! ! !

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भक्षण करती
भूखी छिपकली।
जोर की आंधी उठी—
ज्यों माँ की बगल में
दूध-पीते बच्चे का
दम घुटने लगा हो।
दीवार के उस पार
अंधकार
अट्टहास कर उठा।
खिड़की में दीप-शिखा
हकलाई, चकराई, थर्राई।
पागल की प्रज्ञा सदृश
झूल-झूल डंवा-डोल
खींच-खींच तान-तान
लाल रबर की टुकड़ी
बन कर कट गई, मिट गई।
और अब खिड़की में
दीवार के इस पार
दीवार के उस पार
एक ही अंधकार!
जीवन-रहस्य!!

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एमंदि ?

–श्रीरंगम् नारायण बाबू

एमंदि ?
कोम्मलु तलऊपग
कम्मनि कोकिल कूजितालकु
वेन्नेल विहारमुलकु
कन्नेगालि कौगिळ्ळकु
अशिचि आर्द्रम्मै
आनंदाश्रुलु निंचे एडद
अरुणराग यालापन
किदिकालं कादंदि !

एमंदि ?
पाताळम्मुन
पतितुलु पलविंचे
माटल
जिलिबिलि तेटल
चीकटि गुंडे कदिल्चे
आलिपाट
पाडमंदि।
लोपलके
चूडमंदि !

एमंदि ?
मुष्करु लेवरो
तस्करिंचिरि
मुंड्लगुलाबी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

क्या बोली ?

—श्रीरंगम् नारायण बाबू

क्या बोली ?
कोकिल का कल-कूजन
शाखों का शिर-चालन
आशा से कोमल मन
हर्ष-नीर-आर्द्र नयन
करुण-राग-आलापन
का यह समय नहीं। वह बोली !

क्या बोली ?
पीड़ा-पातल-पतित
दीन-हीन जन-गण के
मौन रुदन की पुकार
चीत्कार फूत्कार
अपने उर में बटोर
इस भीषण अंधकार
का अंधेरे का वज्र-वक्ष चीर
तरुण अरुण अरुण राग
गाओ तुम ! गहरे पैठ जाओ तुम ! वह बोली।

क्या बोली ?
जीवन के उपवन में
फूले थे लाल लाल गुलाब !
किसी क्रूर कसाई ने मसल उन्हें, कुचल उन्हें

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पूल नन्निटिनि
मायं चेसिन वारिनि
गायं चेसे
रक्त सिक्त गीता
लेतामे तोडमंदि ।
गालि चेवुल
पोयमदि !

एमंदि ?
विष भुजंगमट !
जीवितमु
जन्म वासनले मरचि
नैजम्मे विस्मरिंप
नागस्वर मूदमंदि
त्यागमु चूपिंचमंदि !

एमंदि ?
शंख गळम्मुन
दिगिपोयिन
तेगिपोयिन
मंगळसूत्रम्मट तानु
दानि पैनि जालुवारु
काटुक कन्नीटिनि
नेनट
कलकालं निलिचिपोयि
विलय वेळकूड मरुव
गगनम्मुनु भूमि
भूमिनि गगनम्मु
ओरटे
गाढ परीरंभम्मुन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किये धरती माता की छाती में घाव !
और अब गाओ तुम
शोणित-शोण-विशाण-क्वाण-गान !
लहू-लुहान तान ।
फट जाएँ बहरे जग के कान ! वह बोली ।

क्या बोली ?
काल-व्याल यह जीवन
भूल जाय गरल-गंध
झूल जाय राग-अंध
छेड़ दे ऐसी तान !
अरे उठा अपनी बीन ! वह बोली ।

क्या बोली ?
कंबु-कंठ में
मैं हूँ टूटा छूटा
मंगल-मुक्ता-हार !
और तुम झर झर झर
उस पर झरते
कज्जल-नयन-नीर !
गाओ ऐसा गान
कि तनिक थम जाय काल !
सृजन-निधन दें ताल !
भुवि को दिव
दिव को भुवि
एक प्रगाढ़ गूढ़ परिरंभण में
जड़ लें, ढँक लें, छा लें ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कलसिपोक पोरंदि
कालं
वियोग कालऽमैनदि
मनकोकनाडु
वेल वेल बोवक
पोद।नाडु
घर्मं विदुवुलपै मनमु
पेनचुक पोदामंदि
कलसि तिरुगुदामंदि
तरचि चूचुकोऽमंदि !
एमंदि ???

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यह वियोग कठिन काल
अपना काल
उस दिन जायगा भाग !
देख जागे भाग !
और हम दोनों हिल-मिल
श्रम जल में सुख-जल में
जायेंगे घुल-घुल ! ...वह बोलो

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कैंदामर

-बैरागी

आकाशपु कासारंलो सूर्युडु ओक कैंदामर
ऋतुकु पूल धूलि रेगु पुडमि ओक कैंदामर
स्नायु शिरा-शंवल-संकुल शरीर-सरसि लोन
हृदयम् ओक कैंदामर
संदेह-देह-घटा-च्छटा-जटिल तंद्रा तमस्विनिलो
मेलुकोन्न सदेहम् कैंदामर
कलंक-पंकिल मैन अक्षराल सरोवरपु शिरसुपैन
अक्षर कवित ओक कैंदामर
करुवु चेरुवुलो आकलि कैंदामर
चोकटि कोट कोम्मनु व्रेलिन वीरुल शिरसुलु कैंदामरलु
घोर रौरव यातनल नीरव नैराश्यपु निशीथ-गर्भम् चोल्चि
प्रज्ज्वरिल्लिन रक्त-ध्वज क्रांति ओक कैंदामर
सुगतुनि क्षत विक्षत-चरणयुगलि कैंदामरलु
एसुक्रस्तु करचरणाल विकसिंचिन तरुणारुण व्रणालु कैंदामरलु
अनंत गगनंलोनि शून्याक्रांत ध्वांतंलो
विनिद्राण परमाणुवुल पदार्थं पंकंलो
दागियुन्न अजरामर आदिशक्ति कैंदामर
श्यामल कुंतलाल सरस्सु लो निर्मल वदनं ओक कैंदामर
निश्चल नीरं वंटि निर्मल वदनंलो कन्नुलु कैंदामरलु
कन्नीरुल कासारंलो पूचिन प्रेम कैंदामर

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अरूण कमल

–बैरागी

गगन के तडागबीच तरणि एक अरुण कमल
जीवनका रुधिर-रंजित-रज उड़ाती धरणि एक अरुण कमल।
स्नायु-शिरा-शैवल-संकुल-शरीर-सरोवर में
स्पंदित हृदय एक रक्त-कमल
संदेह-देह-घटा-छटा-जटिल तंद्रा-तम-विभ्रम में
जाग्रत संदेह एक अरुण कमल
बुद्धि की रुधिर-शुद्ध बलि-वेदी एक मसृण अरुण कमल
सूखे के पोखर में भभकती भूख एक लाल कमल
अँधेरे के किले के कँगूरे पर लटकते शेरों के
ऊँचे शिर अरुण कमल।
घोर रौरव-यंत्रणा का नीरव निराशा का निशीथ-गर्भचीर
प्रज्वलित रुधिर-ध्वज क्रांति एक रक्त-कमल
करुणामय सुगत के चरण-युगल अरुण कमल
ईसा के क्षत-विक्षत तन पर विकच व्रण अमरण अरुण कमल
व्योम के असीम शून्य बीच, प्रसुप्त परमाणु प्रतति के
भौतिक पंक बीच
निहित वह अजरामर आदि-शक्ति अरुण-कमल
श्यामल कुंतल के सरवर में आनन एक अरुण कमल
निश्चल नीर सरीखे निर्मल आनन में नयन युगल अरुण कमल
आँसुओं की सरसी में विकसित प्रेम अरुण कमल।

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वेसवि रेइ

—वैरागी

नक्षत्राल रजत-ज्वाल रगिलिन रेइ !
जाजिपूल मल्लेपूल अंगाराल
नक्षत्राल रक्त-ज्वाल रगिलिन वेळ
मोविनि मंचुमंटलु, व्रेलुल कोनल अनल-शिखलु
नेत्तुरुलो ऊपिरिलो विसपु नाल्कल, बुसलु काट्लु
सेज्ज काददि पाडे कानि मंडुतुन्नदि शवं कानि प्राणि कानि
प्रणय-मरण-वेदन लो रक्कसि-कसि तो पेनगे
विलुलित-पलल-शकल-युगल चरमानल संस्कारम्
कट्टु-कडपटि नकारम्
नक्षत्राल रक्त-ज्वाल रगिलिन रेइ
तेल्ल-चीर, मल्लेपूलु, वेल्लुवला पडुचु-गुंडिय
कानि गुंडिय नेत्तुटिमुद्द
वलपु-वेलुपु आटल पूल-चेंडु
मेत्तनि पट्टु-दिंडु
कादु।
दानि पैन प्रथम-रात्रुल मधुर स्वप्न-गाथल
जिलि-बिलि जिलुगुल जरी अल्लिक लेदु।
मक्कुव रक्केस पोदल मुंड्ल जिक्कि, पोगुलुतुंदि, पोक्कुतुंदि
अदि नेत्तुरु क्रक्कुतुंदि !
गुंडिय वसवल्चिन नेत्तुटि मुद्द !
आक्सिजन् गुडारम्लो
चावु-ब्रतुकुल पडुगु-पेकलल्लिन 'कोमा' लो
अनुभवाल मुंड्ल-तीगलु, शापकाल मंडुगन्नलु
वेइ कनुल कावलि वांड्रु, काचिन चोट
चैतन्यपु शरणार्थुलु नीडल नक्किन चोट

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गरमी की रात

—वैरागी

नखत-माल रजत-ज्वाल जलती रात
बेला, चमेली और जूही के अंगार
नखत-माल, रुधिर ज्वाल, जलती रात
अधर पर हिम की शीतल-ज्वाल
पोर-पोर, उंगलियों के छोर-छोर चूते ज्वाल
सांस-सांस, खून में जहरीली जीभों की फुफकार और डाँस
सेज नहीं, चिता वह
जल रही लाश कि प्राणों की प्यास
प्रणय-मरण की रौरव-यंत्रणा में दानवी-द्वेष में जूझते
विलुलित पलल-शकल-युगल का यह अंतिम अनल-संस्कार
चरम-परम नकार।

नरक्त-ज्वाल रजत-ज्वाल जलती रात
उजली साडी और उजले बेले के फूल
तरुण हृदय में उमडा ज्वार
यही प्यार ?
लेकिन हृदय लहू भरा लोथड़ा है !
प्यार के देवता की फूलों की गेंद नहीं
मुलायम रेशम का तकिया नहीं
कि उस पर प्रथम रजनी के मधुर सपनों के
जरी के बेल-बूटे कढे हों !
मोह के कँटीले झाड़-झंखडों में फँसकर वह
तडपता है, जलता है।
खून उगलता है।
नरम चरबी की परत हटा दो तो हृदय एक लहू भरा लोथड़ा है।
आक्सिजन के खीमे में

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अदृष्टपु पेंडुलम् आशा-निराशल मध्य अगे वेळ
वेटगानि चेतिकि चिक्किन पिट्ट
पिल्लवानि सूदि ग्रुच्चिन तूनीग
गुंडिय वसवल्चिन नेत्तुटि मुद्द ।
आकलिगोन्न बेब्बुलि चीकटि रेइ ।
नरनराल वधिर-वांछा रुधिर ज्वाल
नेत्तुरु चविचूचिन पुलि कबळिस्तुंदि ।
नेत्तुरु चेमरिन कललु,
गरलम् चेमरिन शिललु देहालु ।
मल्लेलु पुलि म्रिगनि ज्ञापकाल
तेल्लनि एमुकलु ।
तननु ताने कबळिस्तोंदि आकलि गोन्न रेइ
मानव हृदयम् लागे ।

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जीवन-मरण के ताने-बाने से बुने हुए 'कोमा' में
संज्ञा की सीमा पर, जहाँ अनुभव के कंटीले तार
विगत-स्मृतियों की सुरंगें, शत सहस्र नयन वाले प्रहरी गण
जिन्हें देख छाया में दुबक रहे चेतना के शरणार्थी
और जहाँ भाग्य का पेंडुलम आशा-निराशा के बीच झूल रहा
वहाँ बस व्याध के हाथ फँसे पंछी सा
नटखट लड़के की सुई से बिंधे पतंगे सा
हृदय तो लहू भरा लोथडा है !
भूखी बाघिन सी अंधेरी रात
रग रग में बधिर लालसा की रुधिर-ज्वाल
खून का चसका लगी बाघिन निगल ही जायेगी
खून के पसीने से तर सपने
जहर के पसीने से तर पत्थर सी काया
और बेले के फूल बाघिन के निगलने से बची-खुची
स्मृतियों की उजली धुली हड्डियाँ हैं।
अपने आप को निगल जाती भूखी रात
मानवी हृदय की ही भाँति !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रंगुल तोट

–बैरागी

(After lifes fitfull fever Duncan sleepeth well? Maebeth)

जीवित ज्वरम् दहिस्तुन्नदि देहान्नि
समाधान समाश्वासम् निरतम् गिकुरिस्तोंदि संदेहान्नि, दाहान्नि
ज्वर-तीव्रत त्रावि त्रावि केंपेक्किन ना कन्नुल तोट लोन
रेप्पल गोडल वेनूक एमनि अडुगुतावु
एमि रंगुलु, एमि रंगुलु, एमि पूलुपूलु
अच्चपु रंगुल तोट निंगि नीलं, नेत्तुरि एरुपु, पच्चिक पच्च
बालितल चेक्कुल पसिमि प्रायपु मिसिमि
तेलुपु, तेलुपु अन्निटिनी तेलिपे तेलुपु
स्वच्छ कांति किरणम् तेलुपु, कनुपिचनि रंगुल पूलचेंडु तेलुपु
नलुपु, नलुपु अन्निटिनी कलिपे नलुपु
नीग्रो नलुपु, रेड नलुपु, अदृष्टपु सिरा नलुपु
रंगुल पोरल क्रिंद निजं नलुपु
अन्निटि की आवल आवल कावलि उन्न चल्लनि तल्लि नलुपु
रेम्मल लो, रेकुल लो, तेले गालि ईल-पाट जोल-पाट
नीरव निशीथाल निश्वासालु
कलुवरिंचि वेलुवरिंचिन निभृत रहस्यालु
रेप्पल गोडलु दाटि वेडि रादु कांति तप्प
लंक वंटि तोट लोन शंकलु लेनि रंगुल शांति तप्प
ई तोटकु शाश्वत माधवुडनु नेनु
तोटनु नेनु ना लोने उन्नदि तोट
ज्वर-तीव्रत काचि काचि वड पोशाक
दारि लेनि, वेरुलेनि तारु लोंचि रंगुलु विडदीशाक
कोरिकल बूदि प्रोवुनु तडिपि, तडिपि
पादुलु चेसि रंगुल तोट वेशानु

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वर्णों की वाटका

–वैरागी

(After lifes fitfull fever Duncan sleepeth well.)

जीवन ज्वर जला रहा देह को
समाश्वास छल रहा संतत संशय-मय दाह को।
ज्वर का प्रखर-ताप पीकर अरुणारुण मेरे नयन उपवन में
पलकों के परकोटे के अंदर, मत पूछो मेरे मीत !
क्या क्या मनहर वर्ण, क्या क्या रंग-बिरंगे फूल; फूल !
विशुद्ध वर्णों की वाटिका, गगन-नील, लहू-लाल दूब-हरा
प्रसूता का पांडुर कपोल वर्ण, नव-वय की सुनहरी निखार
हाँ, और सफेदी, सफेदी जो सब कुछ साफ साफ कर देती
स्वच्छ कांति-किरण की सफेदी
अदृश्य वर्णों के सुमन-स्तबक सी सफेदी
और कालिमा, कालिमा जो सबकुछ लीप-पोत एक कर देती
नीग्रो सी, निशीथ सी, नसीब की स्याही सी कालिमा
रंगों के परदे में सोया एक-मात्र सत्य कालिमा
सबसे दूर, दूर पार पहरा देती सबकी सदय माता सी कालिमा।
फुनगियों पर, पातों में, मचलती चलती हवा,
सीटी देती, अपने आप गुनगुनाती
नीरव निशीथ के निश्वास
फुसफुसाते निभृत रसमय रहस्य।
पलकों की भीत लाँघ भीतर ऊष्मा नहीं आती, केवल कांति;
सोने की लंका से उपवन में शंका-हीन रंगीन शांति !
इस उपवन का मैं शाश्वत माधव;
मुझ पर निर्भर उपवन, मैं ही उपवन।
ज्वर की प्रखरता को खौला कर, छान छान
मार्ग-हीन मूल-हीन कोल-तार में छुपे रंगों का कर संधान

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परुलैवरु चोर कुंडा रेप्पल गोडल वेनुक दाचेशानु
ज्वरम् पेरिगिन कोलदि
अधर-धरणि एंडि मंडि नेरियलु विच्चिन कोलदि
ना स्नायुवुल कालुवल वेंट मंटलु पारिन कोलदि
तोट विरिय बूस्तुंदि रंगुलु पोंगुताइ
निंगि नीलम् नेत्तुटि एरुपु, पच्चिक पच्च ।
पू रेकुल चेक्कुल कंपुल लो ज्वर-वारुणि
लोक मोक तोटौतुंदि । तोटे लोकमौतुंदि ।
तोट लो चोटु लेनि मित्तव जीवितपु अक्षराल अच्चु-तप्पु
राकुमारि वरियिंचिन गूनि वाडु
कुनिके पसिकंदुलकु 'कथकंचिकि, मनमिंटिकि'
अन्नट्टु ग नीतो ओकटि चेप्पलेदु–
ना रंगुल तोटलोकि अप्पुडप्पुडु निन्नु तप्प
एव्वरिनी रानिव्वनु ।

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कामना की भस्म-राशि आंसुओं से सींच सींच,
क्यारियां बना विविध वर्ण-पूर्ण यह उपवन लगाया,
पराई पहुँच से दूर मैंने पलकों के परकोटे के अन्दर छुपाया
ज्यों ज्यों बढ़ता यह ज्वर अधर-धरा तप तप कर
फटती जाती दरार
धमनियों के नालों में बहती ज्वाला-धार
उपवन फूल उठता, विविध वर्णों का उमड़ उठता ज्वार
गगन-नील, लहू-लाल, दूब-हरा
पँखुडियों के गालों की लाली में ज्वर की प्रखर मदिरा
उपवन भुवन बन जाता, भुवन उपवन बन जाता
और मौत जिस की जड उपवन में नहीं पनपी
जीवन के पृष्ठ पर छापे की गलती सी
शाहजादी के आशिक कुबड़े सी
ऊँघते बच्चों के लिए 'कहानी तमाम-शुद' ।
हाँ, तुम से एक बात कहना चाहता था—
मेरी इस वर्ण-पूर्ण वाटिका में
तेरे सिवा और कोई नहीं घुस सकता ।

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चिरंजीवि मानवुनकु मृत्युवु

—आरुद्र

निर्देशिंचिन भावालनु
वाक्यालु बट्वाड़ा चेय्यवु
पदे पदे वागिन ग्रामफ़ोनु रिकार्डुल मादिरि
माटलु अर्थप्रेरण चेय्यवु
विशाललोकं सर्कसु लोपल
विद्य प्रभुत्वोद्योगाल ग्राटिमीद
पिल्लिमोग्गलु वेय्यदु
अधिकारपु अयस्कांत क्षेत्रंलो
विज्ञानं गडियारंला तिरगदु
सैन्सु समस्यापरिष्कारं चेय्यदु
गणितं अधिकाहारोत्पत्ति चेय्यदु
एर्रटेपुल चिक्टिनेललो
स्वातंत्र्यं मोलकेत्तदु
कोर्टुवेळकि प्लीडरु गुमस्ता इंट्लो
रोट्लो पच्चडि नलगदु
किराणा कोट्लो षाहुकारु अरुवियड्डु
चिरंजीवि मानवुडा !
इदि विष्कंभं

आदि मानवुडिलो स्रविंचिन भयं
प्रवहिस्तुन्नादि नीलो
आतडि मस्तिष्कंलो, हस्तंलो, अरुपुलो
प्रभविंचिन तमं
भ्रम पेडुतुन्नादि निन्नु
एदि निजंगा कनबडुतुंदो दान्नि ग्रहिंचलेवु

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चिरंजीव मानव से मृत्यु

-आरुद्र

वाक्य-जाल उद्दिष्ट भावों का
प्रसार नहीं करता ।
घिसे-पिटे ग्रामोफोन रिकार्ड जैसे शब्द
अर्थ का प्रतिपादन नहीं करते ।
विशाल विश्व के सर्कस में
शिक्षा नौकरियों के लोहे के तारों पर
कलाबाजी नहीं दिखा सकती ।
हुकूमत के चुंबक के दायरे में
ज्ञान की घड़ी रुक जाती ।
विज्ञान समस्याओं का निदान नहीं करता
गणित-शास्त्र अधिक आहार का
उत्पादन नहीं करता ।
लाल-फीता-शाही की ऊसर धरा पर
स्वतंत्रता का अंकुर नहीं फूटता ।
कोर्ट का समय हो जाता, किंतु
मुहर्रिर के घर में सिल पर चटनी नहीं पिसती ।
परचून की दुकान पर सेठजी उधार देना बंद कर देते ।
चिरंजीव हे मानव !
यही विष्कंभ है !

आदिम मनुज का अंतर्निहित भय
तुझ में प्रवहित होता ।
उस के तन में, मन में, अरण्य-रोदन में
प्रसवित तम तुझ को भ्रमित करता ।
जो तू देखता है उस को समझ नहीं सकता ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आकार रहितालनु चूडलेवु
'निन्न' नि गुर्तिचलेवु निन्ने पोल्चुकोलेवु
नी कनुपाप अयिदेळ्ळ चिटि पाप

उद्देशिंचिन भावाल आडबोम्मलकि
वाक्यालु गड्डालू मीसालू पेडतायि
तुपाकुलु बहिरंगंगा
मनुष्युलनु वेतिकिरस्तायि
विशाल लोकं सर्कस लोपल
नियंतल नोट्लो प्रजाजीवितं तेगुतुंदि
सैन्सु गड्डु समस्यलनु
रेण्डुचेतुला पुंखानुपुंखालुगा तयारु चेस्तुंदि
गणितं मानवुडि अवसराल बडि एगेस्तुंदि
विद्य जीतं नष्टं मीद
अनारोग्य कारणालवल्ल सेलवु पेडुतुंदि
विज्ञानं नल्लमंदू नूने रंगरिंचि गुटकेस्तुंदि
कळाशाल कक्कूसुल्लो कोक्कोकप्पाठालु
प्लीडरु गुमस्ताकि लंचं रेट्टिपवुतुंदि
किराणा कोट्लो धरलु
रेच्चि तम्मु वेच्चवेसु कोण्टायि
चिरंजीवि मानवुडा !
इदि प्रळयं

आदि मूर्ति लिबिडोलो
गड्डकट्टिन कामं करुगुतुन्नादि नीलो
अतडि कन्नुल्लो कौगिलिलो पोलिकेकल्लो
तिष्टवेसिन आकलि आश्चर्यपेट्टुतुन्नदि निन्नु
एदि निजंगा जरुगुतुन्नदी दान्नि चूडलेवु
आधार रहितालनु पेर्चलेवु,
'नेटि'नि माचंलेवु निन्ने पोल्चुकोलेवु

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो अरूप अदृश्य है उसको देख नहीं सकता।
कल को पहचान नहीं सकता
अपने को जान नहीं सकता
तेरी आँखों का तारा
नन्हा अबोध शिशु बेचारा।

उद्दिष्ट भावों की सुंदरी के चित्र पर
वाक्य-गण दाढ़ी-मूँछ लगा देते।
बंदूकें खुले-आम
आदमी का मजाक उड़ाती!
विशाल विश्व के सर्कस में
तानाशाही के शेर केमुँह में
जन-जीवन का गला दबोचा जाता।
विज्ञान दोनों हाथ
राशि-राशि विषम समस्याएँ तयार करता।
गणित मनुज-जीवन की आवश्यकताओं के
स्कूल से मुँह चुरा भागता।
विद्या अस्वस्थता के कारण
वेतन-रहित छुट्टि माँगती।
ज्ञान कडुआ तेल और अफीम मिलाकर पी जाता।
कालेज के पाखानों में काम-शास्त्र-पठन होता।
मुहर्रिर की घूस दुगुनी होती
परचून की दूकान पर दरें
चिढ़कर अपने आप को गुना करती जातीं।
चिरंजीव हे मानव!
यही प्रलय है!

आदिम नर के लिबिडो में
घनीभूत काम तुझ में पिघल रहा,
उसकी आँखों में, आलिंगन में, 'हाय-हाय' में

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नी अव्यक्तं अलतोलि प्रोद्दुल दंडकारण्यं

ओक पदंलो इमुडवलसिन अर्थं
कोन्नि वाक्याल विस्तीर्णतनि
दुराक्रमण चेस्तुंदि
पेकमुक्कल भविष्यत्तुनि
पोदिगिंदिकि प्रयत्निस्तायि
गुर्रालु कार्मिकुल पूट बत्तेम् मीद बलुस्तायि
विशाललोकं सर्कस्लोपल पोडिचिन प्रतिकत्ती
पेट्लो उन्न नी आशयाल जवरालि
जवनाल गुच्चुकोण्टुंदि
ऍवरेस्टु शिखरानिकि बदुलु
प्रख्यात सिनिमातार जीतान्नि
कोलिचिंदिकि प्रत्येक दळालु प्रस्थानिस्तायि
पिछनु पुच्चुकोन्न कोर्केलन्नी
मळ्ळी उद्योगालकि अर्जीलु पेडतायि
विद्यार्थुल मनियार्डरुलु
मेरकवीधिकि प्रवहिस्तायि
ऍर्रटेपु अविच्छिन्नंगा
परिपालिस्तुंदि

एर्रजेण्डा पश्चिमाद्रि वेनुक
दॉगोनि छद्मवेषरचनकि
उपक्रमिस्तुंदि
नागेटि चालुलो
कार्मिक नायकुल पुर्रॅलु दोरुकुतायि
पन्नेण्डु पेगुल तर्वात
अभिज्ञवर्गालु प्रमादान्नि पसिकटतायि
विदेश व्यवहाराल शाख
पात्रिकेयुल प्रश्नापरंपरलनुंचि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बसी भूख तुझको चकित कर रही ।
जो सचमुच हो रहा उसको देख नहीं सकता
जो निपट निराधार है उसको जुटा नहीं सकता
'आज' को बदल नहीं सकता ।
अपने को पहचान नहीं सकता ।
तेरा अवचेतन अति पुरातन दंडक-कानन ।

एक ही शब्द में सिमिटने लायक अर्थ
अनेक वाक्यों के विस्तरण पर दुराक्रमण कर देता ।
ताश के पत्ते तकदीर का फैसला करने की कोशिश करते ।
घोड़े मजदूरों के दैनिक वेतन और पत्ते खा मोटे होते ।
विशाल विश्व के सर्कस में फेंकी हरेक छुरी
पिटारी में बंद तेरी आदर्श-युवती के जीवन पर घाव कर जाती ।
एवरेस्ट की चोटी के बदले
सिनेमा के नामी सितारों के वेतनों को मापने
खास खास जत्थे निकल पड़ते ।
पेन्शन-भोगी अरमान
नौकरी के लिए फिर आवेदन भेज देते ।
विद्यार्थी-गण के मनिआर्डर
रूप के बाजारों की ओर बह जाते ।
लाल-फीता-शाही अखंड शासन करती ।
लाल झंड़ा पश्चिमाचल के पीछे छुप कर
छद्म-वेष-धारण को उद्यत होता ।
हल की लीक में श्रमिक नेताओं की खोपडियां मिलतीं,
बारह 'पेग' पीने के बाद
विशेषज्ञ खतरे की घंटियां सुनने लगते ।
वैदेशिक मंत्रालय पत्रकारों की प्रश्न-परंपरा से
बचकर अपने आप में वाद-विवाद करने लगता ।
अफवाहों के भारी उद्योग पर
अधिक लाभ-कर को अनुचित ठहराने में

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सुरक्षितंगा तप्पिचुकोनि
तनलो तानु तर्जनभर्जनलु चेस्तुंदि
पुकारुल भारीपरिश्रमल मीद
अधिक लाभाल पन्नु अक्रममने
वाणिज्य संस्थल रायबारं विजयवंतमवुतुन्दि
अबद्धाल अम्मकान्नि प्रभुत्वालु
जातिपरं चेस्तायि
प्लीडरु गुमस्तािक एडो आडपिल्ल पुडुतुंदि
किराणा कोट्लो सामानुलु
चीकटिलोकि निष्क्रमिस्तायि
साफ़ी जीवितम्मीद तेर तेगुतुंदि
चिरंजीवि मानवुडा !
इदि नरकं

आदि मानवुडि आकलिलो
आतडि अलोचन नैपुणिलो
अपुडे साक्षात्करिंचिन कीलकं
वरमिस्तुन्नदि नीकु
नी चैतन्यं आरमुग्गिन अवकाशं
चिरंजीवि मानवुडा !
त्वमेवाऽहं ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

व्यापार संस्थाओं का प्रातिनिध्य असफल होता ।
झूठ की बिक्री को शासक-गण
राष्ट्रीय कर देते ।
मुहर्रिर जी के घर सातवीं लड़की पैदा होती,
दूकानों का माल काले बाजार की ओर प्रस्थान करता ।
सीधी-सादी जिंदगी पर परदा गिरता ।
चिरंजीव हे मानव !
यही नरक है !

आदिम मनुज की क्षुधा में, उसकी बुद्धि-कुशलता में
सद्य: साक्षात्कृत रहस्य वरदान दे रहा तुझको !
तेरी चेतना अधपका अवकाश ।
चिरंजीव हे मानव !
त्वमेवाऽहम !

('त्वमेवाऽहम' से)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नगरम्

—आरुद्र

पाडुतानु नाकु तेलिसिन नगरं गुरिंचि
नगरंलो नाति गुरिंचि नीति गुरिंचि
रकरकाल सन्निवेशालली आवेशालली
प्रकटिंचुतानु मनलांटि मनुष्युल गुरिंचि
अनवरतं होरेत्ते समुद्रान्नि गुरिंचि
मनुष्युल गुरिंचि तप्प मरोवस्तुवु मीद
माटलु कट्टडानिकि नाकु मनसुरादु
पाटलु पाडमंटे नाकुनव्वोस्तुंदि
इक्कडि नकिली प्रकृति दृश्यालमीद
इक्कडि कल्ती उद्यानवनालमीद
ईसडिपुगा पाडेरु इप्पटिदाका कवुलु
ई दृश्यालु नगरं लोनि व्यक्तुलकु
सिसलेन सरुकु वेलसरसं नगदुबेरं
आफ़ीसुलु आवलिंचिन पिम्मट
कार्खानालु रग्गु कप्पुकोन्न तरुवात
पट्टपगालु लेनि बैसिकिळ्ळु
मतिचलिंचिन मोटारु सैकिळ्ळु
पट्टालतो चेट्टपट्टालु वेसुकोन्न ट्रांम्ळ्ळु
कारुं काळ्ळु पोटेक्किन आटोरिक्षालु
पट्टणंलो परिश्रमिंचे वाळ्ळनु
वलपु नोचनि मेदळ्ळनु निंडनि नोळ्ळनु
अलसिपोयिन कळ्ळनु वाळ्ळनु वीळ्ळनु
भद्रंगा इळ्ळकु मोसुकोच्चिन पिम्मट
वाळ्ळ मेदळ्ळ नोळ्ळ कळ्ळ कन्नीळ्ळनु
प्यंगा श्राव्यंगा आलपिस्तानु

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नगरी

—आरुद्रा

गाऊँगा मैं परिचित निज नगरी के बारे में
नगर की नागरी नवेली नार के बारे में, शील-गुण-सार के बारे में
विविध उद्वेग और आवेग द्वारा
प्रकाश डालूंगा सम-वर्त्ती मनुज-गण पर।
अविरत घोषण-शील सागर से बढ़कर
मानव के अतिरिक्त और किसी वस्तु पर
शब्द सँवरने मेरा मन नहीं होता।
कोई गाने को कहता है तो मैं हँस देता।
यहाँ के नकली प्राकृतिक दृश्यों का
यहाँ के विकृत खोटे उपवनों का
मज़ाक उडाया है, गाया है अब तक कवि-गण ने।
लेकिन यही दृश्य नगर-निवासी हित
खरी चीज़, सस्ता भाव, नक़द सौदा !
दफ्तरों के जम्हाई लेने के बाद
कल-कार्खानों के कंबल से मुँह ढँक लेने के बाद,
बेलगाम बाइसिकलें
बिगड़े दिमाग वाली मोटर साइकिलें
पटरियों से जुटजुट कर, घुटघुट कर आगे बढ़तीं ट्रामें,
मोटरें, दुखते पैरों वाले आटो-रिक्शे
शहर के मेहनती लोगों को
खाली मुँहों को, बेमुरव्वत दिमागों को
थकी हुई आंखों को, इनको, उनको, न जाने किन किन को
हिफाजत से घर ढ़ो ले जातीं और उसके बाद
मैं उनके दिमागों को, मुँहों को, आँख के आँसुओं को
श्रवण-प्रेय नवतामय कविता में आलापन करूँगा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वाळ्ळ लोलोपलि निश्शब्दालनु विनिपिस्तानु
दुर्गम गहनांतर सीमल्लोकि नडिपिस्तानु
स्वर्ग नरकाल सहजीवनं चूपिस्तानु

ओकरितो ओकरिकि संबंधं उंडी उण्डनट्टु
अंटी मुट्टनट्टु तेलिसी तेलियनट्टु जीविस्तुन्ना
आधुनिक कवित्वंलोनि पद्यपादालला कनबडुतुन्ना
आधुनिक नगरंलोनि प्रजलु ओके हारंलोनि पूवलु
ओके चक्रानिकि रेकुलु ओके ज्योतियोक्क रोचुलु
ओके वृक्षंयोक्क आकुलु कोरिकललो लेवुविभेदालु
वेदनलो वेसटलो दरिद्रंलो लेवु तेडालु
प्रोद्दुगूकुलु बानिस पडिते निद्दुरलो आटविडुपु
अयिना अप्पुडू वंतेनलु विरिगि पोतायि
तेरचापलु चिनिगि पोतायि
ऍण्डिपोयिन नदिलो ए पडवलु नडुस्तायि
ऍण्डिपोयिन नदिलो ए मोसळ्ळु करुस्तायि
एटिगट्टुन कन्नाल्लोंचि एण्ड्रपोतलु बयटकोस्तायि
बोरियल्लोनि नक्कलु कारु
कोण्ड चरियल्लोनि चिट्टेडलु क रु
नगंरलोनि पापुलु
पुलितोलु कप्पुकोन्न साधुगोवुलु
मद्रासुलोनि मध्याह्नालनु
मच्चिक चेसुकोनि चूडु
बोंबायिलोनी सायंत्रालनु
बोरविरुचुक तिरुगु
कलकत्ता बीरुत्रोनि रात्रुललो
कलमषान्नि कलयचूडु
हैदराबाद्य पडुतून्न कालान्नि
अनवरतं नुव्वु परीक्षिंचु
रच्चकेक्किन नापसानि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उनके अंतर के सन्नाटे को प्रतिध्वनित करूँगा।
दुर्गम अंतस्सीमा तक ले जाऊँगा।
स्वर्ग और नरक का सहजीवन दिखाऊँगा।

और एक दूसरे के नाते होनी-अनहोनी हो
छूते-अछूते हों, जाने-अजाने हो, जीते हुए भी,
आधुनिक कविता की कड़ियों से दीखते हुए भी,
आधुनिक नगर के निवासी एक ही हार की लड़ियाँ हैं।
एक ही पहिए के आरे हैं। एक ही ज्योत की किरनें हैं।
एक ही वृक्ष के पत्ते हैं। उनकी इच्छाओं में नहीं कोई अंतर
उनकी वेदना में, रोदन में,
निपट निर्धनता में नहीं कोई विभेद
सुबह से शाम तक गुलामी करने पर नींद में कहीं छुट्टी होती है।
लेकिन तब पुल सभी टूट जाते, पाल सब फट जाते
सूखी नदी में नावें कैसे चलेंगी?
सूखी नदी में मगर कैसे निगलेंगे?
नदी के किनारे बिलों से केकड़े बाहर आएँगे
माँद में सियार नहीं,
पहाड़ी ढलावों पर तेंदुए नहीं; नगर के पापी-गण
बाघंबर ओढ़े साधु गोएँ हैं।
मद्रासी मध्याह्न से मिलाप करके देखो
मुंबई की शाम का पर्दाफाश करके घूमो।
हैदराबाद के सतरंग समय का
निरीक्षण, परीक्षण करो।
बाजारू हो गई जो ठकुरानी
अपनी उमंगों की राजधानी
हाथ की पकड़ छोड़ अधीर गिरती
नटनियों की रानी!
शहर तुम्हारी ब्याहता औरत नहीं,
रखैल है ही नहीं;

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कोरिकल राजधानि
स्वेच्छ पट्टुतप्पि पडिपोये
ओपिक लेनि गडसानि
नगरं नी धर्मपत्नी कानेकादु
उंपुडुगत्ते अंतकन्ना कादु
वानलो तडिसि मुद्दयिना वलपिंचलेनि
पीलिकलु कट्टुकोन्न अनाकारि बिकारि
पेलवंगा नैना प्रपिंचलेनि अणाकानी विकारि

एण्डिपोयिन नविलोनि पंडुटाकुल गलगल
नेलकोरिगायि एत्तिनपताकालु
नेलकरिचायि पातिन गुडारालु
एन्निकल प्रचारंलाग
एन्दुकू पनिकिरानि राकपोकलु
एवरू नम्मनि वाग्दानलवले
एन्दुको तेलियनि ट्राफिक्कु
नी नगरं प्रोद्दुन्ने एदुरोच्चे
प्रशस्तमैन विश्वस्त
बलवंतप्पेळ्ळिलोनि मुदनष्टपु पेळ्ळिकूतुरु
मूगिवाडि भावप्रकटन पेडिवाडि मूडोपेळ्ळि
आडदानि मीसाल्लाग
असंदर्भंगा मोलचिन पेटलतो
गूनिवाडि वीपुलाग असह्यंगा पेरिगिन पेटलतो
नगरं निन्नु आह्वानिस्तुंदि
नगरं निन्नु उंचुकोण्टुंदि ।
मंदुपेट्टि दक्किचुकोने पेळ्ळांलाग निन्नु कायिस्तुंदि
नगरं नीमुंदरि काळ्ळबंधं
नगरं नी कालकूट मकरंदं

नगरं नीलिनैलानु चोरल तारुरोड्लु परिचालि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मेह में भींज कर, पसीज कर, अधनंगी होकर भी
मोह पैदा करने में विफल
चीथड़े पहने हुई भद्दी भिखारिन है।
मुहब्बत मुंह फेर देने वाली गंदी सस्ती कुटनी है।

सूखी नदी में झरे हुए पातों का कर्कश रव
उड़ते झंडे छू रहे धरती को
तने हुए खीमे चूमते धरती को
चुनाव के प्रचार जैसा
बिलकुल निरर्थक आना-जाना,
राजनीतिज्ञों के अविश्वासनीय वादों सी
अकारण भीड-भाड।
शहर सबेरे सबेरे असगुन बन
प्रत्यक्ष होने वाली विधवा है।
अनचाहे ब्याह की अभागिन दुल्हन है।
गूंगे के मन की वेदना, हिजडे की तीसरी शादी
औरत की ओंठ पर मूंछ जैसी
बेसिर-पैर बेलगाम फैलते मुहल्ले
कुबडे की पीठ जैसे विकृत शीस उठाते मुहल्ले
शहर तुझे बुलाता है।
शहर तुझे रख लेना चाहता है।
शहर तो वशीकरण द्वारा निज दास बनाने वाली मोहिनी है।
शहर तेरे पैरों की बेडी है,
शहर का जहर तेरे स्वर्ग की सीढी है।

शहर नीले नैलान की साड़ी जैसे कोल-तार की सड़कें पहनता है।
और उन साडियों पर मोटरों की जरी के बेल-बूटे चाहता है।
शरबत की दूकानों के बहु मूल्य साटिन के लँहगे पहनता है।
शीसे की खिड़कियों के नीचे गले वाली जाकेट पहनता है।
नैट-क्लब के मोहक 'न्यू-लुक ब्रा' की अँगिया कसता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तारुरोड्ल चीरलमीद
मोटारुल जलतारु काबालि
पानीयपुटंगळ्ळ खरीदैन शाठीनुलंगा धरिंचालि
षापुल ग्लासु विण्डोल लोकट् जाकेट् तोडुक्कोवालि
नैट्ठु क्लब्बुल रम्यमैन 'न्यूलुक्कुन्ना' बाडीनि बिगिंचालि
आधुनिक रंगेळीयुवतिलाग नगरानिकि मेदडु तक्कुव
षोकुलेक्कुव आशयालुलेनि
आशलू विलासालू एक्कुव
इंडिया काफी हौसुलो
पोगिडे मगाळ्ळमुंदु कूर्चोनि
नाजूकुगा काफी पोलुस्तू
रीटा हेवर्त् प्रणयालु
जेन् रसेल् वलयालु मुच्चटिस्तू
टैरन् पवर् गुरिंचि कललु कंटुंदि आधुनिक नगरं
श्रीमंतुण्णि प्रेमिंचडानिकि
आशपडुतुंदि आधुनिक नगरं
अयिदंतस्तुल होटळ्ळ डाब्रामीदि पूदोटलो
वेलुतुरु तगिंचिन एलक्ट्रिक् दीपाल नीलि मसाबुलो
पन्नेण्डु गंटल रात्रि तरुवात
परिष्वंग नृत्यंलो
स्लोफाक्सुट्राट् संगीतानिकि कळ्ळु मूस्तुंदि नगरं
डान्सुफ्लोरु मूल तिरिगेटप्पुडु
नृत्यंलो निन्नदुमुकोण्टुंदि
नीमीद चूरिंचिन प्रेमने
टेंगु डान्सुलो इंकोकडिमीद कूडा
निष्कारणंगा निष्कामंगा
चूपेट्टि पिंजारि नी नगरं
टाक्सीलो प्रियुरालिनि मेटनीकि तीसुकेळ्ळु
सोडा फौंटेन्लो पीचिमल्बा इप्पिचु
अंदमैन भयानक हालीउड् चित्रं चूपेट्टु

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

छबीली, रँगीली, नवेली नार जैसे
आधुनिक नगर के बिलकुल दिमाग नहीं।
मगर सज-धज की कमी नहीं, कोई आदर्श नहीं, लक्ष्य नहीं
किंतु दुराशा का अंत नहीं, हास-विलास की कमी नहीं
इंडिया-काफी-हाउस में
नाज के साथ सिगरेट सुलगाती
हाव-भाव के साथ काफी पीती
रीटा हेवर्थ के प्रणय-कलाप के बारे में
जेन रसेल के गोल-मटोल खिचाव के बारे में
बातें करती हुई, टैरान पवर के
सपने देखती है आधुनिक नागरी!
किसी श्रीमान से प्यार करना चाहती है
आधुनिक नागरी।

गगन-चुंबी होटलों की आखरी मंजिल पर के बगीचों में
मंद प्रकाश वाली बिजली की बत्तियों की नीली मुसकान में
रात के बारह बजने के बाद बाल-डान्स में
धीमे 'फाक्स ट्राट' के संगीत बीच
आँखें मूंद लेती है नगरी।
डान्स-फ्लोर के कोने में जाते ही
वह तेरी छाती से लिपट जाती है;
तेरे प्रति जो प्यार दरसाती है
वही प्यार 'टेग-डान्स' में किसी दूसरे पर
अकारण दिखाने वाली

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'जाम्सेषन्सु' कि तीसिकेल्लि वेरिगा 'जैव' चैय्
नगरं निन्नु प्रेमिस्तुंदि, नगरं निन्नु पूजिस्तुंदि
काम्गार मैदानं लो कार्मिकुल मीटिंगु कन्ना
स्टेडियं लो अमेरिकन् पद्धति कुस्तीलु चूडंडि
जहंगीरु आर्टु गेलरी लो चित्रकळा-प्रदर्शनं कन्ना
लायेड्स् ग्रौण्ड्स् लोनि फुट्बाल् पंदेम् वीक्षिचंडि
रसिक-रंजनि लो शास्त्रीय पाट-कच्चेरी कन्ना
पीपुल्सु-पार्क लो बाक्सिग् मेच् गोप्पदि
आलिंडिया रेडियो लो
आधुनिक साहित्यं पै टाकु कन्ना
रेडियो सिलन् लो तारल गोष्टि सरदा वेसेदि
लक्ष्मीपुरं वै. एम. आइ. ऐ. लो प्रमुखुनि प्रसंगं कन्ना
क्लब्बु लो डब्बु वेसि कट्-जोकर् रम्मी आडडं गोप्प

इदि ईनाटिकि नागरिकत सभ्यत पूज्यत
इदि ईनाटिकि नागरिकत सभ्युल योग्यत

असमर्थुनि परिपालन लाग अंधकारं आवरिंचिदि नगरान्नि। अंतदाक मूसिन कन्नुलु अर्धरात्रान विप्पुतुंदि नगरं। अंतदाका चेप्पनि कथलिनि हीन-स्वरान चेप्पुतुंदि नगरं। नगरं कुडिकंटि लो पुसि। मलिकंटि लो कसि। नगरं तोलिकथलो आकलि। मलिकथलो चीकटि।

इदि आवेदना शिशिरं
मानवुडिक्कड पसरं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निर्मम हरजाई है यह नवेली नागरी ।

प्यारी को टैक्सी में मेटिनी को ले जाओ
'सोडा-फाउंटेन' में पीच-मेल्बा खिलाओ
भयानक मनोरंजक हालीउड की फिल्में दिखाओ
'जाम-सेषन्स' में ले जाओ, पागल की तरह 'जैव्' करो
नगरी तुझ से प्यार करेगी, नगरी तेरी पूजा करेगी ।

कामगार-मैदान में मजदूरों की मीटिंग को गोली मारो
स्टेडियम में अमेरीकी स्टाईल की कुश्ती देखो
जहाँगीर-आर्ट-गैलरी में चित्र-प्रदर्शनी को छोडो
लाएड्स-ग्राउंड में फुटबाल-मैच देखो
रसिक-रंजनी में उस्तादों का गाना सुन कर क्या करोगे ?
पीपुल्स-पार्क में बाक्सिग-मैच बेहतर है ।
आल-इंडिया रेडियो में आधुनिक साहित्य की
समालोचना कौन सुनेगा ?
रेडियो-सिलोन में फिल्मी सितारों से मुलाकात अच्छी है !
वाइ. एम. आइ. ए. में सम्मान्य सज्जन के व्याख्यान कौन सुने ?
क्लब में कट-जोकर रमी खेल रुपया गँवाना ही बेहतर है !
यही आज की अनागरिक सभ्यता की मान्यता
यही आज के नागरिक जन-गण की वदान्यता ।

अँधेर नगरी के चौपट-राज की तरह अंधकार छा गया नगरी में । आधी रात को ही, तब तक मुँदी हुई आँखें अपनी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ई वेदना-शिशिरं लो प्रति मेघस्सू ओक स्रोड्डु
पच्च चच्चिनट्टि बीड्डु, मूलुगुतुन्न वल्लकाड्डु, गूड्डु
अल्लुकुने सालीड्डु । ई आवेदना शिशिरं लो प्रति चैतन्य
तरुवू इंगित-ज्ञान-पत्रालनु राल्चि वेसिंदि, अदृश्य
वूहल तो अव्यक्तालनि दुन्नि, अनुमानालनु चल्लि, अनवसर
खेदालनु पंडिचु कोंण्टुन्ना रंदरु ।

इदि कठिन वरकं
इदि प्रत्यक्ष नरकं ।

बोनु तेरिस्ते नोरु तेरिचे पेद्दपुलि नगर-यामिनि ।
बोलेडन्नि कथलकि चाचिन तन दीर्घ-हस्ताल तो स्वागत-वचनालनु
चदुवुतुंदि नगरं । जीवितपु वरदल बुरदल मड्डुगुन
अड्डुगुन अति तोंदरगा, चिंदर-वंदरगा तिरिगे
जीवुलु अंत दाका अक्कडक्कडा तिरिगि, अप्पुड्डु
चेरु कोण्टारु विशालमैन पावंचाल मीदि कि ।

नगरं लो यामिनि
नरकं लो आमनि ।

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

खोलती है नगरी। तब तक मौन रह कर अपना दुखडा रोने लगती है नगरी। नगरी की एक आँख में किरकिरी है; दूसरी आँख में द्वेष की छुरी है। इस की पहली कथा तो क्षुधा है। दूसरी कथा तिमिर की व्यथा है।

यहाँ तो वेदना का शिशिर है,
नर के पशु होने में नहीं कुछ कसर है।

वेदना के इस शिशिर में हर एक मस्तिष्क एक ठूँठ है। हरियाली की मौत है, एक बीहड झूठ है। आहों, कराहों से भरा स्मशान है। जाली बुनने वाले मकडों का स्थान है। वेदना के शिशिर में चेतना के हर तरु ने सुधि के जर्जर पर्ण झरा डाले हैं। अनुचित कल्पनाओं से अज्ञान को जोत कर, अनबन को बोकर, अनावश्यक मन-मुटाव उपजा रहे हैं नगर के लोग।

यह कडुई चसक है,
यह नरक की झलक है।

कठघरा खोलते ही मुँह बाकर दहाडने वाली बाघिन है नगर की रात। अनगिनत अफसानों के अपने लंबे हाथ पसार कर स्वागत-पत्र पढ़ती है नगरी। जिंदगी की बाढ़ की कीचड़ भरे ताल-तलैयों के तले, इधर-उधर ऊटपटांग उछल-कूद मचाते जीव-जंतु, तब तक न जाने, कहाँ कहाँ घूम-फिर कर, तब कहीं पहुँचते हैं अपने घर; याने चौडे चबूतरे पर, लंबे फुट-पाथ पर।

नगरी की रात
नरक में चैत।

(सिनीवालि से)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पंडुग-नाडु

—श्रीरंगम् नारायण बाबू

पाडालट !
पाडालट !
चलिचे आकलिचे विलपिंचे
मुष्टिवानि रेक्कल मीदिकि संतुष्टि कोरकु चिकि-गुड्डु,
जीवन हेमंतपु चलिकागक कवुलकु ओक गीतं
कावालट !
कावालट !
आमुदपु प्रमिदल लो वेलिगे दीपालु
हृदयं लो वेलिगे भावालु
पंडुगट !
पंडुगट !
कालिन प्रेयसि देहं
चमुरु-कंपु ई लोकं
पाडालट !
पाडालट !
—शरीरमे राम-भजन सेम्मे गीताले भक्तुलु
तिरुवीथुलु तिडि कोरकु तिरिगि तिरिगि अलसिनारु
पंडुगट ! डब्बुलु मॆण्डुग दोरकुनट !
गळमे नादस्वरमुग कालमे मुंदज वैचि
गंगिरेद्दु ब्रतुकु नादि
मुक्कुन विधि ताडै व्रेलाडग पट्टि पट्टि लागुतुंदि
पाडालट !
पाडालट !

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

त्यौहार

-श्रीरंगम् नारायण बाबू

गाना है !
गाना है !
शीत से भूख से, कांपते कलपते
भिखमंगे के कंधे पर फटा-चिटा चिथड़ा संतोष हेतु !
जीवन-पतझर के शीत से भीत कवि के हेंतु एक गीत !
चाहिए !
चाहिए !
माटी के दीवों की कतार
मेरे मन में विचार !
त्यौहार !
त्यौहार !
जलती प्रेयसि का शरीर
चिराँध भरा संसार !
गाना है !
गाना है !
यह शरीर ही राम-भजन का दीवट*, मेरे गीत भक्त-गण !
बस, मुठ्ठी भर चावल के लिए घूम घूम थके चरण !
और फिर यह त्यौहार !
पैसा ! पैसा ! की धुन उठती बार बार
कठ बना शहनाई
काल की टूटी टाँग बढ़ाई !
मैं हूँ भिखमंगे का नाँदिया बैल !
ले जाती खींच मुझे विधि की प्रबल नकेल !
गाना है !
गाना है !

---

* वह दीवट जिसे आंध्र के गाँवों में भजन-मंडली वाले बीच में रखकर, उसके चारों ओर फिर-फिर कर गाते और नाचते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रीरंगम् नारायण बाबू

-बैरागी

('नास्ति एषां यशःकाये जरा-मरणजम् भयम् ')

संज्ञ सरिहद्दुन, लोमांचल लोय लोन, नीडलु कूडे चोट
गडियारपु मुंड्ल जंट कडपटि कौगिलि लो,
मत्तिलि मसकलाडे चोट
अगणित-गणित-चिह्नालु आकाशपु शाखल पै पोंचि चंक्रमिंचे चोट
विवेकपु विरिगिन गद्दे पैन, अराचकपु राचरिकान,
तलक्रिंदुग तपस्सु चेस्तुन्न वाडु
जाडी वीडील चंड होम-धूम-कुंडलि लोंचि
खंडित खड्ग-मृगालु, गंडर गंड-भेरुंडालु चूस्तुन्न वाडु
आकलिनि मेस्तुन्न वाडु

भूताभूत-ज्योतिष्कुडु, संतताग्यचेतस्कुडु
अतडे ऊर्ध्वरेतस्कुडु, हर्षामर्षालु लेनि महर्षि ।

उद्ग्रंथालु तलदिड्लुग नाडु-नेडुलु कीडिंचिन चिकिचाप
अप्सरसल सवाइ हाइ, स्वाप्निक संयोगाल स्वेद-दुर्भर-जागरणालु
काशी-मजिलील कथल राशीभूत-सुरतश्रमलु
पौराणिकपु पयोरिया ऊपे वोसि नोट कदले कविता-क्रिमुलु
एंडिन इमुक पैन कोरिक कुंटि चेप ।

अंतरंगपु टरल लो उपनिषत्तुलु, मार्क्सु, फ्रूडु
वात्स्यायनुडु, हेवलक एलिस,
लीलावति, आइनस्टीन, कालिदासु, जेम्स ज्वायस्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रीरंगम् नारायण बाबू

—बैरागी

"नास्ति एषां यशःकाये जरामरणजम् भयम्"

(श्रीरंगम नारायण बाबू आंध्र के सुप्रसिद्ध आधुनिक कवि हुए जिनकी कविताओं का अनुवाद इस संग्रह में अन्यत्र दिया गया है। वे कवि के घनिष्ट मित्र थे। यह कविता उन का स्मृति-चिह्न है।)

संज्ञा की सीमा पर, लोमांचित घाटी में छाया-संगम-स्थल पर
जहाँ घडियाल के सुइयों की जोडी
चरम परिरंभ में मदहोश गुंथ रही परस्पर
अंबर की शाखा पर अगणित गणित-चिह्न
बंदरों से लपक-झपक फांद रहे इधर-उधर
विफल विवेक की टूटी गद्दी पर, अराजक के राज में
कौन वह औंधे-सिर कठिन तप कर रहा है ?
अधजली बीडी की प्रचंड होम-धूम-कुंडली में
खंडित खड्ग-मृग-मुंड, उद्दंड गरुडों के झुंड देख रहा है ?
भूख को चाट लील रहा है ?
वही वही भूत-अभूत का ज्योतिष्क, अविरत अन्य-चेतस्क
ऊर्जित ऊर्ध्व-रेतस्क हर्ष-अमर्ष रहित महर्षि !

पुरानी पोथियों के तकियों पर 'आज-कल' की फूल-सेज
फटी चिटी सी वही चटाई
अप्सराओं का उपदंश-दंश-विष-मय मिलन-सुख,
स्वाप्निक संगमों के स्वेद-दुर्भर जागरण
तोता-मैना के किस्सों के विगत विस्मृत सुरत श्रम-धन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आदिम निषादुनि विषादानि कि बीट्निकुल निषा तोडु
अवचेतनपु टेक्सरे लो ओयडिपस कांप्लेक्सु
गर्भकोशपु द्विपटि लो, तल्लि वंटि चीकटि लो
स्वरति-निरत बालकुडु, दोष-कशा-चालितुडु ।

अतनि मनसु क्यूबिस्टु बेबिलोनु
वेरिपीरुलु, शिवलिंगालु, सिंधूर-चर्चित शिललु
रक्तांबर-धरुडातडु, रक्ताक्षुडु, आदि-शक्तिकि आराधकुडु
जीवित-श्मशानम् लो कविता-शव-साधन चेस्तुन्नाडु
झल्लुमने कंकालालु, घल्लुमने कपालालु
गुह्य तांत्रिक गुहल लो भैरव-मंत्र-प्रतिरवालु
अग्नि चुट्टू नर्तिंचे दिगंबर शूल-धरुलु
आफ्रिका लो अर्ध-रात्रि ।

निर्जन मानसान अडुगुल सडि वडि वडि म्रोग
नीडल्लो ओदिगि ओदिगि वस्तुन्नाडु नेरस्तुडु
हठात्तुगा संदु मलुपु तिरुगगाने
बुग्ग-मीसाल पत्तेदारु 'हेंड्स अप्' अनि अरिचाडु ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पौराणिक पयोदिया के पोंपले मुँह की
लार में तैरते कविता के क्रिमि-गण
सूखी सिकता पर लँगडी मछली सी वासना ।

बुद्धि की दराजों में उपनिषत्, मार्क्स, फ्रूड
वात्स्यायन, हैवलक एलिस, लीलावती, आइनस्टीन,
कालिदास, जेम्स ज़्वाइस
आदिम निषाद के विषाद के साथ 'बीटनिकों' के नशे का प्रसाद
अवचेतन मन के 'एक्स-रे' में ओइडिपिस कांप्लेक्स
गहन गर्भ-कोश की चादर में, जननी रजनी के उदर में
स्वरति-निरत बालक, दोष-कशा-चालित ।

उस का मन क्यूबिस्टिक बेबिलोन
रंगीन झंडे, शिवलिंग, सिंदूर-चर्चित शिलाएँ
रक्तांबर-धारी वह, रक्त-नयन,
जीवन-स्मशान में कर रहा कविता का शव-साधन
शक्ति का आराधन ।
झनझनाते कंकाल, खनखनाते कपाल
गुह्य तांत्रिक गुहाओं में भैरव-मंत्र का प्रति-रव कराल ।
आटविक पटह-घोष, टोटेम् और टेबू
प्रज्वल अग्नि के चतुर्दिक नृत्य-मत्त दिगंबर शूल-धारी
आफ्रिका में आधी रात ।

निर्जन मन में निज पदरव का प्रतिरव ही भैरव—
ऊँची दीवार के साये में लुक-छिप कर चल रहा अपराधी
सहसा उस आखिरी मोड पर पहुँचते ही
घनी मूँछों वाला जासूस 'हेंड्स अप्' कह चिल्ला उठा ।

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पगिलिन अद्दम्

–वैरागी

ओंटि स्तंभम् मेड पैन
अनंत दिगंतालु भ्रांतिल्लिन आरडुगुल अद्दाल गदि लोन
अंतटा अगणितंगा तानै युन्न चिन्न-वाडु
चरम विरमण-पत्रं पै चेव्रालु चेस्तुन्नाडु ।
निगि-नुदुट, कडलि कडुपुन, पृथुल पृथिवी वक्षम् पैन
अक्षर प्रेम-क्षताल शासनालु निलुप वलसिन चिन्न-वाडु
चिवरि कोक कागितपु तुनक पै चेव्रालु चेस्तुन्नाडु ।

जागर-वारुणि त्रावि कैंपिल्लिन कनुल कोनल
कन्ने-पुन्नमि वलपु कलल निर्दय रुधिरोदयालु
नील-नयन नीरं लो नेत्तुटि-चालु
सूर्यांशुवुल सुवर्ण-सौगंधिक वेदिक पै
मौनंगा नृत्यं चेसे मृत्युवु
पच्चिक मच्चिक लो, व्योमं वात्सल्यं लो
उदार-कुमार-समीराल प्रेम-परिष्वंगं लो
मसृण किसलयाल गुसगुस लो
पोंचि उपहसिंचे मृत्युवु;
हृदि लो दागिन शत्रुवु ।

नीडल कनुल नीलाल्लो नीरेंडल स्मेराभलु
आकुल रेकुल मिलमिल मनु पसिडि मिसिमि शोभलु
पिकिलि पुलुगुल रेक्कल पैन निगनिगमनु वेलुगुल्लो

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

फूटा दर्पण

—बैरागी

एक-खंभा अटारी में
अनंत दिगंत जहाँ दिग्भ्रांत, उस छः कद के शीशे की पिटारी में
सर्वत्र अपने ही आप में व्यापित अगणित-रूप तरुण वह
चरम विरमण-पत्र पर हस्ताक्षर कर रहा है।
गगन-भाल, जलधि-गर्भ पृथुल पृथिवी-वक्ष पर
अक्षर प्रेम-क्षत के अजर शिला-लेख रचने योग्य तरुण वह
अंत में नन्हे से कागज के टुकड़े पर हस्ताक्षर कर रहा है।

जागर-वारुणी पिये अरुणारुण नयनों की कोरों में
प्रेम की पूर्णिमा के कुँआरे मधुर सपनों की खून भरी पौ फटती।
नील नयन-नीर बीच रुधिर-रेख सी जुटती।
सूर्य-रश्मि की सुवर्ण-सौगंधिक-वेदिका पर
मृत्यु मौन नृत्य करती।
दूब की स्निग्धता में, व्योम की वत्सलता में
उदार कुमार समीरण के प्रेम-परिरंभण में
मसृण किसलय के मृदुल मर्मर में
चुपके उपहास करती मृत्यु—
हृदय में घुसी शत्रु।

छाया-नयन-नीलिमा में छनते आतप की धुली मुसकान
पत्तों पर, पँखुडियों पर निखरती झिलमिल झाँकी की शान
पंछी के डैनों पर दमकती सुनहरी रेशम की आभा में

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चिकिलि कत्तुलु तलतलमनु सेलल जलल परुगुल्लो
प्रणय-मरण तोरणाल व्रेलि क्राले शत सहस्र शक्र-धनुवुलु
रुधिरामिष विपिनं लो वेइ वन्नेल आमनुलु
मित्तव पाल राति ओडि लो आडुकोने शिशुवुलु
चिन्नवानि कन्नुलतो परिकिस्ते
जीवन मरणालकु आट्टे तेडा लेदु ।

कालपु किरणालु वालि वेलिगिंचिन पांशुल परमाणुवुलु ग्रहालु
रवि ग्रुंकनि साम्राज्याल गुंडेल नेरियल्लो राबि-चेट्लु
पाल-राति चेक्कुल कन्नीटि बोट्लु
चिरिगिन चरित्र पुटल लोनि नेमलि-कन्नुलु, रोजालु
वसुधांकान शयनिंचिन शैशव-कंकालालु
विगत विभव-शवाल नीरव वदन-व्रण गह्वरालु

अद्दं लो अंतटा अद्भुतंगा, अमितंगा, अगणितंगा
तानै युन्न चिन्न-वाडु
तननु तानु कनुगोने कन्नुल लो
तानु गानि तननु तानु कंटुन्नाडु
चेरुवये दूरपु होरु विंटुन्नाडु,
अणुवु लो अंड-पिंड-ब्रह्मांडालु
तृटि लो त्रिकालालु
ओंडोंट विलय मंदे वलयालै जनन-जीवन-मरणालु
प्रेम-शिशुवु शीर्षं पै पडग विप्पि गोडुगुपट्टिन मृत्युवु
दय गल शत्रुवु ।

आदर्शाल अवधि कवल अर्थ-हीन संकेतालु
गूनि मिन्नुलु, नडुमु विरिगिन तरंगाल भुजंगालु

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

झरने के झलमल जल बीच चमकती नंगी छुरियों की शोभा में
प्रणय-मरण-तोरण वन झूलते से शत सहस्र शक्र-चाप
रुधिर-मांस-मधुवन में वर्ण-मत्त नव वसंत का पदार्पण
मृत्यु के स्फटिक-शुभ्र अंक में खेलते बालक-गण।

तरुण के नयनों से देखने पर मरण और जीवन में
अधिक अंतर नहीं ।

काल के किरण-पात से ज्योतित पांशुल परमाणु-गण से ग्रह सकल
सूर्य-अस्त-रहित विपुल साम्राज्य-वक्ष चीर उगते वे बड-पीपल
संगमर्मर के गालों पर आँसू की बूंदें
मोर-पंख या गुलाब, धूलि-धूसर इतिहास के पृष्ठों में मूँदे
वसुधा-शीतलांक-सुप्त गुप्त शैशव-कंकाल
विगत-विभव-नीरव-शव-वदन-व्रण-गह्वर-जाल।

दर्पण में सर्वत्र अपने आप, अद्‌भुत, अमित, अगणित-रूप
व्यापित तरुण वह अपने आप को देखती आँखों में
अपने से परे एक आप को देख रहा ।
किसी दूर तीर का गंभीर घोष सुन रहा ।
अणु में अंड-पिंड-ब्रह्मांड
तृटि में त्रिकाल
परस्पर विलय होते वलय बन जनन-जीवन-मरण
प्रेम-शिशु के शीस पर फण पसार राज-छत्र लगा रही मृत्यु
सदय शत्रु ।

धुंधले आदर्श के अवधि पार अर्थ-हीन संकेत
कुबडा आसमान, रीढ टूटे भुजंगों सा तरंग-पात

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चीकटि किटिकीळ कन्नुलु
ओंटरि नरुनि भैरव रौरवं लो विश्नीक प्रतीकालु ।

अद्दं लो चिन्नवाडु आवुलिंचि
तन प्रेवुलु ताने लेक्किचाडु,
अद्दम् लोनि तननु ताने कोक्किरिंचाडु ।
त्रिमूर्तुलनु पूर्ति चेसि
'एदी उंडकुंडु गात !' अंटू
तनकु ताने अभय मिच्चुकोन्नाडु ।
देव्व तो आरडुगुल अद्दान्नि ब्रद्दलु चेशाडु ।

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अंधेरी खिडकियों की आँखें,
एकाकी मानव के भैरव रौरव में विश्रीक प्रतीक !

तरुण ने दर्पण में जम्हाई ली और
अपनी आँतों को आप ही गिन लिया ।
अपना उपहास आप ही सुन लिया ।
और त्रिमूर्तियों की पूर्ति कर,
अपने आप को अभय दिया कि
'कुछ भी नहीं बचेगा !'
और एक ही वार में छः कद के दर्पण को टूक टूक कर दिया ।

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मस्तिष्कम् लो लेबोरटरी

—दाशरथी

मोहंजोदारो शिथिलाल लोतुल लोकि—
शताब्दाल मट्टि पोरल क्रिंदि बोग्गै पोयिन
पुरातन नागरिकता-गर्भम् लोकि,
सूर्युडु अस्तमिंचिन जाडल्लोकि वोक दारि;
मरो दारि मस्तिष्कं लोनि मा इंटिकि ।
मा इंटि वेनुकगा—
ताजमहल अंदाल्लो मेरसिन षाजहान् कीर्ति;
अ इ उण्णुल तो ऋलुक्कुल तो कट्टिन वैयाकरणि समाधि;
लोकान्नि अडक्कुंडा एवडो दुष्ट नृपति रचियिंचिन
कठिन शासनाल राशुलु
मरि मायिंटि मुंदुगा—लेबोरटरी ।
वेडाकु दोरिके पेन्सिल् मुक्कु लो—
जगत्तुकु प्राणं प्रसादिंचिन कार्बन् परमाणुवु;
अंदु लो सेंण्ट्रल् न्यूक्लियस् चुट्टू चांद्रायणं
चेसे आरु एलक्ट्रान्लु—
सूर्य-तेजो-राशि चुट्टू शनि, गुरुवू मरोकडु मरोकडु
वाळ्ळू वेंण्ट भूमि तल्लि प्रदक्षिणं चेसिनट्लु ।

मरि आनाटि पात गंटं कंटिलो—
राक्षसी-विकटाट्टहासं,
रंभोवंशी नाक-वासं,
राजुल पादाल क्रिंदुगा परचिन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मस्तिष्क में लेबोरेटरी

-दाशरथी

मोहंजोदारो के खँडहरों की गहराई में
सदियों की माटी की परतों के नीचे
जल कर कोयल बनी प्राचीन सभ्यता के गर्भ में
डूबते सूरज की लीक में एक राह;
और एक राह
मस्तिक मध्य अपने घर में ।
अपने घर के पीछे
ताज की सुंदरता में दमकती शाहजहाँ की ख्याति ।
अ, इ, उन्, ऋन्, ऋलुक से बनी वैयाकरणि की समाधि;
जनता से निर्निमित्त किसी दुष्ट नृपति के
खुदवाए राशि-राशि शिला-लेख ।
और हमारे घर के सामने लेबोरेटरी ।
दस पैसे की पेन्सिल की नोक में
विश्व के प्रधान तत्व कार्वन के अणु ।
उस में केंद्र-भूत न्यूक्लियस के चारों ओर
परिभ्रमित छः छः एलक्ट्रान ।
जैसे सूर्य के तेजःपुंज के चारों ओर शनि, गुरु आदि,
और उन के पीछे पृथ्वी की प्रदक्षिणा !

एक बार प्राचीन लेखिनी की आँखों से देखो—
राक्षसों का विकट अट्टहास
रंभा-ऊर्वशी का भूतल-वास

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रैतुल रतनाल ब्रतुकुल तिवाचीलु
पात कालं पसिडि रंगुल बरुवु लोंचिन
पट्नवासपु म्यूजियं लो
पसंदैन कुंचिय मेत्तदनं वोत्तुकुन्न चित्तरुवुलु ।
शिला-विग्रहाल सीत्कारं
अलंकाराल बलात्कारं।
मरि ना मनस्सु लोपलि चित्रशाल लो
चित्रिंच रानि, शिल्पं कूर्च लेनि वेदन ।

चितिकिन आटं वंटि ब्रतुकु लो प्रणयं कदाचित् !
शिशिरं लो ग़ुड्डलूडिन,
रहस्यालु लेनि देय्याल आड पिल्लल वंटि
पेद्द पेद्द मोदुगु वृक्षालकु
निप्पु बट्ट कट्टिंचिन रीतिनि—
ना वेदन लो जन्मिंचिन ऊहिंपुलु
तोडगडानिकि व्याकरण-सूत्रपु रेडी-मेड् दुस्तुलु लेक
दिस मोलल्तो उरुकुतुन्नायि लोकान पडि;
दंडिंचना ? रंडि रंडनि पिलिचि ना कवित्वपु
पंड्रुटेरुपु चेला लंदिचना !

कटिक राति गोडल तो कट्टिन कारागेहं लो
गतकालपु शासनाल कट्टुबडिन खैदी वले
भयं भयंगा, अवुन्सु अवुन्सुगा
गालि पील्चुकुंटावें भायी !
ऊपिरि तित्तुलिन कोलिमि तित्तुलुगा
नोक्कि नोक्कि मंडिचन्नोय् मानवता-ज्वालावळि ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राजे-महाराजे के पाँवों तले बिछी
अकिंचन किसानों के प्राणों की कालीन ।
पुराचीन युग के सोने का बोझा ढोते
अर्वाचीन नागरिक म्यूजियम में
अज्ञात चितेरों के जीवन के रंगों से बने चित्र ।
शिला-मूर्तियों का चीत्कार
अलंकारों का बलात्कार
और मेरे अंतर की विचित्र चित्र-शाला में
रंगों की पहुँच से परे
शिल्प की कल्पना से अस्पृश्य अदृश्य एक वेदना ।

फूटे 'आटम' से जीवन में प्रणय भी कभी कभी–
शिशिर-वश दिगंबर
अगोपित प्रेत-बालिकाओं से,
बडे बडे पलाश ज्यों ज्वाला-चेल पहनते हैं
त्यों ही मेरी वेदना से प्रसवित कल्पनाएँ
व्याकरण-नियमों के 'रेडी-मेड' कपडों के लिए न ठहर कर
नंगी दौडती हैं त्रिभुवन में ।
दंड दूँ ?
या उनको सादर बुला कर अपनी कविता के
अरुणारुण चीनांशुक पहनाऊँ ?

कठोर शिला-गठित कारा में
विस्मृत-अतीत-शासन-शृंखला से बँधे बंदी से
भय से काँप काँप, माप माप श्वास लेते हो क्यों, भाई !
फेफडों को लुहार की खाल बनाओ कि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कदल्लेनि वृक्षं वले
कालं अक्कडक्कडे पेरग्गलदा ?
डोक्ककु बागा आकलि रुचि दोरकनी—
चलि वीणलु नराल लो चोरबडि
चक्कनि पाट नोकटि बायिचनी—
प्रश्नलु गोलुसुलु गोलुसुलुगा बंधिपनी मेधनु—
दूकि-दूकि ई जलपातं
प्राकिचनी पैकि–पैकि विद्युद्वल्लीमतल्लिकलनु—
सन्ननि इसुक कणं परीक्षिचि
जगज्जातकं व्रायनी शास्त्रज्ञुलनु—
ए डिग्रीकि वेडि जारिते
ई विश्व महा-गोळं मृत्यु-जलधि अंतस्सुन
तन्नुकुलाडि नशिस्तुंदो—
परिशोधिंचु ई लेबोरटरी लो ।

अजंता लो
शिला-सुंदरिकि लेनि क्षुद्बाधा संचलनं
पल्ले-पडुचु कुन्नादनि गर्मानिचुको भायी !

मस्केट्ल नुंडि रैफिळ्ळ दाका नडचिन देशं
कोडवळ्ळ नुंडि कोत यंत्रं दाका साग लेदु ।

चल्लनि पालु त्रागे पिल्लुल वंटि
रसिक-शिखा-मणुल नालकलु
वेडि वेडि कवित्वं चुरुकुदनं सहिंचे दाका रा लेदु ।
इंका अक्कडक्कड एत्तैन गरडीगोड नीडलु
चिन्नि चिन्नि गुडिसेलिन पेरगनीयडं लेदु;

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मानवता की ज्वाला धधक धधक उठे ।

प्रगति-हीन पादप सा
समय जहाँ का तहाँ बढ़ नहीं सकता ।
अविरत नयागरा जल-प्रपात सदृश
उछल-कूद मचा कर उसको दौडना ही होगा ।
लहर लहर कर घहर घहर कर समय को दौडने दो ।
जीवन में जटिल संकटों की गाँठें पडने दो ।
जलते पेट को क्षुधा का स्वाद जानने दो ।
शीत की तंत्री को नस-नस में घुस कर
भीषण रागिनी बजाने दो ।
सवालों की साँकलों से मेधा को जकडने दो ।
और और दौडे दौडे यह जल-प्रपात
ऊँचे ऊँचे पहुँच ज्योतित हो तटिल्लता-संघात ।
सिकता के लघु-कण पर जगत की जन्म-पत्री
लिख लें वैज्ञानिक-गण ।

किस डिग्री की कितनी गर्मी में
किस किस प्रकार की जीव-योनियाँ पैदा होतीं,
और किस डिग्री के जाडे में
विपुल विश्व-गोल प्रलय-जलनिधि के तल में
तलफ तलफ ठंडा हो जाता,
किस किस किले की छाया में, किन का खून पीकर
कौन कौन राजवंश कितने दिन तक पनपे,
किस किस की सत्ता किन छल-बल से
कितने दिन बनी रही

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इंका भयं तो तल वंचुकुनि
तन नीडनै तानु चूसुकुंटू
बरुवु बरुवुगा नडुस्तुन्नाडु ब्रानिसीडु ।
इन्नि शताब्दालु प्रयाणं चेसिना
इक्कडे उन्नां ई ऊरि पोलिमेर पक्कन !
डार्विन् बयालजी लो परिणामाल पट्टिक
पदि योजनालंत वुन्ना
मानवुडु मानवुडय्ये कालान्नि
निर्देशिंचगल प्रदेशं कान रादु !

गतं लोंचि कोन्त नेर्चुकोबोयि
गतानिकि ताकट्टु पडुतुन्नारु कवुलु ।
ई लेबोरटरी लो कूचुनि
लोकं निंडा विरिविगा शांति पंडे रीतिनि
कोत्तरकं वित्तनालिन कनिपेट्टे वीलुन्नदि ।
ई लेबोरटरी लो कूचुनि चलं पाळी कोस लोंचि
एन्त बलं गल कवित्वं सृष्टिंच वच्चो—
पेदवाडि स्वेदं लोंचि एन्तगा
देशानिकि जीवं प्रसादिंच वच्चो—
निराश तो एड्चे दरिद्रांगन कन्नीटि चुक्कलकु
एन्त दूरान नव्वु-पुव्वुलुन्नायो—
हृदयं लो ए पोर लो दय, ए तेर लो निर्दय
ए दिक्कुन त्यागं
ए दिक्कुन रागं दाक्कुनि सेल वैस्तायो—
कनिपेट्टे अवकाशं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शोध करें इस लेबोरटरी में !

लेकिन एक बात जान लो भाई !
गँवारू लडकी में एक खासियत है
जो अजंता की काल्पनिक शिल्प-सुन्दरी में नहीं–
और वह है उस की भूख !

तीर-कमान छोड राइफल तक पहुँच गया है देश;
मगर हल-हँसिया छोड ट्रैक्टर तक नहीं पहुँचा ।

चुपके दूध पीती बिल्लियों सी
रसिक-वरों की रसनाएँ
गरमा-गरम कविता की तेजी नहीं सह सकतीं ।
आज भी जहाँ तहाँ ऊँचे दीवारों की छाया
नन्हीं झोंपडियों को पनपने नहीं देती ।
आज भी डर से सर झुका कर
अपनी परछाईं देख आप ही चौंकता
बोझिल कदम उठा चल रहा गुलाम ।
इतने सदियों की यात्रा कर आज भी
कहाँ हैं हम ? अपने ही गाँव की सरहद पर ।
डार्विन-सिद्धांत का विकास हुआ, मगर
मानवता का विकास नजर नहीं आता ।

भूत से कुछ सीखने के बदले
भूत के हाथ बंधक हो रहे कवि-गण ।
इस लेबोरटरी में बैठ कर शांति से
नई नई चीजों का आविष्कार किया जा सकता है ।
सबल सफल कविता लिखने वाली

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रसादिंचिना निंदिगो !
पनि सागिंचुमु भायी !
ब्रतुकु नागजेमुडु कूड
पूलु पूयनीवय्या !
मेतुकुल लो प्रोटीनुलु
मिक्किलिगा रानीवय्या !

बक्क पडिन देहानिकि
पौंडु पाडु मांसानिकि
एन्त तिंडि कावालो
एन्त हायि कावालो
अवि अन्नी कलिंचे
अमृत-घटिक कोसरमै
निरीक्षिंचु मानवुनिकि
त्वरगा फल मंदिंचे मार्गान्नन्वेषिंचु !

मस्तिष्कं लो वेलिगे
मा यिंटिकि मुंदुंडिन
लेबोरटरी तेरचि वुंद—
मथन पडे मेधावुल शिथिलाशलु चिवुरिंचे
रस-राज्यं, लेबोरटरी !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लेखिनी का आविष्कार किया जा सकता है ।
गरीब की मेहनत के पसीने से
दुखिया स्त्री के आँसुओं से
मंद मुसकान के फूल खिलाये जा सकते हैं ।

अपना काम करो भाई वैज्ञानिक !
जीवन की नाग-फनी को
महकते लहलहे नए फूल फूलने दो ।
माटी को प्रोटीन बना दो ।
दूध, दही, घृत और अमृत के
सागर रचाओ ।
रूखी सूखी ठठरियों की ठूँठों पर
नई मांस-पेशियों की शाखाएँ उगाओ ।
हृदय की ऊषर धरा फूले-फले ।

हमारे घर के आगे
मस्तिष्क में लेबोरटरी रोशन है–
जहाँ शिथिल आशाओं को सँवारा जाता है–
पाहन से स्नेह पैरा जाता है,
मेधा का मथन कर
अमृत निकाला जाता है ।

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मेलुकोन्न मनिषिनि चूट्टानिकि वेळ्ळुतुन्नानु

—दाशरथी

चेट्लु नडिस्ते एन्त भयंकरमो
अट्ला चीकट्लु नडुस्तुन्न ई नाडु
अंता निद्र पोतुन्नारु नीडल्लो—
काल-राक्षसि अडुगु-जाडल्लो ।

एवडो अनंगा विन्न माट सुमा इदि—
'एक्कडो एव्वडो मेलुकोन्ना' डनि ।
विचित्रमे ई अर्ध-रात्रि मेल्कोडं;
अइना चूचि रावडं मंचिदि ।

नेनु मात्रं मेल्कोनि वुन्नानना !
वट्टिदि ! इदि कल लोनि प्रस्तावने
कल लो नैना मेल्कोन्न वाण्णि चूडटं
घन विषयं कादा ईनाटि लोकं लो !

शवं बतकडं एन्त विचित्रमो
मनं मेलुकोवडं अंत चित्रमे ।
एवडो कोत्तरकं मेटि वैद्युडु
एदो कोत्त तरहा औषधं वाडि वुंडालि ।

लेंदि इन्नाळ्ळ नल्ल-मंदु मत्तु
इंत त्वरगा विडि पोवडं सुलभमा !
एमैतें वेळ्ळि चूचि रावडं मंचिदि;
मेल्कोन्न मनिषिनि चूडानिकि वेळ्ळुतुन्नानु ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जाग्रत मानव को देखने जाता हूँ !

—दाशरथी

पेड़ों का चलना जितना भीकर है
अँधेरे का चलना भी उतना ही भीषण है,
लोग सब सो रहे हैं छाया में,
तिमिर-राक्षसी की माया में ।

इतने में एक अफवाह सी उडी—
हवा कह गई कि कोई जागता है ।
आधी रात, बडी अजीब बात, कौन जाग पाये ?
मैंने सोचा कि चलो, उसे देख आयें ।

यह नहीं कि मैं स्वयं जाग रहा हूँ
सपना है, सपना है, सपना देख रहा हूँ ।
सपने में भी जाग्रत मानव को—
देखना कुछ कम नहीं, क्योंकि आधी रात है ।

लाश का जी उठना जितना अजीब है
किसी का जागना भी उतना ही अजीब है ।
क्योंकि सारा लोक बेसुध सो रहा है ।
क्या यह अजीब नहीं कि कोई जी रहा है !

यह अफीम की पीनक सा अंधेरा
टूटने वाला नहीं जिसका घेरा ।
कुछ भी हो अनहोनी होनी हुई है शायद—
जाग्रत मानव को देखने जाता हूँ !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अचुंबितम्

–दाशरथी

माट्लाडनि मल्ले मोगग
मादिरिगा नडचि रा
निश्शब्दं एरुगनट्टि
निम्नग वले नडचि पो ।

चेदगु कन्नीटि बोट्लु
चिंदिन चप्पुडुलु विनु
वादिपग रानि मनसु
परिवादिनि लोतु कनु ।

मूगि पुस्तकाल लोनि
रागालनु पाडुको
गालि वोले कनुपिंचे
आलोचन वाडुको ।

कडुपु लोनि दुःखं वले
करुळ्ळेत्ति पडेडु कडलि,
पच्चनि लोकमुनु चेरुप
वच्चेडि शैशिर-पिशाचि ।

वेदुरु पोदल लो चोरबडि
रोदलिडु मलिसंदे गालि
गालि कंटे तेलिकगा
कदिलेडु कवि-मनसु जालि ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अचुंबित

–दाशरथी

मौन मल्लिका-कलिका
से चुपके खिल जाओ !
नीरवता से अजान
निर्झर बन बह जाओ ।

कड़ुए दृग-जल के उस
झरने का स्वर सुन लो
निस्तरंग नर के उर
की गहराई गुन लो ।

गूँगे ग्रंथ में छुपे
राग मनोहर गाओ ।
द्रुत समीर से विचार—
पर पसार उड जाओ !

दुर्भर ज्यों गर्भ-शोक,
रह रह रोता सागर
हरी दूब पर नर के
अश्रु बिखेरता शिशिर ।

गहन वेणु-वन में घुस
कलपता सदय समीर ।
उस से भी त्वरित चलित
कवि-उर करुणा-अधीर ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भीमुनि गद ला बरुवै
भीति गूर्चु ऋषि शापं
रामुनि बाणानि कंटे
प्रबल मैन जन-कोपं ।

आकु लेनि मोदुगु पै
काक लेत्तु पू-मंटलु,
एरुवु लेक, नीरु लेक
एगसि वच्चु एद-पंटलु ।

मनसुके कन रानि रूपु
माटकु विन रानि ध्वनि,
तल कंदनि कोव्वासन
बुद्धि कंदनट्टि येत्तु ।

आलोचन लंत लेत
वैन अंगुळुल कोसलु
स्पर्शिम्पग लेनंतटि
पलुचनि अर्थाल ओडलु ।

कोर्केलु चुंबिच लेनि
कोमलि आशल पेदवुलु
गगनमु मात्रमे दर्शिम्—
चगल विशाल मनस्सुलु ।

उगादि लो दीपावळि
कामुडि पुन्नमकु वान
भाद्रपद महांधकार
पथमुल-लो चिलुक पिलुपु;

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भीम-गदा से भी अति
भीषण-ऋषि-शाप-ज्वाल
राम-बाण से बढ़ कर
जनता की कोप-ज्वाल।

नंगा हो कर पलाश
धरता नव कुसुम-ज्वाल।
उर पतझर में झर-झर
धरता अभिनव प्रवाल।

हृदय-दृग-अदृश्य रूप
शब्द-श्रवण-दुर्लभ स्वर
घ्राण से अग्राह्य गंध
बुद्धि से अलंघ्य शिखर;

मृदुल भावनाँगुलियाँ
कर न सकें जिसे स्पर्श—
जिसका वपु-मात्र अर्थ
आत्मा-गत महादर्श।

आशा भी चुंबन कर
न सके वे मृदुल अधर
गगन भी न नाप सके
वह उदार नर का उर।

फाग बीच दीवाली,
पूनों में मेघ-राग;
भादों के तम-पथ में
बिछुडे शुक का विहाग।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रत्नाल्लो नाल्गु राळ्ळु
म्रोळ्ळु ऋतुकु-बाट लंदु,
अप्पुडप्पु डवि पूयुट
मरल अंत लो मायुट ।

तलल्गु वालिच युन्न जनं
गळा लेत्ति पाडुट,
कदरु लेनि एद नेमळ्ळु
कंड्लु विप्पि आडुट ।

मरि आकु पै विष्णवु
मादिरि शब्दमुन शवित,
समुद्रान पाल बोले
सरिगम लो संगीतं ।

मन कुन्न निघंटुवुलु
विननट्टिदि कननट्टिदि
नदि तरगल लो, भावुकु
मदि लोपलि वित पलुकु ।

मेट्लु लेनि मेड मीद
मेलि नीलि मुसुगु तीसि
नव्वे अंदाल तरुणि
नव शारद निशा-शशि ।

मुसलि भास्करुनि चूपुल
मसकल लो तप्पि पोयि
कनुपिंचनि कालांतं
कवि चूपुल कनुपिंचुट ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पत्थर में छिपे हीर
जोवन-पथ की ठूँठें
तरु-उर में छिपे फूल
जो हँस हँस कर रूठें।

एक में अनेक लोक
की प्रसुप्त वर वाणी;
नाचे सहसा मयूर
बन वन-मन की रानी।

वट के पत्ते पर हरि,
शब्द-निहित महित-शक्ति
सागर के उर में ज्यों
मुक्ता-गर्भिणी शुक्ति।

जिसे जन्म दे न सकें
चिर परिचित शब्द-कोष
वह भावुक के मन की
झंपा-द्युति आशु-तोष।

बदली की घूँघट में
छुपा हुआ ज्यों हिमकर
तम के संकट-पथ में
भी आशा अजर अमर।

बूढे रवि की धुंधली
आँखों से छुपा सत्य;
कवि के नयनों में बस,
विश्व हो गया अमर्त्य,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अर्थं मगुने सगं सगं ?
अचुंबितं मनो-जगं
अंदु कोरके कलं मुक्कु
नंदु संदु चेसुको ।

पवळिंचुमु नी लो नौ
वेवरिनि मेल्कोल्प बोकु,
विच्चिन एद-कंटि चूपु
विशालमै कम्मनी !

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आधा ही हृदयंगम
रहा अचुंबित प्रिय-तम
सत्य, उठा कलम बढो !
दुर्गम गढ जीत चढो !

अपने में हो विलीन
भावों का धर खलीन
देखोगे, तेरे दर
आएगा विश्व दीन ।

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मानव-गीतम्

–सि० नारायण रेड्डी

निन्नु गूर्चि पाडुकोन्दु,
नन्नु गूर्चि पाडुकोन्दु ।
निन्नु, नन्नु गन्न तल्लि
नेल गूर्चि पाडुकोन्दु ।

नेल पैन मेरसिन
कन्नीटि चुक्क लेरुकोंदु ।
धूलि लोन विरिसिन हृद--
याल गाथ लेरुकोन्दु ।

चेमटनु तडिसिन मट्टिनि
श्रीगंधमुगा धरिन्तु ।
ऊर्पुल नोदिगिन स्वरमुनु
ओंकारमुगा स्मरिंतु ।

अडुसु गुडिसे लोन कोत्त
येडदनु निर्मिंचुकोन्दु ।
पसिडि मेड लो जीवित
पाठम्मुलु दिद्दुकोंदु ।

कुत्तुकलो विषमु दिंचि
मेत्तनि नव्वुलनु पंचि
शिव-मुद्रनु दाल्चिन मनि–
षिनि कन्नुल कद्दुकोन्दु ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मानव-गीत

—सि० नारायण रेड्डी

तेरा यह गीत, मीत !
मेरा यह गीत, मीत !
तेरी मेरी मैया
धरती का गीत मीत !

भू पर चमकते नयन—
जल की बूंदें चुनता।
धूल भरे नर के उर
के अफसाने बुनता।

स्वेद सनी माटी को
चंदन सा उर धरता।
निश्वास-निहित स्वर को
ओंकार समझ स्मरता।

माटी की कुटिया में
नव हृदयाशय रचता।
स्वर्ण-सौध से जीवन--
पाठ सीखता, पचता।

कंठ-मध्य गरल धार
बाँट रहा स्मिति अमृत।
शिव के प्रति-रूप मनुज
के आगे मैं प्रणमित।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सुरल कन्न करुणात्मुडु
नरुडु गाक इंकेव्वडु ?
मंदिर मेरुगनि देवुडु
मनिषि गाक इंकेव्वडु ?

अणुवुलु पगिलिंचुवाडु
आत्मलु रगिलिंचुवाडु
मानवुडा, काडु; रंगु
मार्चुं कोन्न दानवुंडु ।

शतपत्रमु वले विच्चिन
जगति नोक्क चिटिक लोन
मसि चेयग नेत्र्चेडु —
राक्षस-वृत्तिनि प्रतिघटिंतु ।

मंचि मनसु केदुरोड्डिन
वंचन तल वंचुनु ले,
शिशुवुल चिरुनव्वु मुंदु
पशुवु कोम्मु वंचुनु ले ।

त्रृप्पु पट्ट लेदा —
कत्तुलु ओर लो दागि-दागि ?
बूजु पट्टि पोवा बांबुलु
अर लो मागि-मागि ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सुर से वर करुणामय
मानव के सिवा कौन ?
मंदिर-रहित देवता
मानव के सिवा कौन ?

जिसने अणु को फोड़ा
जग को किया अखाड़ा
नहीं नहीं वह मानव
छद्म-वेष में दानव।

शतदल से खिले जगत
को पल में क्षार-क्षार
करने के दैत्य-यत्न
का विरोध दुर्निवार।

देख भले को सम्मुख
बुरा झुका लेता सिर
शिशु की मुस्कान देख
पशु-विषाण जाते फिर

जंग लगेगा म्यानों
में खड्गों पर यारो !
लगेगी फफूंदी उन
छुपे बमों पर यारो !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

చెయి-చెయి కలిపిన విక--
సించును వెచ్చని స్నేహము ।
ముడుచు కున్న గుండె లో—
గుబుల్కొను నెత్తుటి దాహము ।

పరిమళాల నేవ డాపును ?
పైర-గాలి నేవ డాపును ?
ఎవడాపును మానవతా
రవి-రుక్కులు, కవి-వాక్కులు ?

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हाथ हाथ मिला, खिले
फिर नर में नरम स्नेह।
सिकुड़े उर में दौड़े
उष्ण-रुधिर का प्रवाह।

कौन गंध को रोके,
गंध-वाह को टोके
मनुज-रवि-ऋचा, कवि का
वचन भला क्यों चूके ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कालम् पिलुस्तुन्नदि

–सि॰ नारायण रेड्डी

कालं केलेत्ति पिलुस्तुन्नदि ।
कंकाळं लेचि नडुस्तुन्नदि ।
पोगचूरिन ब्रतुकुल तो पोगिलिन नर जाति धरा--
गगनालकु वंतेन कडुतुन्नदि ।

समरालकु समाधि अवुतुन्नदि ।
शांतिकि परिणयं जरुगुतुन्नदि ।
विष-दंष्ट्रा विमुक्तमै विश्वंभर कार्तीकपु
वेन्नेल्लो जलक माडुतुन्नदि ।

वेनक चूपु प्रक्क मुडुचु कुन्नदि ।
मुंदु चूपु रेक्क विप्पु तुन्नदि ।
चिविकिन ताटाकु पुटल चेरिपि वेसि चरित्र –
बंगरु चिगुराकुलनु तोडुक्कुन्नदि ।

श्रम-शक्तिकि विलुव पेरुगु तुन्नदि ।
जन हृदयं बलं पुंजुकुन्नदि ।
गिरिजनुडे पुरजनुडै धरा-चक्रमुनु त्रिप्पे
तरुणारुण कालं वस्तुन्नदि ।

पोलिमेरलु तुडुचुक पोतुन्नवि
सरिहद्दुलु मुडुचुक पोतुन्नवि
गालि वोले, परिमळाल जालु वोले, भिन्न-दिशा
पाळिकि कोंड्गुलु मुडिवडुतुन्नवि ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

समय पुकारता

-सि० नारायण रेड्डी

समय हाथ उठा कर पुकारता
नृकंकाल आगे पग धारता;
धुँधुआते जीवन से नर अंबर-
धरा मध्य सेतु सा सँवारता।

समर की समाधि उधर बन रही
शांति की सभा इधर सँवर रही;
तिमिर-गरल-मुक्त धरा पूनों की-
चंद्र-कला में नहा निखर रही।

जड अतीत सिकुड कहीं पड रहा
नव भविष्य पर पसार उड रहा;
सडे-गले ताल-पत्र जला कर-
इतिहास प्रवाल-लेख गढ रहा।

दिन दिन श्रम की कीमत बढ रही
नए नए गढ जनता चढ रही;
हरिजन, गिरिजन भी वर पुरजन हों-
नव-युग की प्रगति उधर मुड रही।

राष्ट्रों की सीमाएँ मिट रहीं
हाथों की शृंखलाएँ कट रहीं;
मारुत में परिमल की लहरों सी-
गाँठ भिन्न दिशाओं की जुट रही।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मलुपु

-सि० नारायण रेड्डी

गुंजिली-प्रति लांटि गुंडेनु कापाडुकुंटू
मजिली चेयालने कोर्केल मधु-वूरिंचुकुंटू
पाटि दिब्ब मीद नडुस्तू, पच्चल तिवासि अनुकुंटू
कालि-बाट चेबुतुन्न पूल गाथलिनि विनुकुंटू
मलुपु तिरुगुतुन्नाडु मानवुडु ।

ओलिंकि पोयिन गतं गूर्चि ऊर्पुलु विडिचे वाळ्ळनु
करिगि पोतुन्न वर्तमानानिकि गाभरा पडे वाळ्ळनु
भवितव्यपु वेल्तुर्नि चूसि गवाक्षालु मूसे वाळ्ळनु
दुलपरिस्तू पोतुन्नाडु मानवुडु ।
मलुपु तिरुगुतुन्नाडु मानवुडु ।

स्वप्नं लो सगं तागिन सहारा सौंदर्यालिनि
शैशवं लो बुग्गलिनि ताकिन चंचल दृश्यालिनि
मिगलकुंडा तागेस्तू, सोगसुगा नेमरु वेस्तू
मत्तुगा नडुस्तुन्नाडु मानवुडु;
मलुपु तिरुगुतुन्नाडु मानवुडु ।

मोडु नुदुट चिगिरिस्तुन्न मुत्याल रेखलिनि चूस्तू
मरुभूमुलु लिखिस्तुन्न मरकत रेखलिनि चूस्तू
पोग-पागा चुट्टुकुन्न नग-शिरस्सुलिनि चूस्तू
पाथेयं सरि चूसूकुंटू, पाथोधि दाटेसुकुंटु
मारुतं ला पयनिस्तुन्नाडु मानवुडु ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मोड

—सि० नारायण रेड्डी

दुर्लभ प्राचीन-प्रति से हृदय की रक्षा करता हुआ
मंजिल पर पहुँचने के स्वप्न देखता हुआ
टीलों पर चढता, उन्हें मरकत की कालीन समझता
पगडंडी की कही फूलों की कहानी सुनता
मोड पर पहुँच मुड रहा मानव ।

ढुलके अतीत के बारे में निश्वास छोडने वालों को
पिघलते वर्तमान को देख घबराने वालों को
भावी प्रकाश को देख खिडकियाँ बंद करने वालों को
धता बता आगे बढ़ रहा मानव ।
मोड पर पहुँच मुड रहा मानव ।

सपनों में पी हुई सहारा की शोभा को
शैशव के कोमल कपोलों पर पाटल की अरुण आभा को
हृदय में घूँट घूँट पीता, मन ही मन जुगाली भरता
आगे आगे बढ़ रहा मानव ।
मोड पर पहुँच मुड रहा मानव ।

ठूँठ के माथे पर पल्लवित प्रवालों की रेखा देखता
मरु-स्थल में विरचित मरकत-मालाएँ देखता
हिम का उष्णीस धरे शीत-शैल की ओर ताकता
पाथेय की उपेक्षा कर पाथो-राशि लांघता
पवमान की भाँति क्षिप्र प्रस्थान कर रहा मानव ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रेखा-चित्रालु

–सि० नारायण रेड्डी

वित्तनं लो ओत्तिगिलि वुन्न मोक्क लागा
गुंडेलो रेक्क विप्पनि कोदमकोरिक ।
अलसिपोनि कंटि रेप्पकु अंचुल मीद
निलुव लेक जारि पडुतून्न निद्रा-बालिक ।

हेमंत शर्वरि उषस्सु किच्चिन कान्क
पच्चनि गरिक मेड लो पच्चि मुत्याल-सरं
मूल कुंपट्लो पडि वुन्न मुसलि निप्पु
मूलुगुतुंदि; नूटारु डिग्रील ज्वरं ।

मकिलि मनस्सुनु तोलिचि वेसे गंगा-नदि
काटुक कललनु कडिगि वेसे यमुना-नदि
कन्नीरु धरिंचिन भिन्न रूपा लिवि ।
मनिषिनि वरिंचिन मधुर शापा लिवि ।

कालं चेक्किलि मीद कावि रंगु पुट्टु-मच्च
तेलवारुतुन्न मृत्युवुनु तेलिपे वेगु-चुक्क
जीवित संधि-पत्रं मीद आवुलिस्तुन्न रेखलु
चरम संध्या पर्वं लो जन्मि किंदि रातलु ।

——

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रेखा-चित्र

-सि० नारायण रेड्डी

बीज में सोए हुए पोधे सी
हृदय में पंख मूँदे कामना प्यारी
अथक पलकों के किनारे पर
ढुल-मुल ढुलकती नींद की कुमारी ।

ऊषा को हेमंत-शर्वरी की भेंट
हरी-भरी दूब के गले में झिलमिल मुक्ता-हार ।
अँगीठी में ऊँघती बूढी आग की कराह,
एक सौ छः डिग्री का बुखार ।

मन का मैल धो जाती गंगा
कजरारी आँखों को धो जाती जमुना
आँसुओं की एक ही धारा के अनेक रूप
मानव को वरे हुए मधुर शाप ।

काल के कपोल पर लाल एक तिल खिला
मौत को पौ फटते समय प्रात का तारा भला;
जीवन-संधि-पत्र पर वे काली रेखाएँ
चरम-संध्या-पर्व में शमी-तरु की लेखाएँ ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अक्षराल गवाक्षालु

–सि० नारायण रेड्डी

अक्षराल गवाक्षाल नुंचि अवलोकि स्तुन्नानु गगनान्नि
सगं चच्चिन ऊहा-जीवुलकु चमत्कार भिक्ष पेट्टु वाण्णि ।
अविगो आकाशं पंदिरिकि व्रेलाडुतुन्न द्राक्ष-पळ्ळु ।
अहो ! आषाढ़-योष आरविडिचिन अलकल चिवळ्ळु ।
षेल्ला माटल्लो अंटे सूर्युनि की समुद्रानि की पुट्टिन बिड्डलु ।
मळ्ळी कोत्तगा अनुकुंटे गगनाब्धि लो तेले नल्लनि मंचु गड्डलु ।
वाटिल्लो कोरचेपल्ला दूसुकु पोये वेमिटो चेप्पना ?
वाटि कूकट्लु कोलिचि कूर्चिन उत्प्रेक्ष लेमिटो विप्पना ?
कोट्टिन पिंडिगा चेबिते मदकल मदिराक्षुल मेयि-विरुपुलु ।
कोत्त्चें चेदुगा चित्रिस्ते वानिसन दीपुलिन चिट्टिलचे कोरडा चरुपुलु ।
अक्कडक्कडा ग्रुड्लु मिटकरिस्तू कूर्चुन्न नेच्चेलुलु
वस्तुन्ना ! मीकोसमे कदू वेस्तुन्ना निच्चेनलु ।
पंच-शील सूत्रालनु अक्षराला पाटिस्तुन्न वाळ्ळु मीरु ।
प्रसंगालु दिगुमति चेयरु सरि कदा; परस्परं डीकोरु ।
नूनेनु बट्टि वत्तिनि पेनुकुन्न परम साधुवुलु मीरु ।
ओके रात्रि निड्गा व्रतिकि मर्नाडु कल्लिन कोलुपोरु ।
अटु आफ़ीसर्लू कारु, इटु कारु चप्रासीलु ।
अनिशं मिणुकु-मिणुकु मने अखिल जगत् 'एन्. जी. ओ.' लु ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अक्षर-गवाक्ष

–सि० नारायण रड्डी

अक्षर-गवाक्ष खोल अवलोकन कर रहा अंबर का
अर्ध-मृत भाव जीवियों को चमत्कृति-भिक्षा दाता अंबर का
देखो, वे गगन के वितान तले झूलते अंगूर
आषाढ-योषा की लहराती अलकों के छोर
शेल्ली के शब्दों में सूर्य और सागर की संतान
नया कहूँ तो गगन-जलधि में तिरती काली बरफ की चट्टान,
और उन में श्रेष्ठ शफरी सी क्या तलफ रही बताऊँ क्या ?
उस के नख-शिख-वर्णन की उत्प्रेक्षाएँ जताऊँ क्या ?
चर्वित-चर्वण यदि करूँ तो मदिर मदवतियों की अँगडाई;
और कटु चित्रण करूं तो गुलामों की पीठों पर कोडों की मार भाई !
जहाँ तहाँ आँखें फाड फाड ताकते मेरे यारो !
आ रहा हूँ; तुम्हारे लिये ही सीढ़ियाँ लगाई हैं प्यारो !
पंचशील के सूत्र अक्षरशः आचरण में लाते तुम
व्यर्थ प्रलाप नहीं करते; आपस में घुल-मिल जाते तुम।
'यथा-स्नेह तथा वर्त्तिका' को चरितार्थ करने वाले साधु मीत !
समरस रहते हो; आज पूनों, कल अमास; यह नहीं तुम्हारी रीत।
न तुम अफसर हो, न चपरासी हो
हाँ भई, हमेशा झिलमिलाते तुम, दिव के एन. जी. ओ. हो।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वेलुगु–नीडलु

–नंडूरि सुब्बाराव

कोटि गोंतुलु कलिसि
पाट पाडे तीरु
वेलुगु-नीडल नडुम
निलचि आलितु ।

एटि मिलमिल लोन
तोट नवनव लोन
वेलुगु-नीडल पोत्तु
तेलिसि पालितु ।

'एंकेव्व'रनि लोक
मेपुडैन कदिपिते
वेलुगु-नीडल वैपु
वेलु सूपिंतु ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धूप-छाँह

–नंडूरि सुब्बाराव

(श्री नंडूरि सुब्बाराव तेलुगू के विख्यात आधुनिक कवि हैं। इन्हों ने गँवारू भाषा में जो प्रेम-गीत लिखे हैं, वे अद्वितीय हैं। उन में 'एंकी' नाम की एक काल्पनिक ग्रामीण लडकी नाइका है। इन के सादे गीतों में गंभीर दार्शनिक भाव छुपा रहता है और उच्च-कोटि की रमणीयता द्योतित होती है।)

कोटि कोटि कंठ जहाँ
गीत गा रहे वहाँ;
धूप-छाँह बीच खडा
मैं सुख से सुन रहा।

जहाँ नदी झिलमिल कर
फूल लह-लहे खिल कर
रचें धूप-छाँह वहाँ
मैं मन में गुन रहा।

पूछ रहे लोग–कौन
है एंकी ?' और मौन,
मैं उँगली दिखा रहा
धूप-छाँह सी जहाँ !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नन्निडिसि पेट्टेल्लिनाडे

- नंडूरि सुब्बाराव

नन्निडिसि पेट्टेल्लिनाडे ना राजु,
मोन्न तिरिगोस्त नन्नाडे—

नीळ्ळु तेबोतुंटे नी तोडे ओलम्मि–
ना एंट एवरोनु नडिसिन ट्टुंटादे !
नन्निडिसि पेट्टेल्लिनाडे ना राजु–

अद्दम् लो सूत्तूंटे अदि एटो सिग्गम्मि—
ना एनक एवरोनु नव्विनट्टुंटादे !
नन्निडिसि पेट्टेल्लिनाडे ना राजु—

सल्लनी एन्नेट्लो सापेसि कूकुंटे–
ओट्टम्मि ओल्लंत उलिकुलिकि पडतादे !
नन्निडिसि पेट्टेल्लिनाडे ना राजु–

नीतेन वोडे, ना रातेट्ट गुंटादो–
कल्लल्लो सत्तेमुग कट्टिन ट्टुंटाडे !
नन्निडिसि पेट्टेल्लिनाडे ना राजु—
मोन्न तिरिगोस्त नन्नाडे ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुझे छोड़ गया कहीं मेरा सनम !

-नंडूरि सुब्बाराव

मुझे छोड गया कहीं मेरा सनम–
लौटा नहीं तेरी कसम !

पनघट को जाती हूँ तेरी कसम री मैया–
लगता जैसे कोई मेरे पीछे चलता !
मुझे छोड गया कहीं मेरा सनम !

दर्पन देखती हूँ कि बडी शरम री दैया–
लगता, जैसे कोई पीछे छिप कर हँसता !
मुझे छोड गया कहीं मेरा सनम !

शीतल चाँदनी रात में जो बैठी मैया–
जाने क्यों, मेरा तन सिहर सिहर सा उठता !
मुझे छोड गया कहीं मेरा सनम !

बडा भला था वह, सब मेरे भाग री दैया–
इन आँखों में बस कर, मुझको पल पल छलता !
मुझे छोड गया कहीं मेरा सनम !
लौटा नहीं तेरी कसम !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्वर्गानिकि–नरकानिकि

–पुरिपंडा अप्पलस्वामी

लोकं कालं नापै
रावंदुल दंपतुलै
ना शवान्नि
ब्रतिकुंडिन ना शवान्नि
चील्चि पंचुकोंटुंटे
पंचुकु भक्षिस्तुंटे–

नेनु–
नी गुंडेल विकसिंचिन
गुलाबील तेलिवसनं
ना वोडलि नलंकरिंचि
नी केम्पुल स्वप्नं ना
जनि-वीथिनि वेलिगिस्ते
शत सहस्र वधुवुलु
राकन्नेलु ना वेण्ट राग
वेडलिनानु विनु-वीथिकि।
पुनर्वसुवु नक्षत्रं
पल्लकिगा अधिवसिंचि
शत सहस्र शत सहस्र
सहस्र शत वधुवुल तो
राराजै अधिवसिंचि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्वर्ग और नरक

–पुरिपंडा अप्पलस्वामी

देश और काल दोनों
गिद्ध-दंपति बन कर
मेरी लाश को
मेरी जिंदा लाश को
चीर-चीर काट-काट
नोच-नोच खाने लगे–

और मैं
तेरे उर में खिलते
गुलाबों के चीनांबर
से अपनी देह सजा
तेरे सपनों की मणि-
मय द्युति से अपना पथ ज्योतित कर,
सौ हजार कुँवारी
राज-कुमारियों के
साथ चला उड़-पथ में।
पुनर्वसु तारा की
पालकी में समासीन,
सौ हजार कुँवारी
सुंदरी अप्सराओं के साथ
देवराज सा विराज

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किंदिकि परिवीक्षिरते
वृद्ध जगति ना वियोग-
वेदन सर्यिरिप लेक
कुमिलि कुमिलि
मूल्गुतोंदि, ईल्गुतोंदि ।

ना शवान्नि
ब्रतिके वुन्न ना शवान्नि
ताकबोने, तट्टबोते।
ना शवमे नोरु विप्पि
कालान्नी लोकान्नी
राबंदुल दंपतुलनी
परपर परपर परपर
नमिलि, नमिलि,
नमिलि
मिंगि
तेन्चंदि ।

लज्ज लांटि चीकट्ले
नल्लग-नल्लग नल्लनि
मुसुगेनवि भूदेविकि
भूदेवत कुचं मीद
ना शवं
ब्रतिके उन्न ना शवं
वेलुगुतोंदि
मेरुपु लाग

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नीचे जो देखा तो
वृद्ध विश्व यह मेरे
बिछुडने से बिलख-बिलख,
कलप-कलप, तलफ-तलफ
आह भर कराह रहा था !

और मेरी लाश
मेरी जिंदा लाश
जीती जागती लाश
छूते ही, परसते ही
उठ बैठी । मुँह बाकर
काल को, देश को
क्रूर गिद्ध-दंपति को
खटखट चटचट झटपट
चबा चबा निगल गई
डकार लेने लगी ।
और लाज सा अँधेरा
काली काली घूँघट
बना देवि पृथिवी का ।
देवी भू के स्तन पर
मेरी लाश,
मेरी जिंदा लाश
दीप रही,
फड़े सी
बिजली सी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कुरुपु लाग
वेलुगुतोंदि

आ वेलुगुनु चूडलेक
भयपडृतू
दिक्कांधालु चस्तुन्नवि
प्रतारकुलु धनाधिकुलु
प्रभुवुलु नरहंतकलू
नायकुलू दगादार्लु
शवं वेलुगु सॅपलेक
सॅपलेक चूडलेक
भय-पडृतू परिगेडुतू
नग्नंगा
हेयंगा
नीचंगा
चस्तुन्नारु
कुक्कल्ला चस्तुन्नारु
भूदेवत कुत्तं मीद
कुचं मीद, कुचं मीद
नाशवान्नि दिग विडिचि
चावु लेनि
चाव लेनि
चाव बोनि
ना शवान्नि दिगविडिचि
ना वधू सहस्रं तो

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दीप रही।

दुर्निरीक्ष्य दीप्ति-जाल
से भयार्त हो उलूक
उड़ रहे, गिर रहे, झर रहे।
धनिक लोग, वणिक लोग
हत्यारे, बट-पारे
नेता-गण, वंचक-जन
लाश का महा-प्रकाश
सह न सके, सह न सके,
सह न सके।
चीख चीख चिल्ला कर
भय से भाग गये।
अध-नंग
बेढंगे
बदरंगे
बिना मौत,
कुत्तों से बुरी मौत मर गये।

और देवी पृथिवी के स्तन पर
स्तन पर, कंचन-तन पर
अपनी लाश छोड़ कर
मृत्यु मयी
मृत्यु-क्षयी
मृत्यु-जयी
अपनी लाश छोड़ कर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भगवंतुडनै लेस्तानु।

नी कन्नुल नीलि नीड
नी पाटल पसिडि-व्राट
नी कलल वसंतवनं लोकि
ना पल्लकि नडिपिस्तानु
ना कन्नुलु कोरवि चेसि
दिविटीलुग वेलिगिस्तानु।
वेळता नेक्कडिकंटे
अवकडिके
स्वर्गानिकि-
नरकानिकि।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निज सहस्र वधूओं के
साथ भगवान बन में
उठ खडा होऊँगा ।
तेरी आँखों की नीलमी छाँह
तेरे गायन की सुनहरी राह
तेरे सपनों के मधु-वन में
पालकी पर चढ कर आऊँगा ।
अपनी आँखों की उल्का से
जगत में आग लगा दूँगा ।
जाऊँगा जहाँ भी जाना हो !
स्वर्ग
या
नरक !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चीकटि

—पालगुम्मि पद्मराजू

चीकटि ओक महोद्यमं ला प्रारंभिंदि !
पगलु पोनि, रेयि रानि संध्या-संदिग्ध मंद
अनंत कोटि प्राणुल परिमर स्पर्श तगिलि
कुंचितमयि पोयिन अंतरांतरं
रूप परिमिति नशिंचिन अखंड स्थलावकाशं लो
स्वेच्छगा अणुवणुवू विडि व्यापिंचिंदि—
अनेक नक्षत्रालयि ।

कालं करिगि करिगि
बिंदुवै अणुवैनदि—
कणमं तरिगि तरिगि
ना चूपुल तळुकैनदि ।

वस्तुस्वरूपालनु बंधिंचे
रेखलु आ चीकटि लो अस्पष्टमयि
मार्ममय, बहिरंतरालनु संधिंचे
केंद्राग्नि दृष्टि लो निलिपनायि ।
तरुवु-तरुवु लोनि जीवनाळं
कलिसिन पुडमि लोनि प्रवाळं
आ गुप्त बिंदुवे —
जीवि-जीवि ज्ञप्तिकी वेनक उन्न भावं
रूपोंदिन एकंकारावं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अंधकार

—पालगुम्मि पद्मराजू

अंधकार एक प्रबल आंदोलन की तरह फैल गया ।
न दिन न रैन उस दुविधा भरी द्वयाभा में
अनंत कोटि प्राणियों का सन्निहित स्पर्श पाकर
कुंचित हुआ था जो अंतरांतर
रूप-परिधि नष्ट कर वह, अखंड देश के अवकाश में
स्वतंत्र प्रत्येक परमाणु बन बिखर गया, पसर गया,
लक्ष लक्ष नक्षत्रों का रूप धर ।

काल ही पिघल पिघल
बिंदु बना, कण बना,
अणु बन कर. घिस घिस कर
मेरी आँखों की चमक बना ।

वस्तु के स्वरूप को बाँधने वाली रेखाएँ
उस अँधेरे में अस्पष्ट हो विलुप्त हो गईं ।
बहिरंतर-संगम-केंद्र दृष्टि-गोचर हो गया ।
तरु-तरु के जीवन-नाल
से संलग्न पृथ्वी-हृदय का प्रवाल
वही गुप्त-बिंदु ।
हर एक प्राणी की स्मृति की ओट छुपा भाव
दूरागत एकैक मंद्र-राव
वही सुप्ति-निहित बंध ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आ सुप्त बंधमे
व्रायनि पद्यमयिंदि
ना जागृति लो ।
नेनपुडु विश्वमंता नेनयि
ऊहगा ऊपिरिगा व्यापिंचानु,
सर्वरूप ज्ञानालू नालो इमिडायि
स्फटिक-स्वच्छ मयिन ओक कणं लो ।
नेनपुडु गोळ गोळाल परिभ्रमणं
निर्देशिंचिन एकैक धर्मान्नि;
जनन-मरणाल कौशलितनि ।

आ क्षणं लो सृष्टि लोनि अनंत कोटि अवकाशाल्
प्रति वस्तु-तत्वं लोनि वेरु वेरु सत्याल समत्वं
प्रति गुंडे कदलिकनू अनुसंधिंचु एकैक स्पंदन
ओके ओक सत्यंगा प्रतिफलिंचायि ।

नेनपुडु नेनुगानु
नेनपुडु करिगि मिगिलिन कणमे;
इंत चीकटिनी आवरिंचिदि
आ कणमंत चिन्नदि – अंत पेद्दि ।
तार तारकू वेरु वेरुगा
निर्धारिंचिन यात्रकु सूत्रं
आकाशमंता आवरिंचि
ना लो इमुड्चु कुन्नानु ।
नाळ-नाळान्नी ताके सजीव मयिन चीकटे
निश्चलमयिन ज्ञान समाधि नाकु-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मेरी जागृति में वह अरचित कविता बनी
और मैं विपुल विश्व- विस्तृत हो
कल्पना-भास बन, साँस बन व्यापित हुआ ।
सकल रूपों का ज्ञान मुझ में स्थापित हुआ ।
स्फटिक-स्वच्छ एक ही क्षुद्र-कण में
मैं तव ग्रह-गोल-निर्दिष्ट एक-मात्र धर्म बना ।
जनन-मरण का आलिंगन बना ।

उसी एक कण में सकल-सृष्टि-गत अनंत अवकाश
हर एक वस्तु के तत्व में विभिन्न सत्यों का सम-भास
हर उर की धडकन को ग्रथित करने वाला एक ही स्पंदन
प्रतिबिंबित हुआ एक मात्र सत्य बन ।

और मैं तब मैं ही नहीं रहा,
मैं तब घुल-घुल कर, पच पच कर एक कण बना ।
और इस सारे अँधेरे को छा लिया
उस लघुतम कण ने, उस गुरुतम कण ने । अगणित
विविध ग्रह-गोलों के विभिन्न परिभ्रमण के
निर्दिष्ट नियम, सारे अंबर को कर आवृत
मैंने अपने में विलीन कर लिये ।
नस नस को छूता जीता-जागता अँधेरा ही
निश्चल ज्ञान की समाधि मेरे हित;
और अब मैं दिवा-रात्रि-विहीन
काल के विलोप में स्थापित हो
मन का अवलोकन कर रहा हूँ ।

रूप और रेखा की बाहरी चमक-दमक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इंक पगलु लेनि रेयि लेनि
काल-विहीनत लो निलचि परिशीलिस्तानु जगान्नि नेनु ।

रूप-रेखल बयटि मिलमिललकु
ना चूपु एमरदु–
प्रतिप्राणि आकृति लोपलि
स्फटिकीकृत धर्म-प्रतिबिंबं
स्वच्छंगा चूडगलुगुतानु नेनु ।

भौतिक नेत्राल प्रयोजनं हद्दुपरिचे चीकटि,
रूप-विशिष्टत मोटुगा ज्ञप्ति मीद
विसरे वेलुगुनु कप्पे चीकटि,
लोपलि स्फटिक-स्वच्छमयिन जीव-कणान्नि
एकाग्रंगा वेलिंगिचे चीकटि
नालो नाशमयि, स्वभावमयि
नेनयि पोनी ।
अदे ना साधनकु पर्यवसानं
अदे ना वेदनकु अमर-गानं !

चीकटी ! चीकटी ! नीवु शुन्यमवु कावु
भौतिक-दृष्टि कंदनि सूक्ष्म–सूक्ष्म
कांति-किरणाल् संचलनं नीवु,
केवल नैशित्यमे नी अदृश्यतकु अर्थं;
वस्तुवुल अंतरंग-वस्तुत्वान्नि
बहिरंग परिचे सूक्ष्म विद्युत्तुवले
नी दृष्टि नैशित्यं विश्वगर्भं लोनि
मूल प्रयोजनं मीद वेलुगुतुंदि ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अब मेरी आँख को धोखा नहीं दे सकती ।
हर एक प्राणी की आकृति के अंदर
स्फटिक-रूप धर्म के बिंब को
शुभ्र-स्वच्छ देख सकता हूँ अब मैं ।

भौतिक नयनों के प्रयोजन को सीमित करने वाला अँधेरा,
रूप की विशिष्टता को स्मृति पर जोर से
फेंक मारने वाली रोशनी को ढँकने वाला अँधेरा,
अंतर के स्फटिक-स्वच्छ प्राण-कण को
एकाग्र सुलगाने वाला अँधेरा
मुझ में लीन हो, सहज प्रकृति बन,
'मैं' ही बन जाय ।
यही मेरी साधना का पर्यवसान,
यही मेरी वेदना का अमर गान ।

अंधकार ! अंधकार ! तू तो शून्य नहीं !
भौतिक नयन से अगोचर सूक्ष्म सूक्ष्म
कांति-किरणों का संचलन है तू ।
तू अदृश्य है, क्योंकि निशित है तू ।
वस्तुओं की अंतरंग-वस्तुता को
बहिर्गत करने वाली सूक्ष्म विद्युत सी
तेरी दृष्टि की प्रखरता
विश्व-गर्भ-निक्षिप्त मूल प्रयोजन पर
भासित होती है ।

अंधकार ! अंधकार ! अपने में अनंत का विस्तार
समेट कर मेरी आँखों का तारा बन जा !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चीकटी ! चीकटी ! अनंत वैशाल्यान्नि
नी लो इमुड्चुकुनि ना कंटि पापवयि पो !
कोटि कोट्ल जीवुल आत्मलु
केंद्रीकृत कांति-बिंदुवुलयि
इन्नि तारलयि नी लो प्रतिफलिंचायि ।

चीकटी ! चीकटी ! नी चूपु लो
रूपाल पै हद्दुलु
करिगि करिगि आविरि अयि
लोनि निजालु अनाच्छादितंगा वेरुपडि पोतायि ।

चीकटी ! चीकटी ! नी व्याप्ति सर्व-सृष्टिनी
ओक्क कौगिलित लो बंधिस्तुंदि ।

भुवनालु पुट्टनि तोलिनाटि कल
सारांशं नीवेना ?
परिमित शक्तुल नलवरुच्चुकुन्न
कांति-तत्वाल सम्यक्-स्वरूपं नीवेना ?
पगटि वेलुगुल परिमित शक्ति लो
नी सूक्ष्मत माटु पडि पोतुंदि ।
नी कलिमिकि पगलु लेदु, रेयि लेदु,
निन्न लेदु, रेपु लेदु ।
नित्यमू वस्तुवुल लोपलिकंटा
अखंडंगा व्यापिंचि उण्टावु नीवु ।
चीकटी ! चीकटी ! नी नित्य प्रत्यक्षमे
मनिषिकि ज्ञानं, बलं, समत ।
अपुडु मनिषि योगि—परमात्म ।

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कोटि कोटि प्राणियों की आत्माएँ
केंद्रीकृत कांति के बिंदु बन, असंख्य तारक-गण बन
तुझ में प्रति-भासित हो रहीं ।

अंधकार ! अंधकार ! तेरे अवलोकन में
रूप की सीमाएँ पिघल, उबल, भाप बन
अंतर्भूत सत्य विवृत हो, पृथक हो, प्रतीप बन ।

अंधकार ! अंधकार ! तेरे प्रसार में
सारा ब्रह्मांड एक ही आलिंगन में बँध जाता ।
भुवन के जनन-पूर्व आदिम स्वप्न का
सारांश तू ही क्या ?
सीमित शक्तियों से अभ्यस्त
काँति के तत्वों का सम्यक स्वरूप तू ही क्या ?
दिन के प्रकाश की परिमित परिधि में
तेरी सूक्ष्मता कुंठित हो जाती ।
तेरी समृद्धि हेतु दिन हो या रात
बीती साँझ या आने वाला प्रात
सभी समान हैं ।
नित्य बन, हर एक वस्तु के अंतर में
सत्य बन, अखंड विस्तार पाता तू ।
अंधकार ! अंधकार ! तेरा संतत दर्शन
मानव का ज्ञान है, संबल है, समता है ।
और तब मानव योगी है; परमात्मा है ।

— —— —

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नान्यः पंथा...

–विश्वम्

अदिगदिगो लोकं
अट्टडुगु चीलि नेल पगिलि
निप्पुटेरु निंगिकेगसि
निटारुगा पारुतोंदि ।
निद्रमत्तु कळ्ळ लोकि
क्षुद्र पशु-प्राणि लोकि
विद्रावण वह्निच्छट
विश्रृंखल प्रवाहमै
विजृंभिचि दूकुतोंदि ।
कालुतुन्न कड्डुपु पोरल
कटाह्ाल कंठालनु
ऋक्कुतुन्न आकलिपोग
ऋम्मुतोंदि दिगंतालु ।

कळपेळपेळ उड्डुकु-तुन्न
कमुरु-कंपु कोट्टुतुन्न
कालिन प्रेवुल लोनिकि
कम्मनि माटलु दूकु ।
जुम्मनि गडियल पड्डु
कर्णम्मुललो कालस्वनं
कुम्मरिंचिना चेरदु ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नान्यः पंथा...

–विश्वम्

लो देखो, रसा रसा–
तल तक फट टूक हुई;
फूटा ज़्वाला–निर्झर
आंच गगन परस गई ।

आंच सांच की है यह
साँच को न आंच भई !
आँच भूख की है यह
आँच को न मींच भई !

पिघले लावे सा यह
विशृंखल अग्नि-दाह
एक लपट जिस की छू
सुलग गये वारिवाह !

रिक्त-उदर-दरी बीच
सुलगी जो महा-ज्वाल
उगल रहे कलुष-धूम
दग्ध सकल दिशा-जाल ।

खोल रहा क्षुधा भरा
विकट उदर का कटाह
जिस में घुल, उबल, पिघल
रहे सकल जन विमोह ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नोटि तीट तीर्चुकोने
माटल प्रोवुलु विनि विनि
दिम्मु पडिन मेदडुकु,
वाजम्म नीतिशतकाला
कम्मदनं चूपगलवि ?

ओक्क गंटें गंजिकोरकु
ओक्क उप्पु-रायि कोरकु
ओक्क चित-पिक्क कोरकु
मोगं वाचिनारु प्रजलु ।
मुप्पूटलु परमान्नं
मेक्कुतुन्न दंडुग
रामन्नल बोज्जल कोलतलु
मरपिंचे मन पाटलु
मुळ्ळु पडिन निरुपेदल
कुळ्ळिन गुंडेल लोनिकि
कूरलेवु संतृप्तिनि ।

विनु-वीथिनि, नेलवंकनु
मिनुवाकनु, वेन्नेलनू
शुक-पिक-शारिक-रवमुनु
सुन्दरी-कपोल-पाळि
सुषमा लावण्य-रेख
चोक्किपोयि चित्रिंचिन
शेबासनेवारु लेरु ।

मत्तुमंदु मार्फ़ियालु

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पिघल रहे तंत्र-मंत्र
पाप-पुण्य, धर्म-कर्म
पिघल रहे शोषण के
भीषण सब छद्म-मर्म ।

उबल रहे प्रीत-रीत
नीति-न्याय, भीति-भाव
पिघल रहे शांति, दांति,
क्षांति आदि भ्रांति-भाव ।

पिघल रही युग-संस्कृति
पिघल रहा सभ्य-लोक ।
पिघल रहे कला, शिल्प,
आदि बन विचित्र-पाक ।

जलती जब आँत आँत
कौन सुने कम्र-गीत ?
प्रखर तीव्र मृत्यु-गंध
से परिमल-जग परीत ।

घूँट घूँट पानी को
कौर कौर दाने को
तरस रहा जग सारा
फिरता मारा मारा ।

कुटियों के बुझे दीप
महलों के जगे भाग
भूखों का आर्त-नाद
धनियों का सरस राग ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कनुकट्टुलु वाकट्टुलु
यक्षिणि बगळा-मुखीलु
यंब्रह्मलु नम्मरिंक ।

शुष्कप्रिय वावकुल
मस्तिष्कं लो दागियुन्न
मुष्करत्वमंता —
आविष्कारं पोंन्दिदी ।

कल्ल कपट मेरुगनट्लु
वल्लिंचे प्रेम-गीति
पल्लवि लो अणगि युन्न
प्रल्लदनं नल्लमंदु
बुट्ट वेल्लकिल पडिनदि ।

संध्या-सुत-सौंदर्यं
वन-तरु-पल्लव-शोणिम
घन-नीलिम, उषोरुणिम,
गानपटिम, कळा-गरिम,

धर्मशास्त्र-मर्मवेदि
तर्क-शास्त्र-वाक्य-स्तन
शल्य-परीक्षा प्रौढिम
प्राच्य-सनातन-संघ
स्वकुचमर्दनं कूडा
चिनरु विनरु प्रजलिंक नु
विनि विनि विसुगेत्तिनारु ।

निषा पेंन्चु निनादाल

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बेहाली, बेकारी,
लाचारी एक ओर
जरदारी, सरदारी,
बरजोरी एक ओर ।

बेढंगे, अधनंगे
भिखमंगे एक ओर ।
स्वर्ण भरी संदूकें,
बंदूकें एक ओर ।

नीति-न्याय, धर्म-शास्त्र,
सरकारें एक ओर,
जनता की कम से कम
दरकारें एक ओर ।

भीषण संघर्ष-ज्वाल
धू-धू जलते त्रिलोक
कौन सुने यह ढोंगी
धर्म-बोध, नीति-श्लोक ?

कौन सुनेगा तेरा
मृदुल-मधुर काव्य-गान ?
मधु-ऋतु की विधु-शोभा
कोकिल-काकली-तान ?

वन-निकुंज, कुसुम-पुंज
बिकल, विधुर, विरह-ताप
चंदन-चर्चित कंचन-
तन-पटीर-शैत्य-लेप !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निप्पच्चर मणचलेवु ।
निस्सत्तुव तीर्चलेवु,
नीरसं वदल्चलेवु
नित्यदरिद्रुल केटिकि
नीरस-वादोपवाद
निगूहनं ? — निजायिती
शंकिचे दश वच्चेनु ।

नी ना माटल मधुरिम
नी ना चेतल विसमुन
निमग्नमै पोयिन दिक;
नीरव जनते तेगिंचि
नीलिग, मूलिग, निलुचुन्नदि ।

प्रजा-वाहिनी-प्रगतिनि
पोरक-पुलल लापलेवु,
भयं वदिलि भद्रत कै
सागुतुन्न जन-तंडं
नी ना माटलु नम्मदु,
नी ना गुंडेल लोनिकि
निशितंगा चूडगलदु ।

सत्यदीक्ष, निजायिती,
जन-योग-क्षेम-चिन्त
कनबडिते पिलुस्तारु
कलिसि नडवमंटारु ।
कट्टि कोरुकु क्रौर्यं,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कामिनी कपोल-पालि
पर सुरभित साँस-भाप
कुटनी, चेरी, कुलटा
दक्षिण-नायक-प्रताप !

नहीं सुनेगा कोई
कोमल-पद कांत-काव्य
मसृण-शिल्प-कुसुम-तल्प
तंद्रावत निरर्थ, श्राव्य !

हिंजडे का दिव्य-प्रेम
आत्माओं का मिलाप !
कुहक, कुहासा, रहस्य
लिपटा मिथ्या-प्रलाप !

छोड छोड यह माया,
छाया का आलिंगन !
रक्त-मांस का जाया ।
तोड तोड तू बंधन,

इस कठोर धरती पर
तुझको आना होगा;
खीज, जूझ, लोहे के
चने चबाना होगा ।

देख उधर गरज रहा
प्रलयंकर जन-प्रवाह,
भँवर भँवर में लहरा
युग युग का प्रबल दाह ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वंचनल् किंचित्तो
कनबडिना—
        निन्नु. नन्नु
नलग द्रोक्कि
        मुंदुनके
सागुतुंदि
        जनतावळि
आगबोदु
        आगबोदु ।
आलोचिंचुमु सखुडा !

नाशनमो—
नव-शकमो—
नान्यः पंथा नेस्तम् !
अटो इटो तेल्चुकोम्मु
आट्टे इक व्यवधि लेदु !
        "नान्यः पंथा विद्यतेऽयनाय ।"

———·–

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रोकेगा उसे कौन ?
दिशा सकल भीत मौन
जन रिपु-गण रुधिर-शोण
उठा कल्कि का कृपाण ।

निश्चय कर लो सत्वर
समय नहीं रहा शेष,
निर्णय कर लो सत्वर
दीर्घ-पंथ दूर देश ।

दो राहे पर जगती
वह नव-युग की पुकार
तू किस के साथ बोल
तुले आज जीत-हार ।

नान्यः पंथा भाई !
देख बन रही कतार
कंधे पर ले कंथा
हृदय-भार दे उतार ।

नान्य पंथा विद्यतेऽयनाय ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उत्कंठ

—पठाभि

रगुलु चुंडे निगि दव्वु
मिलमिल मनि उडुल श्रेणि;
जडुस्तुन्न निप्पु पुव्वु
लागुनिट व्यथित प्राणि ।

भ-दिवाल मध्य ध्वांत
पिशाचम्मु जुट्टु विप्पु,
आरि पोवुचुंदि स्वांत
मंदु अर्चनंपु निप्पु

निखिल जगति निंडि मेदु-
रमुग, ई कुहू तमस्सु
उन्नकूड उडिगि पोदु
इपुडु नादु दृढ मनस्सु ।

वत्तुवंचु निटकु निवु
उन्नवाड नेनु वेचि,
वच्चिनचो वाडिपोवु
निरुलु, विरियु पसिडिरोचि ।

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उत्कंठा...

—पठाभि

सुलग रहे गगन बीच
झिलमिल झिलमिल उडु-गण
अनल-कुसुम से ढुलमुल,
पीर भरा मेरा मन ।

भुवि-दिव के मध्य तिमिर
का पिशाच खोल केश
नर्तन करता; मन में
मद्धिम पूजन-हुताश ।

निखिल जगत भर मेदुर
कठिन कुहू-तिमिर-जाल,
तेरे हित मेरा मन
विकल-प्रतीक्षा-विलोल ।

तू अवश्य आएगी
साँस साँस यही आस;
हट जाएगी अमास,
फूट पडेगा प्रकाश !

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गुंडे क्रिंदि नव्वु

– तिलक

चेति लो कलं अलागे निलिचि पोयिंदि
चिवरलेनि आलोचन सागि पोयिंदि
एदो रहस्यं नन्नावरिंचुकुन्दि,
अपुडे नी नव्वु ना गुंडे क्रिंद विनबडिंदि ।

पडुतू लेस्तू परुगुलिडे महा-प्रज
पिलुस्तू बेदुरुतू पोये कन्नुगव
कालि संकेलल घलंघल विनबड़े रोद
एमी तोचक भयं तो कळ्ळु मूशानु
अपुडे नीनव्वु ना गुंडे क्रिंद विनबडिंदि ।

आकु आकुनी राल्चिंदि कडिमि-चेट्टु
रेकु रेकुनी तोडिगिंदि मोगलि पेण्डे !
रेप्प रेप्पनी तडिपिंदि कन्नीटि-चुक्क
एन्दुको ई प्राणि प्राणिकी विभेदं
एरगनि ना मनस्सु ना लोने बेदिरिंदि
अपुडे नी नव्वु ना गुंडे क्रिंद विनबडिंदि ।

वेळ्ळबोये चीकटिनि वदल लेक वदल लेक वदले तार
वडलिपोये जीवितान्नि विडलेक विडलेक विडि पोये लोकं
कालुजारि पडिन कालपु पाडु नुय्यि लो कनबडिन शून्यं
कालु कदपिन चलुवराति सौधं लो विन बडिन गानं
एमिटनि प्रश्निस्ते "एमो" अनि पलिकिन निश्शब्दं
अपुडे नी नव्वु ना गुंडे क्रिंद विनबडिंदि ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हृदय-तल की हँसी

– तिलक

हाथ में कलम तो वैसे ही थम गई
किंतु भावना अनंत आगे बढ़ती गई
किसी मधुर-रहस्य ने मुझ को छा लिया
कि इतने में तेरी हँसी हृदय-तल में गूंज गई ।

गिरता उठता दौड़ा जा रहा जन-प्रवाह
हरिण-चपल नयन-युग में भरी चाह
मस्तक में हथकड़ी-बेडियों की झनन-झनन
व्याकुल हो अपने आप रुक गये मेरे चरण–
कि इतने में तेरी हँसी हृदय-तल में गूंज गई ।

पात पात झर रहा तरु-तमाल
गीत गीत धर रही केतकी-बाल
पलक पलक में छलका नयन-नीर
किलक किलक लहरें छू चलीं तीर
प्यास से निराश धरा भीजकर पसीज गई–
कि इतने में तेरी हँसी हृदय-तल में गूंज गई ।

बिछुड़ता अँधेरा, विवश मलिन-वदन तारा
पकड़ में नहीं आता पिछलते जीवन का पारा
काल का अंध-कूप विजन विकल सूना
पालता संगमर्मर उससे भी दुख दूना
इशारा भर करती गूंगी नीरवता सो गई–
कि इतने में तेरी हँसी हृदय-तल में गूँज गई ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आकाशपु वंपु लो आर्द्र वेनुक नी नव्वु
पाताळं-लोतुल लो प्रतिध्वनिंचि सागिदि,
अंधकारपु समुद्रानिकि अवतल वोड्डुन नी रूपं
अंदुको लेनि ना चूपुकि आश आश कोन सोकिंदि ।

रा ! प्रश्निंचे ना मनस्सुलो
नी चल्लनि चेति तो निमुरुको !
रा ! ना कनुरेप्प माटुगा
नी मेरपु-वीण मेल्लगा मीटुको !

ऋम्मुकुंदि ना लो भयं तो कलिसिन धैर्यं
प्रवहिंचिदि ना ला तीरं लेनि रजत-नदं
इपुडे, इपुडे, नी नव्वु
ना गुंडे क्रिद विनबडिंदि !

— — –

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

क्षितिज के उस पार तारों में तेरी हँसी,
निकल पाताल की पसलियों में जा बसी।
अंधकार-सागर के उस पार तेरा हास-
कोटि कोटि ज्योति-वर्ष दूर से खींचता पास।

मेरे जलते ललाट पर तेरे स्पर्श का तुषार
मेरी मुंदी हुई पलकों में शंपा की सतरंगी झंकार।

शिशु-दृग की तंद्रा सा चुपके धीरज आया
एक अनंत शांति का सागर मन में लहराया।
कि उसी समय, उसी समय
तेरी हँसी हृदय-तल में गूँज गई।

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'विगतं तरण मन्त्र वैतरणि'

– रेंटाल गोपालकृष्ण

चीलिचन शिरस्सु लागुंदि जीवितं
अस्तमिंचे सूर्य-बिंबं लागुंदि आश
कळ्ळल्लो चीकटि, गुंडेल्लो कुंपटि
नडि शिरसुन नागुबामु, नडि-चेलो नाग-जेमुडु
लग्नं लो शनि ग्रहं. राहुवु तो संयोगं
क्षण-क्षणं उरिकंबं प्रति निमुषं भय-विकलं
मुंदु वेनुक वैतरणी !

वयसु लो उण्डगने वैतरणि वच्चिंचदि
वयसु चेल्लक मुंदे वार्धक्य मोच्चिंदि
निंडु यौवनं लोने नेरसिनवि वेशालु
पंडु वेन्नेल लोने महाळय-पक्षालु
समरं लो संधि-पत्रालु-
संधि-पत्राल पै संतकालु !

जात्यंधुनि शय्य पै
श्मशानान गोरी पै
शरत् वेन्नेल काष्तुन्नवि
ना चुट्टू अमावास्य
पेनवेसुकोनि नडुस्तुन्नदि

जीव-रेख आदि लोने
अंतमैंदि ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'विगतम् तरण मत्र वैतरणि'

—रेंटाल गोपालकृष्ण

कटे हुए शिर सा जीवन
डूबते सूरज सी आशा
आँखों में अँधेरा, छाती पर अँगोठी,
सिर पर नाचता काल-फनी
खेत में फैलती नाग-फनी
लग्न है शनिग्रह का, राहु से संयोग
पग पग पर फाँसी है, पल पल पर शूली है
मेरे आगे-पीछे वैतरणी।

यौवन के साथ साथ वैतरणी ने घेरा
यौवन के पहले ही हुआ जरा का डेरा
केशों के पहले ही पक गई मेरी आस
राका के रजत-हृदय में आ बसी अमास।
समर शुरू हुआ नहीं, संधि-पत्र लिखा गया;
संधि-पत्र पर मैं ने हस्ताक्षर कर दिया।

अंधे की सेज पर मरघट में कब्र पर
शरत की चांदनी,
मेरे चारों ओर घेर
घोर अमा आ बनी।

मेरी जीवन-रेखा आदि में ही अंत हुई
समय की प्रगति रुक गई।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कालं जरगदु
कंठं पलकदु
कदलदु भूगोळं !

कन्नीटि मडुगुलो कालूनगा लेनु
काटिलो कमलान्नि नाटगा लेनु–
कष्टालु नेत्ति केत्तुकोनि
कालु पेट्टानु कल्याण-मंटपं लोकि ।
कट्टु-पुट्टं कोङगुन
कट्टकुन्ना नग्न-होत्रं !
निन्न जरिगिदे ई वेळ–
ई रोजु लागे रेपु-

आकाशं अंदुकोनुट कसमर्थुडु
यत्नस्ते एमवुतुंदि ?
पगिलि नग्लासुनु अतिकिंच गलमा ?
पासिन अन्नंबु पक्वानि कोच्चुना ?

कल्पित भयाल भवंति लो बंदीगा
कम्मुतुन्न विद्युत्-बंधनाल किंधनमुगा
एन्निसार्लु मृत्युवु ?
एन्नाळ्ळी मरण शिक्ष ?
एन्नाळ्ळी जनन-शिक्ष ?

मूल्गुतुन्न समुद्रं लो
मुत्यालु सेकरिंच बोयि मुनिगि पोयानु
अद्दं लो विरिगिन छायलु
अणुवणुवुनु रगिलिस्ते
निद्दुर लो सुख-मरणं वांछिचानु–

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रुद्ध हुआ गला।
अचल बनी अबला।

धर न सकूँगा चरण आँसुओं की बिछलन में
गुलाब न जला सकूँगा मरघट में;
क्लेश-भार शीस धर
चरण रखे मंगल-मंडप में।
अग्नि ही साक्षी है—
अग्नि बांध ली मैं ने निज वसन में।
कल सा ही आज
आज सा ही कल।

बौना नर छूना चाहता है आसमान।
टूटा प्याला जोड़ा नहीं जा सकता—
बासी भात फिर से पकाया नहीं जा सकता।

कल्पित त्रास की कारा का बंदी मैं
बिजली की वेडियों का जला-भुना इंधन मैं
कितनी बार जन्म लेना होगा?
कितनी बार जीना होग?
कितनी बार मरना होगा?

तलफते सागर में तलफती मछली
टूक टूक शीसे में टूक टूक छाया
शोक भरी जगती में शोक भरा मानव
जीवन के वार-पार अंधकार नीरव
चारों दिशि चटुल भ्रांति, नहीं कहीं कांति
जहाँ सुलग रही आग वहाँ वहाँ शांति।
जीवन और मरण की नहीं रही पहचान

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कानि
वच्चिनट्लु भ्रमगोल्पि वेळिळपोयिंदि
व्रतुको, चावो तेलियदु
भयम्, अभयम् वाधिस्तूने उन्नानि
वीटि वैशाल्यं तेलुसुको लेकुन्नानु

मुंदुवेनुक वैतरणी
एॅटु चूचिन वैतरणी
वाग्रदेविकि, प्राणकांतिकि अड्डुंगा पारुतोंदि
कट्टलुतेगि, गट्टु लुतेगि मुट्टडिगा पारुतोंदि
अड्डुगुतुन्नदि गोदानं
चेप्प मंटुन्नदि समाधानं !
अगाधमैन वैतरणिलो
भग भग मंडे वैतरणिलो
युगालुगा निलबडि उन्नानु
गोदानमिच्चे कोमरुनिकोस
वेचियुन्नानु !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भय और अभय का भी नहीं रहा भान।
संज्ञा की सीमाएं मिट गईं, बची एक पीडा
अहंकार मेरु-दंड हर-धनु सा तोड़ा।

मेरे आगे-पीछे अगल-बगल वैतरणी
कंठ-मध्य वैतरणी, आँखों में वैतरणी
अघ-पंकिल शंकाकुल कुटिल मलिन वैतरणी
माँग रही गोदान !
कैसे करूं समाधान ?

ज्वाला वीची-विचलित वैतरणी में
विकट-तिमिर-तरु कोटर सी इस वैतरणी में
युग युग से मैं खड़ा हूँ।

सत्वर गोदान देकर तार दे—
उस आत्मज की राह देखता हूँ !

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महा-रात्रि

– भागी

भानु-गर्भिणि–ई रात्रि–भयंकरंगा उंदि-
कोण्ड-राळ्ळु पुलकरिस्तुन्नायि
मोण्डि चेट्लु कलवरिस्तुन्नायि
तिण्डिलेनि जनं निद्रा द्रावकं आगि निषा लो उन्नारु ।
भानु गर्भिणि–ई रात्रि- भयंकरंगा उंदि–

आकाशान
मब्बुल मेट्ट-भूमुल्लो
नक्षत्राल वेण्डि तुंपरल चिम्मुतू
प्रवहिस्तुन्न रजतनदी-तरंग-डोलिकल
तेप्पवेसुकोनि, वळ्ळु मरचि, विहरिस्तुन्न
चंद्रुनि मनस्सुलो
ओ नल्लनि तलपु तलयेत्तिदि ।
तन चल्लदनान्नि, वेन्नेल मंचुनि
दिंपुतुन्नाडु
ई भूमि
वेच्चानि निट्टूर्पैन विडवकुंडा, निर्जीवियै, मंचुगड्डै
बिगिसिपोवालनि
भानु-गर्भिणि ई रात्रि भयंकरंगा उंदि ।

चिगुरुटाकुल पोत्तिळ्ळु गुप्पेळ्ळु मुडुचुकोनि पडुकुन्न
पसिमोग्गल पलचनि पेदिमेलु- वणिकि पोतुन्नायि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महा-निशीथिनी

– भागी

सवितृ-गर्भिणी यह निशीथिनी भीषण है !
रोमांचित हो रहे गिरि-प्रस्तर-
उनींदे पेड़ कर रहे मर्मर
भूखे जन नींद की शराब पीकर बेहोश सो रहे
सवितृ-गर्भिणी यह निशीथिनी भीषण है !

अंबर की ऊंची पठार पर
तारों के रजत-शीकर बिखरा कर
बहती स्वर्गंगा की तरंग-डोलिका में
झूलते हिमकर के मन में
एक काली कल्पना ने शीस उठाया
बादलों की चादर में उस ने मुँह छुपाया।

ठंडी हवा चली,
जीवन के सूखे कंकाल की पसली-पसली चीर।
मुझे लगा कि दिन के दाह से जली-भुनी यह धरती
निठुर शीत में ठिठुर कर, अकड़ कर
बरफ की चट्टान बन जाएगी;
तब कहीं चैन पाएगी।
सवितृ-गर्भिणी यह निशीथिनी भीकर है !

कोमल कोंपलों की गुदड़ी में मुट्ठी बाँध
लेटी नन्हीं कलियों के पतले होंठ कांप रहे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चेट्लु, भूमि पोरल्नि चील्चुकोनि
पैकि सागि पोतूंटे,
एवरो तम पादाल वेळ्ळनु पट्टुकु लागुतुन्नारनि
कोम्मलुगा वंगुतुन्नायि;
नदुलु कलवरपडुतू-निलकड लेक, गंतुलेस्तुन्नायि
भानु-गर्भिणि, ई रात्रि भयंकरंगा उंदि-

वंद गजाल दूरंलोनि वस्तुवु कनबडटं लेदु
पोग तो कप्पबडिन बोडिगुडिसे ला उंदि ई भूमि ।
गुडिसेलु, मेडलू
गुड्डिगा निद्र पोतुन्नायि ।
फ्याक्टरी गोट्टाल गोलुसुल पोग
आरिपोतुन्न काष्टं कक्कुतुन्न धूमं लागा
वळ्ळु मुडुचुकोनि, सुळ्ळु तिरुगुतू, सोम्मसिल्लि
बैट पडुतुन्नदि ।
बजारु दुम्मु पक्क वेसुकोनि
कुक्कल्नि डोक्कलो पेट्टुकोनि
वणुकुतू, निद्र पट्टक, कूर्चुन्न जनानिकि
एर्र रंगु उलिपिरि कागितपु मंटलु वेस्तुन्नारु
वीथिवीथिनि-
लाभं लेदु ।
चलि एक्कुवे अवुतुन्नदि—
चलि मुदिरि पोतुन्नदि—
चले चलि कि वणकि पोतुन्नदि ।

ई चलि कि
ई महा-रात्रि, निंडु चूलालि गर्भं लोनि पिंडं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पेड़ झूल रहे
मानों कोई उन को पकड़ कर जड़ से उखाड़ रहा हो;
नदियाँ दौड़ रहीं
जैसे कोई उन्हें खदेड़ रहा हो।
सवितृ-गर्भिणी यह निशीथिनी भीषण है!

हाथ को हाथ नहीं सूझता
अगोचर अंध-जगत से नयन-युगल जूझता।
विपुल यह विश्व एक धूमावृत श्मशान
जहाँ बस, मृत्यु की तिक्त-गंध का ही भान।
ऊँघ रहा अखिल जगत, ऊँघ रहे कुटी-महल
कल कारखानों के धुआरों से उठते धुँए के बादल।
उनींदी चिताओं से उठती धुँए की अमर-बेल
जम्हाई-सी, अँगडाई-सी झूल रही, डोल रही
ऊँघ रहा सारा जगत।
धूल में चिथड़े बिछा कर
कुत्तों को पसलियों से चिपटा कर,
निर्निद्र बैठ कर, शीत से थर्राते अधनंगे भिखमंगे
कूडे-कर्कट की होली जला रहे जगह जगह बैठ कर।
रात चढ़ती जा रहीं
शीत बढ़ती जा रहीं
शीत भी शीत से काँप रही।

और इस शीत में
पूर्ण-गर्भिणी इस महा-निशीथिनी के गर्भ का ज्योतिष्पिड
जम कर, ठिठुर कर अकड कर जम न जाय
यही सोच, मैं अपने हृदय का प्रबल ताप

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गड्डु कट्टुकुनि पोतुंदेमोननि,
तन गुंडेल्लोनि वेच्चदनानि
कवित्वपु शालुवलुगा कप्पुतुन्नाडु
नेटि कवि–
अणुरूपि
विश्वकवि ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लेश-लेश बटोर, राशि-राशि उँडेल
गीतों के गरम मुलायम शाल बना
उसका तन ढँकता हूँ;
अपने प्राणों की साँस फूँक
उस को गरम रखता हूँ।

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अडवि

—के० वी० रमणारेड्डी

नेत्तुटि चित्तडिलो लेचिन
त्यागुल शिरालु पूचिन
किरातक पातकं पंडिन अडवि–
नायना इदि अडवि !

अनगनगा चिट्टडवीं,
चिट्टडवि लोपलनू चीमलुनू पाकवट ।
अनगनगा कारडवी,
कारडवि लोपलनू काकुलुनू वालवट ।

चीमलकू काकुलकू भयमंडी ई अडवि,
प्राणं तो वुंडेटी जीवुलकू तल कोरिवि–
आसामी, ख़ामंदू, मरि गरीबुलू जंतुवुलु,
हालिकुलू. अलबर्लू नरबलुलू
सिंगालू-सिवंगुलू, गूबलया एलिकलू
पिच्चुकलू दुप्पुलुनू, पावुरमू पाचिकलू ।

ई अडवि संदिटा
मानवुडु खैदी, मानवुडु बंदी !
ई अडवि गुबुरुलो
तोट ओक खैदी, ऊट ओक बंदी !
राबंड गोंतु लो
सेलएरु खैदी, गालि ओक बंदी !
गीगी-गागीं मंटू गोडु-गोडु ई अडवि !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जंगल

—के० वी० रमणारेड्डी

शोणित-कर्दम से उठ कर
फूले जहाँ त्यागियों के शिर
पाप-ताप उपजते जहाँ पर
भैया ! यही यही वह जंगल।

कहते हैं—घोर घना यह जंगल,
इतना घना कि चींटी तक घुस न पाय !
कहते हैं—खूब बना यह जंगल
इतना घना कि कौआ तक उड न पाय !

चींटी-कौए आदि क्षुद्र जीवों का काल कि जंगल ?
दीन-हीन लघु प्राणी हित यम का जाल कि जंगल ?
तरह-तरह के जीव-जंतु-गण जो कि पराया खून चूसते, पीते
बाघ, भेडिए, चीते, गैंड़े, अजगर-साँप आदि जगल में जीते
हरिण, भेड़, खरगोश, कबूतर, तोता-मैना पशु-पक्षी गण
क्रूर मृगों के चंगुल में फँस, बेचारे खोते जीवन-धन

इस जंगल के चंगुल में
मनुज है बंदी, मनुज है कैदी !
इस जंगल के पिंजड़ में
वापिका बंदी, वाटिका कैदी !
हरी-भरी इस कारा में
पवन है बंदी, स्रोत है कैदी !
जंगल यह जंगल

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पोडु-पोडु ई अडवी
नलुपु लोपल लेत चिगुरया गीतं,
चिगुरया गीतं !
गीतं निनादं ! निनादं ! निनादं !
मृग-घोषलनु मिचि, सांद्रालु चिची
करगोडलनु चेरु वेगं निनादं !
मुष्टि पोदरिट गुलाबी निनादं !
सिह-गर्भानि ओक बाणं निनादं !
पुष्पं निनाद ! उदयं निनादं !
वाहिनि निनादं ! वासन निनादं !
अडवि लोपल कोरिवि सरिकोत्त नादं !
अडवि लोपल गोप्प कूर्मि निनादं !
नादं निनादं ! वेगं निनादं !
निनादं ! निनादं !

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

खूँखार जानवरों का दंगल !
जंगल यह जंगल
जिसमें कहीं नहीं मंगल !
वन की कालिमा में लाल कोंपल ही गीत है !
कोंपल ही मीत है;
गीत ही विवाद है, विवाद का निनाद है, निनाद है !
सांद्र-वन पार कर, मृग-राव चीर कर,
उस पार पहुँचता वेग ही निनाद है !
झाड-झंखाड में फूल ही निनाद है !
शेर के वक्ष में तीर ही निनाद है !
फूल ही निनाद है ! प्रात ही निनाद है !
वाहिनी निनाद है, वास ही निनाद है !
सघन-वन-मध्य दावाग्नि ही निनाद है !
वन के निवासियों की एकता निनाद है;
अब नहीं विवाद है,
नाद ही निनाद है, वेग ही निनाद है,
निनाद है !
निनाद है !

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तेगि पोयिन कास्मास् जगत्तु !

—अनिसेट्टो सुब्बाराव

पगलु पगिलिन गाजु-पेटिक
मंत्रकत्ते कालं गुप्पिट !
रात्रि हस्त-रेखलु आकाशं सर्विंचु चूपुलु !
तेरिचिन एँसुकल वैळुलु बाटलु !
तालुक चाचि वोगर्चे
जूलु विदल्चे आकलि !
आकलि; आकलि; आ-हा-कलि !

नडि-संद्रपु बोडि लो नग्गोलै मुनिगिन ओडलु,
तृष्ण विडक बुस कोट्टे मृतजीवुल नीडलु,
बाटलपै पडि पोये प्रजलु !

वेन्नेल नूने तागि
मिन्नेगसे आकलि !
चेदिरिन काकि-गूळ्ळु,
व्रद्लैन पच्चनि चमुरु सागु पसिगुड्लु,
पडि विच्चे शिशुवुल शिरमुलु !

व्रतिकिन——

नमलि, चीलिच मिंगे मोसळ्ळु—उन्नवाळ्ळु !
गादेल सुडिगुंडाललो पेरिगिन पुण्यं,
मुक्ति कोरकु वरं !

व्रतिकिन——
कोरिकि मिंगि वेळ्ळे मनुषुलु !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विक्षुब्ध विश्व !

– अमिसेट्टी सुब्बाराव

दिन फूटे शीसे की पेटी
मायाविनी समय की मुठ्ठी !
रात की हथेली की लकीरें,
आसमान की विह्वलती निगाहें,
नंगे हाडों की उँगलियों की राहें !

जीभ पसार हाँफती,
निज केसर झटकाती भूख !
भूख; भूख;
कलि की भीख !

क्षुब्ध-जलधि-कल्लोल-भग्न जल-मग्न पोत,
अतृप्त तृष्णा-वश फुफकारते छायांध प्रेत !
मार्ग-मध्य एक एक झर जाते जन-गण !

चंद्रिका-स्नेह पीकर,
धधका अंबर छूकर विकट क्षुधानल;
कौओं के घोंसले गिरे,
पीले चिकने तेल भरे अंडे टूट;
नन्हें सिर गिर गिर फूटे !

जिंदा चबा चबा कर,
निगल चले जाते प्रबल मकर-पैसे वाले !
भंडारे के भंवर में फंसे धर्म-कर्म–
मोक्ष-मर्म
जिंदा चबा निगल जाने वाले नर-वही जानवर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अस्तुल लो-लो पायललो चलिंचु वेलुगे
मुक्ति कोरकु वरं !

कत्तुल बोनुललो तरिगि
शक्तुल पादालकु नलिगि
पिप्पि-बोम्मलु; पडिपोतू प्रजलु !

तूलूतू, वालूतू
काले समिधल पोग-तीगलु;
पडि नडिचे नीडलु !

आवुरुमनु केकल मूकलु !
पोग तागे वायुवु लो आविरुलौ आयुवुलु !

त्रोव तप्पि मारु-पडिन अतिथुलु–
रुतुवुलु; राने रावु !
गडप त्रिंडिचि वेळ्ळदु जूलु विदल्चे, गर्जिचे
आकलि गुडनु बाकु गुच्चि पकपक नव्वें निस्पृह !

शांतियुगं ?

दिक्कुल पुक्किट तुपानु;
शांति ?

समुद्र-गर्भपु वडबाग्नि; शांति ?
मींटिन व्रक्कलये नल्लनि कूटि-कुंड;
पडि-पोये रात्रि !
पिंडिन रक्तं कक्के पितिकिन पोदुगु;
दिगि वच्चे पगलु !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हाडों के अंदर मज्जा में काँपती रोशनी थर-थर,
माँगती मोक्ष-वर !

छुरियों के कठ-घरे बीच कट कट कर
चंडी के चरण तले पिस पिस कर
नीरस सींठो के से पुतले; गिरते जन-गण !

इठलाती, बल खाती और मचलती
जलती समिधाओं की धूम-लताएँ !
गिर-गिर उठ-उठ चलती छायाएँ !
मुंह बाकर बिललाता, भूखा जन-समूह !
धुंआ पिये मदहोश वायु में आगु बन गई बाष्प-व्यूह !

भूले-भटके अतिथि सरीखी ऋतुएँ इधर नहीं आतीं !
केसर झटका कर दहाड़ती निठुर क्षुधा की छाती में
छुरा भोंक कर, अट्ट-हास कर उठती निपट निराशा !
पर बैठक छोड़ नहीं आती !

शांति-युग ?
दस दिशि की नस-नस में तूफान !
शांति ?
जलधि-गर्भ में बड़वानल निद्राण !
शांति ?
छूते ही टूक-टूक होने वाली काली हांडी;
काली रात भोंडी !
दुहने पर लहू उगलता रीता थन;
वही उतरता दिन !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मंत्रकत्ते विप्पिन गुप्पिट,
एमुकल व्रेळ्ळल पँ—
क्षोभाकुलित-ज्वाल विदल्चे आकलि नालुक !
पडि नडिचे नीडल नृत्यं !
तेंगि पोयिन कास्मास् जगत्तु !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मायाविनि की खुली हुई मुठ्ठी !
उँगलियों के हाडों पर
विह्वल अनल बिखेर, पसरती
बधिर क्षुधा की रसना !
गिरती उठती छायाओं का नर्तन !
विक्षुब्ध विश्व !

— —

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बरुवु-बन्डि

– पिलका गणपति शास्त्री

एट्टैना मोयलेनि पेद्द बरुव बडि, मिट्ट
मध्याह्नं तारुरोड्डु मंडल्लो ईड्चे, ओ
अन्ना ! नी पै आक चिन्न पट गास्ते इक
अरुगुमीद कूर्चुन विनि आनंदिस्तुंदि लोक
मन्नन्ना ! ई पापं मन्निस्तावा इका !

प्रतिक्षणं दिगलागे गतुकुल्लो बडि, अतुकुल–
बतुकु-बडि लागि, लाग चितिकि तूलि पोतूंटे–
अन्ना ! नी पै आक चिन्न पाट रास्तानोंक
अरुगु मीद कूर्चुनि, विनि आनंदिस्तुंदि लोक
मन्ना ! ई अपचारं मन्निस्तावा इंका ?

विन्नावा ! ई चित्रं ! निन्नु गूर्चि रास्तेनट !
पिन्न पेद्द कवुलल्लो पेरु मोगि पोतुंदट !
अन्ना अयिदि एदो ! चिन्न पाट राशानोक
अरुगु मीद कूर्चुनि विनि आनंदिचिदि लोक
मेन्नटिकी ई मोसं मन्निचवुले मरिक !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ठेला-गाडी

— पिलका गणपति शास्त्री

भारी गाड़ी टस से मस न जिसे कर सकता बैल
दुपहर की जलती सड़कों पर उसको ले चले ठेल !
भैया ! यदि मैं तुझ पर लिखूं एक गीत आज
ठंडी छाँह में उसे पढ़ कर खुश होगा समाज !
मेरा यह दुस्साहस माफ करो ऐ भैया !

जीवन का बोझ बड़ा भारी, ऊबड़-खाबड़-
सड़क, ठेल यह गाड़ी बढ़ते पग-पग गिर-पड़
भैया ! यदि मैं तुझ पर लिखूँ एक गीत आज
ठंडी छाँह में उसे पढ़ कर खुश होगा समाज।
मेरा अपराध बड़ा, माफ करो ए भया !

और गजब यह कि, अगर लिखने लगूँ मैं तुझ पर
मान करेंगे मेरा सभ्य-जगत के कवि-वर
इसीलिए मैंने भी लिखा एक गीत आज
ठंडी छांह में जिसे पढ कर खुश होगा समाज
कैसे यह दुस्साहस माफ करोगे भैया !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अग्नि-वीण

– मल्लवरपु विश्वेश्वर राव

अग्नि-वीण अदिरि पडिन
अग्राह्णमु लोकानिकि !
नग्न-रौद्र-रागिणि-गण
नर्तन-संवर्त-घटिक,
लोकानिकि नी कु-नाकु,
एकाकनि कवनानिकि !
ए कराल हालाहल
भीकर तृष्णा-तंत्रिक–
लो कदलिन घूक-शृति
लोक मार्वरिंचिनदो ?

अग्नि-वीण अमरापग–
स्निग्धलहरि लो रक्तिम !
अग्नि-वीण दिग्दिगंत
दग्धातप दवारुणिम !
अग्नि-वीण अखिल भुवन
क्षुधा क्षुभित रणारुणिम !
क्षुधा-क्षुभित व्यथा-तपित
निदाघ दिन हृत्-शोणिम ।

अग्नि-वीण असिधारा
धगद्धगित भयद कांति,
युग-भ्रमण जगत् क्रांति ।
वसुंधरा व्रण-निर्गत–

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अनल-बीन

—मल्लवरपु विश्वेश्वरराव

अनल-वीन बाज उठी
जग का मध्याह्न हुआ,
रुद्र-रागिणी घुमडी
उठा प्रबल प्रलय-धुँआ।
तेरा-मेरा, जग का,
कविता का अंत हुआ।
किस भीषण हालाहल
तृष्णा की भयद तान
भीकर-तर घूक-गान
का जागा यह उफान ?

अनल-वीन स्वर्गंगा
के जल में रक्त-ज्वाल !
अनल-वीन दस-दिशि में
दावानल- दाह-जाल !
अनल-वीन अग-जग में
क्षुधा-क्षोभ-मय अकाल !
क्रुधा-शाप-व्यथा-ताप
निदाघ का भयद काल !

अनल-वीन असि-धारा
की गरल-मय मुसकान !
युगांत का क्रांति-गान !
वसुंधरा-व्रण-निर्गत

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अस्त्र-सिक्त विषम-तंत्रि !
अग्नि-वीण ग्रीष्म-लग्न
मृत्यु-मग्न मृषा-शांति !

अग्नि-वीण विकल-हृदय
विकृत विलय विधुर-शृति !
मधुर कवन रुधिर-प्लुति !
मृदुल कुसुम-मरण-स्मृति !
झणंझणित रणन्निनद
किरण-तंत्रि ! मरण-जंत्रि !
पोरपाटुन तेर दाटिन
परमाणुवु पलिकिंचिन
अग्नि-वीण भुग्न-तान
नग्न-गान मदिरि पडिन
अपराहणमु लोकानिकि !

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रक्त-सिक्त विषम बान !
अनल-वीन भीष्म ग्रीष्म-
ज्वाल का तृषित उफान !

अनल-वीन हृदय-विलय
झंझा का चंड-राग !
मधु-काव्य-रुधिर-पराग
मृदुल-कुसुम प्राण-त्याग !
झनझन कर रणोन्माद
किरण-वाद्य, मरण-नाद !
भग्न अणु हुआ विनग्न
भूल एक बनी शूल !
उठी प्रबल प्रलय धूल
अनल-वीन बाज उठी
जग का मध्याह्न हुआ !

— — —

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुनरावृत्ति

— कालोजी नारायणराव

उदयं
काने कादनुकोवडं
निराश
उदयिंचि
अट्लाने उंटुंदनुकोडं
दुराश ।
ई चीकटि उंडदु,
सूर्युडु
तप्पक उदयिस्ताडु ।
आ वेलुतुरू निलवदु,
सूर्युडु
मळ्ळी अस्तमिस्ताडु ।

चीकटि लो
कनुविप्पिन वारिकि
वेलुतुरंटे बूचि ।

वेलुतुरू लो
कनुतेरचिन वारिकि
चीकटंटे पिशाचि

इदे जरूगुतू वच्चिदि
इंतकु मुंदु
इदे जरूगुतुंदि
तप्पदु इकमुंदु !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुनरावृति

— कालोजी नारायणराव

सबेरा
होगा ही नहीं, यह सोचना
निराशा है !

सबेरा
बना ही रहेगा, यह सोचना
दुराशा है !

रात यह कटेगी,
पूरब में
पौ जरूर फटेगी !

दिन बना न रहेगा
सूरज फिर
डूब जायेगा !

अंधेरे के लाड़ले लाल
समझते हैं
दिन को भूत !
कांति के मानस के मराल
समझते हैं
रात को प्रेत !

अब तक यही
होता रहा है;
आगे भी यही
होता रहेगा !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अशोक-वृक्षम्

– बेल्लम्कोंड रामदास

ब्रतुकोक अशोक-वृक्षं !
प्रपंचमोक लंका-नगरं !

नेनु सीतनु !

जीविताशोक-वृक्षच्छाय लो
कूर्चुंन्ना,

ना चुट्टू
बाधिस्तू दानवुलु-मानवुलू !
नेनु सीतनु !

जीविताशोक-वृक्षच्छाय लो
हनुमंतुनि राककै एदुरु चूस्तू !
लंका-दहनं कै एदुरु चूस्तु !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अशोक-

- बेल्लम्कोंड रामदास

जीवन एक अशोक-वृक्ष है
और जगत ही लंका-नगरी !
मैं सीता हूँ ।

जीवन के अशोक-तरु की
छाया में मन मारे बैठी,
मेरे चारों ओर घेर कर
भीषण अट्टहास करते
विकट उलंग-लास करते
मुझको छेड़, मजाक उड़ाते
कज्जल-छाया-प्रेत समान दनुज-गण:
या कि मनुज-गण ?

मैं सीता हूं ।
जीवन की अशोक-छाया में
विकट दनुज-गण की निशीथ-माया में
बैठी हूँ मैं !
पवनात्मज की राह देखती !
भावी लंका-दाह देखती !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नाकेवृद्धाप्यम् वस्ते

– एल्चूरी सुब्रह्मण्यम्

नाके वृद्धाप्यं वस्ते,मानस-कल्लोलिनि शान्तिस्ते
कल्लोलं लयिंचि कमलं ला प्रभविस्ते
सुंदर धरित्रि वदनं !
चिगुरुटाकु ननलोत्ते नुनुमेत्तन विस्मरिस्तू,
चल्लारिन चितुलेगबोसिन धूळुल धवळिम नाकाक्षि चेद,

ई सकलं कादेदी नाकसलर्थं ई ज्वर-पीडित लोंकंलो
ई बाधा-भरित व्यथाकुलित
महोद्विग्न-व्याधिग्रस्त नेलं,
मंत्रसानि चिरुनव्वुल चिरुनव्वुल तरंगाल
तरंगिणुल करकट्टल शिखरं पै दीपं चूडदु !
ई विषाद-निशि-गर्भं व्रय्यलिंचु खड्गं दुय्यदु !
ई रोदिंचे दारुण निशि-रोदन विननिय्यदु !

ई कर्कश काळ रात्रि ई कठोर कंटक-पथाल
ओंण्टरिगा अडुगिड निय्यदु !
कन्नुल पंडुवुगा कन्नुलु चूडनि पतंगि ला
मिन्नुल-केगब्राकनीदु !
आटविकुल पर्वत-भाषण, खेचराळि भीकर-प्रसरण
परिप्लवित प्रपंच-घर्षण
आगामि जन-युग अपूर्व भाषण
विनबडविक नेने वृद्धुणयिते--

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और जब मैं बूढ़ा हो जाऊँगा–

– एल्चूरी सुब्रह्मण्यम

और जब मैं बूढ़ा हो जाऊँगा,
मानस-कल्लोल शांत हो जाएगा,
और सुंदर धरा का बदन
खिले हुए कमल-सा दिखाई देने लगेगा।
कोमल कोंपलों की मृदुलता भूल जाऊँगा,
बुझती चिताओं की विभूति का दर्शन कर पाऊँगा।

आज कुछ भी मेरी समझ में नहीं आता,
ज़्वर से तपता नर-लोक,
व्यथा-विचल क्षुधा-विकल नर-लोक,
जिसको ढँकता काला शोक !
लेकिन हाय ! ज्वर-प्रतप्त मेरे नयन
देख नहीं पाते, धाई की मंद-मुसकान,
मंद-मुसकान की लहरों के शिखर पर जलते दीप,
निपट निशीथ के विलाप से भरे हुए मेरे कान
नहीं सुन पाते ऐसी कोई तान,
जो इस नीरवता को चीर दे बन कृपाण !

यह कर्कश काल-कुहू निशोधिनी,
इस कठोर कंटकमय पथ पर
एकाकी चरण धर बढने नहीं देती !
नयनों का पर्व कर, नयनों का गर्व सर्व खर्व कर,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ब्रतुकु-गोड क्रीनीडल वेन्नंटुक
वायुवुला परिव्रजिंचक, ईथर ला परिवेष्टिंचक
वितर्तिंनिक स्रोगिंचक, अस्थिकला, तेगिन नाल्कला
हृंपी-शिथिलपु सिंह-स्वप्नान्नै
ऋतु-चंक्रमणपु गायालकु कट्टु कट्टि
वग लंटक, सेग सोक्कक नीरविंचु ना नाडुलु
निर्जन निर्जीव निबिड निश्शब्दपुटवधिकि
ज्ञानांतपु जडतकु यात्रिस्ते
निजं नाकु तेलुस्तुंदि ! प्रपंचमिक मारुतुंदि !
जर रुजलिक गुर्तिचनि ब्रतुकुतीरु तेलुस्तुंदि !

कूलुतुन्नगोडलनु, पगुलुतुन्न आलयान्नि
पाडु पडिन कोनेटिनि पलकरिंचि चेप्पगलनु
पडिपोयिन ओक इटुकनु सरिचेयुमु
नी चेतुलतो, नीचेतुल तो नी चेतल चेतुल तो
फलितान्नाशिचक कष्टिंचुमु !
नव धरित्रि सृष्टिंचुमु !

ई रेक्कलु एगरविक इंकलेदु नाकु, 'रेपु'
इंक रादु 'रेपु' नाकु इंकुतुन्न वार्धक्यं
वर्तमान पत्रं पै पडुतुन्नदि नल्ल मच्च––चरम-संध्य !!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उड़ती पतंग बन गगन छूने नहीं देती ।
जंगलों पहाड़ों के भाषण,
गगन चारियों का दूर घोषण
विश्व-संघर्ष का रव भीषण नहीं सुनने देती,
किन्तु जब मैं बूढ़ा हो जाऊँगा, तो शायद सुनूंगा,
आगामी जन-युग का अपूर्व स्वर, स्रवण-सेचन ।

जिंदगी की दीवार की छाया का पीछा न करूँगा,
हवा की तरह न घूमूँगा, ईथर की तरह न छाऊँगा,
बेतार की तरह न गूँजूँगा !
हाड़ की तरह, कटी हुई जीभ की तरह,
हंपी के खंडहरों का सिंह-स्वप्न बन कर
ऋतु संक्रमण के घावों पर पट्टी बाँध कर,
शाक से आग से अछूती सुन्न मेरी धमनियाँ,
निर्जन, निर्जीव, निबिड, नीरवता की चरम सीमा तक
संज्ञा के अंत की जड़ता तक जड़ जाएँगी,
तो मैं सच जानूंगा—जगत बदल जायेगा,
जरा और रुजा से अनजान जीवन का पंथ मिल जायेगा ।
ढहती दीवारों को, गिरते मंदिर को,
सूखे तडाग को तब मैं यह सीख दे सकूँगा—

"गिरती एक-एक ईंट सँवार लो,
अपने हाथों से, अपने कामगार हाथों से मेहनत करो,
नूतन सृजन करो, फल की आशा न करो !"
और न उड़ेंगे ये पंख, और न आएगा 'कल'
क्योंकि मैं बूढ़ा हो गया हूँ ।
विद्यमान वर्तमान के सफेद कागज पर,
काला धब्बा पड़ा; आखरी साँझ हुई ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओ रात्री !

— गंगिनेनी वेंकटेश्वर राव

कनिकरिंचु,
कन्नु मूयकु,
ओ रात्री
नीकेंन्तो कृतज्ञुण्णि !

ई गाढांधकार-वृत्तं लो
चिरिगिन मनोरथालु
मूल पडितेने
चाल संतोषं !

आद्यंत-रहित तिमिरं लो
गतं गड्ड पलुगुल तो
पोडिचिना बाध लेदु !

एकान्त-निर्शथं लो
हृदंतर-गायाल वकोवकटि
बाध तो कृशिचनीयंडि !

खिन्नंगा, सन्नंगा,
पराभवित धर-शोकं---
वेकुव श्लोकिस्ते विन-लेनु !

विषवातंल तो उषस्सु
ओळ्ळु विरिचि लेस्ते
भयपडि पडिपोता !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हे निशीथिनी

– गंगिनेनी वेंकटेश्वरराव

हे निशीथिनी !
कृपा करो !
झपके न आंख यह,
मैं तेरा आभारी हूँगा !
तिमिर के विकट कुटिल-वलय में
भग्न मनोरथ पड़े रहें यदि
तुझको दोष न दूंगा !

इस काजल की काल-कोठरी में अतीत के
भूत-प्रेत सब मेरी छाती पर नाचें,
पापों की पोथी बांचें !

उर में जहर बुझीं छुरियां फिर कसक उठें
कि व्रण-सुमन खिल महक उठें !
तेरी काली ज्वाला में जल जल कर
चिता से घुल-घुल कर

मैं मर जाऊं, ऐसा वर दो,
बड़ी कृपा होगी !

पराभूत मेरा यह कातर शोक
प्रात का स्तवन-श्लोक हो
वैतालिक-गण विजय-गीत मिस
मेरा कटु उपहास करें यह मुझ को दुस्सह !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

వధల గాథల తో
బరువుగా, బలంగా
నోరు విప్పే పత్రికలు
చదువను నోరు రాదు !

దయా-ధర్మం, ఉరి తీసే ఉదయం
ఒక్కనాటి కైనా వద్దు !

హత్యలు, అబద్ధాల మధ్య
జూలు విప్పే తూరుపు కోండ
చూస్తే గుండె ఆగుతుంది !

పచ్చని నురుగులు కక్కే
పాముపంటి పగలు నా కంటికి పడదు !

ప్రొద్దున్నే అన్యాయం, అమానుషం,
ప్రచురించే, ప్రచారం చేసే
పత్రికల ముఖం చూడ లేను !

నెత్తుటి వరదం ప్రొద్దు పొడిస్తే, నడిస్తే
పాదరసం లా ప్రాకితే,
తనువు తల్లడిల్లదా !

పగ లా, పులిపంజా లా,
సాగే పదునైన ఎండ–
పోడ నే భరించ లేను !

దయ చేసి
ఓ రాత్రీ,
కన్నుమూత
పడనీయవద్దు !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आशा-अभिलाषा की फांसी
यह प्रभात मैं नहीं चाहता
झूठी उषा-कांति के मिस शांति के मिस

भ्रांति यहां फैलाये, इससे
भला ध्वांत ही बना रहे
मेरी पीड़ा का धनुष हमेशा तना रहे !
पूर्व-शैल पर केसर झटका कर
दहाड़ता-प्रात, दहल जाता उर।

फेन उफनता गरल उगलता
पग पर फुफकारता गेंहुआ सांप प्रात यह !
और सवेरा यह असत्य का डेरा
ये अखबार
जिनका धंधा मिथ्या-प्रचार
खून की बाढ़ पर पौ फटती दिन का चढ़ता पारा !

मेरी रग-रग में बहती है
विकल नपुंस क्षोभ की धारा,
बदले-सी, बाघिन के पंजे-सी तीखी धूप !

मेरे मन में कटु दुस्सह उत्ताप !
उससे तो तू ही भली
शीतल निशीथिनी !
कृपा करो,
झपके न आँख यह
मैं तेरा आभारी हूँगा !
हे निशीथिनी !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

భయపడిన వాడు

– అజంతా

ఉరితాళ్ళు నా ఊహలు
సంకెళ్ళు నా మాటలు
నాపై రువ్వని రాళ్ళు నా అక్షరాలు
నాకు లోకం లేదు !

నా గీతం నా నిలయం
నా గీతం నా విలయం
కాంతిని వధిస్తాను
అశాంతిని ఆరాధిస్తాను
అడవిలో వెన్నెలను దుస్తులుగా ధరిస్తాను
అర్ధ-రాత్రి బీభత్సం మేలుకునేటప్పుడు
ప్రపంచాన్ని రాక్షసులు రక్క తినేటప్పుడు
మృత్యువు గవాక్షం లాగ తెరుచుకునేటప్పుడు
శూన్యం మీద శూన్యంగా కూర్చుని
రాలుతున్న నక్షత్రాల మీద నా గీతం రచిస్తాను

ఆకాశం కనబడనిచోట
చీకటి ఉరికంబంలా నిలబడినచోట
కాలం రావం లా వ్రేలాడిన చోట
నిశ్శబ్దం మీద నిశ్శబ్దంగా కూర్చుని
గాలిలో దీపాల మీద నా గీతం రచిస్తాను
నాకు రూపం లేదు

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भय-भीत

– अजंता

मेरी कल्पनाएँ फाँसी के फंदे हैं,
मेरे शब्द हथकड़ी-बेड़ियाँ हैं।
मेरे अक्षर मुझ पर फेंके पत्थर,
मेरी कोई दुनियाँ नहीं।

मेरा गीत मेरा निलय
मेरा गीत मेरा विलय।
कांति का वध करता हूँ,
अशांति की पूजा करता हूँ,
जंगल की चाँदनी की पोशाक पहनता हूँ।

जब निशीथ का बीभत्स जागता है,
वसुधा को असुर-गण नोच-नोच खाते हैं,
मौत खिड़की-सी खुल जाती है,
तो मैं शून्य पर शून्य-सा बैठ कर,
टूटते तारों पर अपने गीत लिखता हूँ।

आसमान जहाँ दिखाई नहीं देता,
अंधेरा जहाँ फांसी के खंभे-सा खड़ा होता,
समय जहाँ लाश की तरह झूल जाता,
वहाँ सन्नाटे पर सन्न-सा बैठ कर
हवा में थर्राते दीयों पर अपने गीत लिखता हू।

मेरा कोई रूप नहीं,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मृत्युवु ना निलयं
मृत्युवु ना विलयं
अरचेतिलो वृद्धुनि ललाटं लाग
अद्दं लो विषकन्य सोयगं लाग
चंद्रुनि मुखं लीनि स्फोटकंम् मच्च लाग

कलकालं ब्रतुकुतानु
नाकु निलयं लेदु
नाकु विलयं लेदु
ना रूपं ना गीतं
ना लोकं ना संगीतं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मरण ही मेरा निलय
मरण ही मेरा विलय
हथेली में बूढ़े के माथे जैसा,
दर्पण में विषकन्या की सुषमा-सा,
चंद्र-मुख पर चेचक के दाग-सा,
मैं हमेशा जीऊंगा ।

मेरा कोई बसेरा नहीं,
मेरा कोई सबेरा नहीं,
मेरा गीत मेरा रूप,
मेरा संगीत विश्व का स्वरूप ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रोजू चूस्तूने उन्नानु

—अजंता

रोजू चूस्तूने उन्नानु
आ कळ्ळ वेनुक उम्मेत्त चेट्लनु, ऊपर क्षेत्रालनु
उद्रेकवंतमैन सरसुलनु, उरि तीय बड्डुतुन्न अक्षरालनु ।

रोजू चूस्तूने उन्नानु
रोजू नडुस्तूने उन्नानु
आ कळ्ळ वेनुक ताळ वृक्ष प्रमाणं लो एदुरय्ये भयाल मध्य
भयंकरमैन ऊरुवुल मध्य
मंडुतुन्न मध्याह्नाल मध्य
मंदार प्पुव्वुल मध्य ।

रोजू चूस्तूने उन्नानु
रोजू नडुस्तूने उन्नानु
अवधारण चेस्तूने उन्नानु
आ कळ्ळ वेंनुक अप्पुडे भूपतन मैन एड्डुपुनु
शाखोपशाखलुगा व्याप्तमये गर्भघोषनु
कोम्म किन्द कन्नीळ्ळ लो निष्क्रमण गीतालनु

रोजू चूस्तूने उन्नानु
रोजू नडुस्तूने उन्नानु
अवधारण चेस्तूने उन्नानु
आ कळ्ळ वेनुक दीपं वेलुगदु
अक्कड संगीतं विनबडदु

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दिन दिन देखता रहा हूँ–

–अजंता

दिन-दिन देखता रहा हूँ,
उन आँखों की ओट, धतूरे के पेड़, ऊसर खेत,
उद्वेग भरे सरोवर, फाँसी पर लटकते अक्षर,
दिन-दिन देखता रहा हूँ,
दिन-दिन चलता रहा हूँ ।

उन आँखों की ओट, ताड़ के पेड़ से सम्मुख खड़े भीति-जाल बीच,
भयानक जाँघों के बीच,
दहकते दुपहरों के बीच,
लहलहे मंदार कुसुमों के बीच,
दिन-दिन देखता रहा हूँ,
दिन-दिन चलता रहा हूँ,
कान दे कर सुनता रहा हूँ,

उन आँखों की ओट, धरा पर सद्यः– पतित रुदन,
शाखा-उपशाखा में परिव्याप्त गर्भ-शोक-घोषण,
शाखा तले दृग-जल में निष्क्रमण-गीत-स्वप्न ।

दिन-दिन देखता रहा हूँ,
दिन-दिन चलता रहा हूँ,
कान दे कर सुनता रहा हूँ,
उन आँखों की ओट, दीपक नहीं जलता,
वहाँ संगीत सुनाई नहीं देता ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कालरथम्

– नार्ल चिरंजीवी

मंचु वंटिदि गतं
मळ्ळी कनिपिंचदु
वेनक्कु चूडकु मरि
वेळि पोयिदेपुडो !

नी लो कुसुमिंचिन
पूलनु चिदिमेस्तू
गतं वेळिपोयिदि
स्मृति-गर्भ लोनिकि !

कत्ति वंटि कालान्नि
गतं प्रसविंचिदि—
चिरिगिन जीवितालु
चिवुरिस्तायि सुमा !

चिर-स्मृतुल मुट्टडि
चेर बेट्टुतोंदि निन्नु,
मळ्ळिंचु रथान्नि
मनुषुलुन्न चोटिकि !

पादरसं वंटिदि
वच्चे भविष्यत्तु,
निशीथालु पगिलिन
विशाल कांतिरेख !

कालं विलुवैनदि
विलुवैनदि ब्रतुकु
कनिपिंचे दंता
मनदे, अदि मनदे !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

काल-रथ

–नार्ले चिरंजीवी

हिम सा भंगुर अतीत
फिर न दिखाई देगा
पीछे मुड़ कर न देख
धूल भरा पथ होगा !
कुसुम कामनाओं के
मसल-मसल कुचल-कुचल
दूर खो गया अतीत
स्मृति-पथ में हम को छल !

उस अतीत का आत्मज
वर्तमान का कृपाण
मृदुल-हृदय-रुधिर सिक्त
मिलन-निशा का विहान !

भीषण संघर्ष-पंथ
है निदाघ सा वसंत;
देखो, रथ-चक्र वहाँ
रक्त-चिह्न हैं अनंत !
पारे सा ही झिलमिल
ढुलमुल टलमल भविष्य
उसके मुख पर रहस्य
का झीना पट अदृश्य
है अमूल्य काल और
है अमूल्य यह जीवन;
कांति-किरण सा दमका
देखो भावी- आनन !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

द्वन्द्वातीतम्

—नार्ल वेंकटेश्वर राव

वेलुगु वेनुकने यिरुलु
इरुल वेंनुकवे वेलुगु—
अटु चूडु !
उदय-संध्या शोभ !

एँण्ड लोने वान
वान लोने येंण्ड—
इटु तिरुगु
इंद्र-चापं सोबगु !

ब्रतुकु वेन्नंटि मृति,
मृति नीडने ब्रतुकु—
विनवेमि ?
पुरिटिटि केरित !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

द्वंद्व से परे–

–नार्ले वेंकटेश्वर राव

निशि के पीछे दिन
दिन के पीछे निशि
वह देखो
सन्ध्या की छाया !

धूप में ही मेह
मेह में ही धूप
लो देखो,
इंद्र–धनुष–शोभा ।

जीवन के पीछे मरण
मरण के पीछे जीवन
वह सुन लो–
प्रसव-गृह की किलकार ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नीवु पोइन सायंतनम्

–अब्बूरि वरदराजेश्वर राव

नीवु पोइन
सायंतनम्
नव्व लेदोक तार कूडा ।

जलदरिंचिन
आकाशमे
ओक्क पेट्टुन नव्वुकोन्नदि ।

निजंगाने
नीकु तेलियदु
चावु लेदनि, रेपु रादनि ।

निजंगाने
नीकु तेलियदु
भुवनमंता बुदबुदम्मनि ।

रणम् कन्ना
मरणं नयम्
चरम गानम् शरणम्मनि ।

नुव्वेरुगुदुवु
निजम् नेस्तम्
व्रदुकु कडलिकि पोंगु रादनि ।

नुव्वेरुगुदुवु
निजम् नेस्तम्
कडकु मृत्युवु कदलि पोदनि ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तुम चले जिस साँझ–

–अव्वूरि वरदराजेश्वर राव

तुम चले जिस
साँझ नभ में
नहीं विहँसा एक भी तारा ।

भीति-रोमांचित
गगन निज में
सिमिट कर रहा मन–मारा ।

एक तुम ही
जानते थे
मौत भी है रात का राही ।

एक तुम ही
जानते थे
विपुल जग बह बुलबुले सा ही ।

रण निखिल जीवन,
मरण ही
जन-शरण, पर नहीं जय-अपजय !

और जीवन–
जलधि-वेला
क्रूर मरण; तरंग ही अक्षय !

मृत्यु जीवन
की क्षुधा पर
सदा पहैरा दे रही साथी !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नुव्वेरुगुदुवु
निजम् नेस्तम्
सृष्टि कायुष्षेंतवरको ?

नुव्वेरुगुदुवु
निजम् नेस्तम्
तारकावळि देनि कोरको ?

नुव्वेरुगुदुवु
निजम् नेस्तम्
संध्यागमन-रहस्य-गाथं !

अंदुकनि नुवु
चिवरिदाका
भोगजीवम् भुजिंचावनि !

ऋतुकुनंता
मंत्रु वेन्नेल
मसृण कांतिग सृजिंचावनि !

जातकालकु
जीवितालकु
तेगनि बंधम् रचिंचावनि !

वसंतम् लो
हसिंचे सुम
दळं वलंने चिवरि-दाका !

निश्शब्दपु कासारपु लोतुल नुंचि
निर्दुरिंचिन पातालपु तलुपुलु चिंचि
एव्वरिदा संदेशम् ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिंदगी
मौत के अंडे
सर्वदा ही से रही साथी !

गगन के शत
कोटि तारक
चिर-विस्मृत प्रिय बंधु-आनन क्या ?

घन-घटा की
नील-कज्जल
छटा नर का मोह-कानन क्या ?

चरम-संध्या
में मनुज को
चाहिए क्यों दीप भी साथी !

मोड पर वह
जा खडा है
लक्ष्य निपट समीप ही साथी !

सकल सुषमा
यहीं होगी,
देखने वाला नहीं होगा ।

दो नयन के
बिना जग का
यह मुख उजाला नहीं होगा !

निपट निस्वन सरोवर के
गहन गहरे पंक में घुस
अतल के सोते तिमिर से
कौन वह मुझ को पुकार रहा है ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

:ओक कवित–

- रायप्रोल राजशेखर

कालम् ओक कन्नीलल वागुव
ब्रतुकाक कन्नीलल कानुक
पगलल्ला तलुपु तट्टिन नीकु
संदिग्धालु मुसिरिन सायंत्रम् वेळ
तेरुचुकोंटुंदि सौधद्वारम्;
कानि, दिपाल प्राणालनु
दोंगलिंचुकु पोतंदि रात्रि।

मलिसंजेल कूडलि लो
लोकम् तो विडिपडि नी देहम्
कल ला मासि पोये वेळ
कनुपिंचेदल्ला मिलमिललाडे
तीरनि शेष संदिग्धम्
आ क्षण मोकटे भूत-भविष्यालंटनि वर्तमानम् !

आ क्षणम् क्रितम् क्षणं लो पुट्ट लेदु
आ क्षणम् मरु क्षणम् लो चाव बोदु;
आ क्षणान नीवू दीपम् पट्टु कोंटावु !
गडचिन दंता दिगम्भ्रिगि
आ क्षणम् नी दनुको !

दारि पोडगुना मैलु-राल्ल कल्लु
दारि पोडगुना गडियाराल मुल्लु;

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एक कविता –

रायप्रोलु राजशेखर

समय ही आँसुओं की भेंट है,
जीवन ही जहर की घूँट है !

दिन भर किवाड़ खटखटाने के बाद
संशय छायावृत साँझ की वेला में
खोला जाता द्वार महल का ।
लेकिन दीवों के जलते प्राण
चुरा ले जाती रात !

सांझ के पिछले पहर तेरी काया
बन जाती अशरीर छाया
झुट-पुटी में झिलमिलाते तारे
और वसुधा पर शेष सब संदेह मात्र !

और उस क्षण
न अतीत, न भविष्य
विद्यमान वर्तमान एक-मात्र ।

न जीवन, न मरण
और तू झुरमुट में,
झुटपुट में एक बलता दीपक बन जाता,
शेष सब अंधकार बन जाता ।

राह में बिछी हुई पत्थरों की आंखें
राह में बिछी हुई घड़ियों की सुइयाँ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दारि किरु वैपुला मुल्लपोदल-कल्लु
दारि पोडगुना काल्ल किंद मुल्ल नोल्लु
चूड लेनि आ मेलुकोन्न कल्ल मध्य
ई चिरतीरम् लो ऐंत नडचिना
गम्यम् दिङ्मंडल-नेपथ्यम् लो निक्षिप्तम् !

ओक सारि कन्नेत्ति चूडु
आ रेंडु पक्षुल रम्यानुरागम्
अंतरिक्षम् लो संचरिंचु
आ जनन-मरणाल निद्दंपु जंट !
ओक सारि कन्नेत्ति चूडु
पैनुन्न नीलाकाशम् !
आ विप्पिन ताल-पत्रम् लो
काल-मलिलन महाकाव्यम् !

अर्थम् अथिचक आलोचिंचु !
कालम् अनंतमइना–
मानव-जाति जीवितम् मात्रम् काडु
चीकटि लो चितिला
कोन्नि गडियल पाटु
आलोचनल मंटल मध्य
जीविंचडम् नेर्चुको
मंटलु त्रागडम् नेर्चुको !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राह के दोनों ओर झाड़ियों की आंखें
राह के दोनों ओर टूटी हुई पांखें
और इस राह पर चाहे जितनी दूर चलो
लक्ष्य सदा क्षितिज की यवनिका में छुपा रहता ।
एक बार जरा आंख उठा कर देखो तो –
सूने ऊंबर में वे पंछी दो ;
जोड़ी है शायद, हाँ, हाँ, वही
जनन और मरण की जोड़ी है।
दोनों के पांव में एक ही बेडी है ।
ऊपर वह नीलम का आसमान
जैसे कोई प्राचीन भोज-पत्र
जिस पर लिखित समय का महा-काव्य,
केवल अनुभाव्य ।

अर्थ की व्यर्थ चिंता कर अनर्थ न करो
अपना दिमाग लड़ा कर सोचो
समय है अनंत, पर जीवन अनंत नहीं,
संसृति-निशीथ में जलती है चिता
कुछ क्षण तक, व्यक्ति के जीवन तक ।
फिर बुझ जाती है ;
नीरव निशीथ के अंक में
विलय हो शांति की विभूति पाती है ।

रे मानव ! विचारों की अग्नि बीच जीना सीख लो !
अग्नि को पीना सीख लो !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उदयिंचनि उदयालु

—केशवराव

ऍटला चेप्पनु,
ऐमनि चेप्पनु,
कनिपिंचे सूर्युडु भगभगा मंडिपोय्याडु !

अन्यायं ला रक्तंतो तडिसिन ।
आ राळ्ळलो इंकिपोय्याडु

एर्रनि राळ्ळे चरित्रकु पुनादिगा
निलचि पोयायि ।

अलसि सोलसि
प्रियुल कोरकु वेचारेन्दरो राणुलु
रात्रुललो
ई राळ्ळपै ।
कललो
वारि कनु-कोलकुललो
निट्टूर्पुललो,
अस्तमिस्तुन्न पुन्नमलु कदिलि पोयायि !

राणुलु राळ्ळय्यारु
वाळ्ळत लल्लो पूसिन पूलु तंगेळ्ळय्यायि !
आ तिरिगोच्चिन मनिषिनि चूड,
आ राळ्ळनु तोलिचे मनिषिनि चूडु
एदो राळ्ळ लो चूडालनि प्रयत्नं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पौ फटेगी नहीं–

– केशवराव

क्या बताऊँ ?
कैसे बताऊँ ?
देखते ही देखते सूरज धू धू कर जल गया।
बेचारा खून से भींगे उन पत्थरों में खो गया।

और लाल पत्थर ही
इतिहास की बुनियाद बन कर रह गए।
कितनी ही राणियां
अपने प्रेमिकों की राह देख-देख थक गईं।

रात में,
इन पत्थरों पर,
उनके नयनों की कोरों में,
सपनों में,
लंबी उँसाँसों में,
कितनी ही अस्त-प्राय राकारजनियाँ चली गईं।

राणियाँ पथरा गईं
वेणियों में गुंथे फूल धूल बन गए।
लेकिन उस आदमी को देखो !
पत्थरों को तराश कर गढ़ते उस आदमी को देखो !
निष्प्राण शिला में वह
क्या-क्या देखने की कोशिश कर रहा है ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अतनि केट्ला तेलुस्तुंदि वेचि वेचि
ओ हृदयं आ प्रवहिंचे नदि लो करिगि पोयिंदनि !

एप्पटिकी नक्षत्रं वले एदुरु चूसे
नेलवंक तुंडि पुन्नमनु चूसे
आ मूल राळ्ळलोनि राति मूर्तिनि चूडु-
गालिकेकोट्टुकु पोयिन एन्नो एदुरुचूपु माल ला सेवि!

एन्दु कंत विषादं, नव्वु लो ?
एन्दु कंत आवेदन राति गोन्तु लो ?

उदयालू, अर्धरात्तुलू,
एन्दुकंत निरीक्षण कळ्ळल्लो ?

अन्वेषण लो जीवितमे आहुतये त्याग मेन्दु कंत !
आ कळ्ळल्लोकि चूडु,
गुंडेल्लो गुच्चुकुपोये आ चूपुल्लोकि चूडु !

नयागरा जलपातालू,
कोटि वेन्नेल रात्रुल चिक्कनि निश्शब्दालू,
तेगिन गुंडेल चितुकुल रक्तपु जीरलु,
आ रक्तपु चारल्लो पूसिन एर्र गुलाबी रेकुलु !

ओक्क नव्वु-नव्वु !
मनसारा हृदयं लोकि दाचिव्वु
अवन्नी आ कोटानुकोट्ल सुंदर स्वप्नालन्नी
आ कौगिलिन्तलु निट्टूर्पुल
रहस्यपु आशलन्नी नीवौताय्
ओक्क चूपु अलसत्वंगा चूशावो,
निश्शब्दंगा नडिचि पोयावो,

रेकुली मुडुचुकुंटायि !
इंक उदयमे नीकोसं उदयिंचदु !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह क्या जाने कि, राह देख-देख एक हृदय
बहती उस सरिता के जल में घुल-पिघल गया है !

हमेशा सितारे की तरह राह देखती,
चाँद की कटार में पूनों को देखती
उधर, उस कोने में पड़ी पत्थर की मूरत को देखो !

हवा में उड़ती
कितनी निगाहों की मालाएँ गुंथी उसके लिए ?
क्यों वह विषाद हँसी में
क्यों वह वेदना शिला के गले में ?

देखो ! उन आँखों में
छाती में चुभती उन निगाहों में
देखो तो, नयागरा जल-प्रपात !
निपट निस्वनता भरी करोडों चाँदनीं-रात !

विक्षत हृदय के ठीकरों में, लाल खून के डोरे,
और उस खून की लाली चुरा
फूलते लाल-लाल गुलाब की पंखुडियाँ !

एक बार हँसो तो,
अपना हृदय खोल राह दो तो, वे सभी,
कोटि-कोटि सुंदर स्वप्न सभी,
वे अधीर आलिंगन, निरीह निश्वास,
निगूढ आशाएँ सभी तेरी हो जाएँगी।

लेकिन उपेक्षा के साथ यदि देखोगे,
चुपचाप चले यदि जाओगे
तो वे पँखुडियाँ सिकुड़ जाएँगी—
और तेरे लिए पौ फटेगी नहीं !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आकाशं लो डेग

—केशवराव

गालिमीद तेलि पोतू
आकाशं लो निर्लक्ष्यंगा सुन्नालु चुडुतोंदि ओक डेग–

वलयालु वलयालु वलयालुगा
क्रिंद समुद्रं ओड्डु नगरं पेडुतुन्न घोष विनकुंडा –
लोयलु पच्चिक कंबळ्ळ किंद दाचुकुन्न लोतुलिन चूडकुंडा–

कोण्ड शिखराल कंटे मरित एत्तु एरिगि एगिरेगिरि
आकाशंलो सुन्नालु चुडुतोंदि गालि मीद तेलि पोतुन्न डेग –

तानु निमिचु कुन्न वलयं लोने तानु
एन्त सेपू तिरुगुतुन्नाननि तेलीदा डेगकि !
तानु चुट्टुकुन्न आ वलयं नुंचि
बयट पडक पोते आ वलयानिके तानु चिवरिकि
बलि अयि पोवलसि वस्तुंदनि तेलीदा डेगकि –

गालि मीद रेंक्कलिन वदिलेसि
वोय्यारंगा कळ्ळु सगं मूसेसि
सन्नगा ईल-पाटतो पल्टोलु कोडुतू
शुन्यं लो शून्यंगा वलयालु चुट्टुकुंटोंदि डेग –
एप्पटि कप्पुडू कोत्त वलयालु गालिकंटे वेगंगा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आसमान में बाज

– केशवराव

हवा में तैरता,
नील-नभ में अठखेलियाँ करता
बार बार चक्कर काट रहा एक बाज !
गोल-गोल गोल-मटोल चक्कर काट रहा एक बाज !
वह नीचे सागर के किनारे-नगर का मंद्र-घोष नहीं सुनता
हरियाली की नरम कालीन के नीचे
छुपी घाटियों गहराई, नहीं देखता ।

शैल-शिखर से भी ऊँचे ऊँचे ऊँचे उड़ कर, उड़ उड़ कर;
आसमान में चक्कर काट रहा, हवा में तैरता बाज !
अपने बनाये हुए घेरे में आप ही
कितनी देर से वह चक्कर काट रहा, यह नहीं जनता बाज !
अपने बनाए हुए घेरे से
बाहर न निकलने पर, अपने बनाये हुए घेरे में
आप ही बंधना होगा, यह भी नहीं जानता वह बाज ।

पंखों को पवन पर छोड़ कर
मौज से आँखें आधी मूंद कर
अपने आप गुन-गुनाता, कलाबाजी दिखाता
शून्य में शून्य के से घेरे बना रहा बाज !

हवा से भी तेज उड़ कर,
नित नये घेरे बनाने के दर्प में

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निर्मिस्तुन्नाननै गर्वं तो
कोन्त दूरं टपटपा रेक्कलिन विलासंगा कोट्टुकुनि
तिरिगि गालि मीद रेक्कलिन वदिलेसि
सँग कळ्ळु मूसि, ईल मीद तेलि पोतू
चुट्टुकुन्न वलयंलो बंदी अयि पोतोंदि

आकाशं लो गिरगिरा तिरुगुतुन्न डेग –

वलयाल लोंचि वलयालु चुट्टकोडं तप्प
तन मीद आकाशं वोम्पुतुन्न नीलपु आनंदान्नि
अस्तमिस्तुन्न सूर्युडु तन रेक्कलमीद वदिलि पोयिन
बंगरु किरणालु चेस्तुन्न जीवन नृत्यान्नि
गालि अललु अललुगा
कदिलिवोच्चि वेंन्ट तेच्चिन्न अडवुल परिमळं लो

तननु मुंचेत्तुतोंदने विषयमे तेलीक –
आलोचिंचक –
गालि मीद रेक्कलिन वदिलेसि
वोय्यारंगा सगं कळ्ळु मूसेसि
चुट्टुकुन्न वलयं लो
आकाशपु नीलि-रिब्बनु कोसनु मुक्कुन कररचुकुनि

वलयालु वलयालु वलयालुगा
वलयालु चुट्टुकुंटोंदि आकाशं लो ओक डेग –

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

थोडी दूर तक मजे में पंख फड़फडा कर,
फिर हवा में पंख छोड़ कर–
अधमुँदी आंखें ले तिरता, गुन-गुनाता
अपने बनाये घेरे में आप ही बंदी बन जाता,
आसमान में चक्कर काटता बाज !

घेरे में से घेरे बना रहा बाज –
मगर वह यह नहीं जानता
कि आकाश उस पर विनील आनंद ढाल रहा !
कि डूबते सूरज की सुनहरी किरणें
उसकी पाखों पर जीवन का नर्तन कर रहीं !
कि हवा लहराती आती और
वन-वन के परिमल से उसे डुबो रही !
वह कुछ सोचता ही नहीं।

पांखें पवन में छोड़ कर,
मौज से आंखें आधी मूँद कर
अपने बनाये घेरे से
आसमान के नीले रिबन की छोर चोंच से पकड़ कर,
बार बार गोल-गोल गोल-मटोल घेरे बनाता
चक्कर काट रहा एक बाज !

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आकाशान्नि वेलिगिस्तानु

– केशवराव

प्रपंचं
गोंगळि पुरुगुला चीकटिनि मेसि,
चीकट्लोने गूडु कट्टुकुंटु न्नप्पुडु,
मनिषि
पिशाचाल मध्य मांत्रिकुडिगा,
अक्षर लु शिललुगा मारि पोयि
नक्षत्रालन्नो ओक-टाकटिगा रालिपोयि,
नर-नराल्लो अंधकारं आवरिस्तुन्नपुड,
चरित्र कोरल सिंहासनं नुंडि लोच
कालान्नि निलेसि,
राति मंटल गुंडेल्लो
ना गीत रचिस्तानु !
ना गीतं तो
आकाशान्नि वेलिगिस्तानु !

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अंबर को दीपित करूँगा !

– केशवराव

जब यह संसार
कमली कीड़े की तरह अँधेरे को चाट कर
अपना घोंसला बनाने लगेगा !
मानव
भूत-प्रेत-गण के मध्य मांत्रिक बन जाएगा,
अक्षर सब पत्थर बन जाएँगे
तारे सब एक-एक कर झर जाएँगे
और नस-नस में अँधेरा छा जायेगा
तब मैं इतिहास की दंष्ट्रा के सिंहासन से उठ कर,
समय को थाम लूंगा ।
पत्थर की ज्वाला की छाती पर
अपना गीत रचूँगा !
अपने गीत से
अंबर को दीपित करूँगा ।

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उष आगमनम्

– मादिराजु रंगाराव

नीवु चैतन्य-सीम लो
ऊहा-शिख वले अडुगिडेटप्पुडु
ना अभिमति नी केदुरै
तोड्कोनि वस्तुंदि कौगिलि पूनि ।

अरणि नुंडि अग्नि वले
नी नुंडि अवतरिस्तुंदि मरो रूपम् ।
ना लो कि विश्वासं तेच्चि
आशकु आकाशरूप मिस्तुंदि ।

सुडिगालुलु रेगुतुन्नवि मति लो
सुडिगुंडालु भ्रमिस्तुन्नवि नेत्तुरू लो
कासारं लो नौक ला हृदयं लो अवतरिस्तुन्नावु नीवु ।
नी रुप-कला-सौंदर्यं कन्नुल मेरूपु लोने दागि लेदु
कन्नीटि चिनुकुल लोनू निंडि उंदि ।
उषस्सुगा एदुरौतुन्न नीकु
स्वागतम् पलुकुतुन्ना नगिन नै ।
द्यावा-पृथिवी देवतलु आशीस्सुलु प्रसरिस्तुन्नारु ।

नी गुरिंचि एन्नि कललु कन्नानु,
नी निज-रूपम् मरचि पोयेटंतगा
नी गुरिंचि एंतगा कललु कन्नानु
इक मेल्कोने स्थितिकि रालेननु कोन्नानु ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उषा का स्वागत

–मादिराजु रंगाराव

जब तुम चेतना की सीमा पर
कल्पना की अनल-शिखा बन कर पग धरती हो,
तो स्वागत करती मेरी भक्ति को
स्वीय-विभा से द्योतित करती हो।
अरणि-निहित अनल ज्यों
तुम से ही होता अवतरित एक भिन्न रूप,
मुझ को मिलता नव-विश्वास,
आशा को मिलता सदवकाश।

उठता मन में एक बवंडर,
लोहू में चक्कर मारते लाख लाख भँवर;
सरसी में नौका सी धीमे तुम आती हो,
तेरी रूप-कला-सुषमा नयनों की तडित्-प्रभा-मात्र नहीं;
दृग-जल की झीनी फुहार में भी भरी वही।
ऊषा रूप में उतरती तुम्हारा
अनल-शिखा बन स्वागत करता मैं।
द्यावा-पृथिवी के देवता-गण के आशीस शीस पर धरता मैं।

जाने, कितने सपने देखे मैंने, तुझको पाने,
इतने कि तुम्हारा निजी रूप भुला देने–
को तैयार हुआ; कितने कितने सपने देखे!
सोचा-फिर न कभी जागूंगा, इतने सपने देखे!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अग्नि दिशलु तेरचुकोन्नाइ
नीवु वच्चे दिश लोनि वेलुगु तो ।
चीकटि चीरलु तोलगि, मंचु-रविकलु विडि,
गालि पोरलु ओदिगि, वेलुगु रूपम् एर्पडुतोंदि ।

भूमि वले नीवु कनुपिंचि नपुडु
सृष्टि कि मूल-शक्ति वनुकोन्नानु –
ध्वनि लो स्फूर्ति-शोभ पोंदिनपुडु
प्रणव-तरंग-रूपा मनुकोन्नानु ।
गतम्लो वेळळु तन्नुकोन्न
पुरावृक्षानि केकरडो पूचिन पूवु गा उन्न नीवु
स्वप्नम् लो ऊपिरि निलुपु कानि
स्वर्ण-खचिता रूपम् तो
गगन विहरणम् सल्पिपे नीवु
वर्तमानम् पै चूपु लिडि
जीवित-चित्रानि कि जीवरेख वै
वस्तुन्नावु भूमि पै अडुगिडि ।

चैतन्यम् विरिसिन आत्म-रोदसि लो
भामति उषस्सु अवतरिस्तुन्नदि ।
सहमति अग्नि मूर्ति सूर्युनि वले
प्रसरिंचि परीवृतुडनै उन्नानु ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तव शुभागमन-पंथ की आभा
दिशि-दिशि को बांट रही स्वर्णिम शोभा ।
रजनी का चीर फटा, हिम का आवरण हटा
पवन की परत परत काट कांति-रूप छंटा ।

भुवि के रूप में तुम्हें देखा जब
संसृति की मूल-शक्ति तुमको माना ;
ध्वनि के रूप में तुम्हें पाया जब
प्रणव-नाद-रूपिणी तुम्हें जाना ।
सृष्टि-आदि में स्थापित मूल वाले
सनातन प्राण-तरू के सुमन-रूप पुष्पित तुम
स्वप्न में नित्य-नूतन जीवन पा
स्वर्ण-खचित रूप धार
गगन-विहरण में संतत निरत तुम
वर्तमान पर निज वीक्षण पसार
जीवन-चित्र की ज्वलित-प्राण-मई रेखा बन
करतीं इस कठिन धरा पर पदार्पण ।

चेतना से विकसित आत्म-रोयसी में
भास्वती ऊषा हो रही अवतरित ;
अरुणाभा-परिवृत अनल-रूप भास्कर सा
सहचर बन कर रहा मैं उसका स्वागत !

——

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रस्थानम्

– मनमोहन साहे

निगि मिरि-मिरि चूस्तुन्न रात्रि
गब्बिलाल्ला मेघालु एगुरुतुन्न रात्रि
पगटि समाधि लो पाति पेट्टिन चीकट्लु
भूताल्ला स्वैर विहारम् चेस्तुन्न रात्रि
नग्नंगा कालम् जटलु विप्पुकोनि
क्षणाल पुर्रेल तो गुंडे मीद नर्तिस्तुन्न रात्रि ।

चुक्कल मीद लोहपु तुनकल्ला, निंगिगुंडेल्लो मेकुल्ला उन्न,
नक्षत्र ल मीद आलोचनल रेक्कल तो एगुरुतुन्नानु
विकसिंचिन ऊहल कन्नीळ्ळ
मडुगुलो प्रवहिस्तुन्नानु ।

नैराश्यं गच्चु मीद
कुविमर्शल अरटि-तोक्कलु परचिन
मार्गं लो जारि-जारि पडुतुन्नानु ।
निब्बराल पडग लेत्ति
बुसलु कोडुतुन्नानु ।
एलागो मुंदुकु वेडुतुन्नानु !

रालुतुन्न पुप्पोडि ला उल्कलु,
एगिरि पोए भ्रमरं ला तोक-चुक्क
द्राक्षासवं ला, चुक्कल नुरुगु तो
ऊरिस्तुन्न, निशा-देवि नल्लनि सौंदर्यम्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रस्थान

– मनमोहन साहे

आसमान घूर-घूर देखता कि यह रात!
दल के दल चमगादड से बादल उडते कि यह रात!
दिन की समाधि में गडे हुए अँधेरे के
भूत-गण स्वेच्छा-विहार करते कि यह रात!
नग्न-काल की जटाएँ बिखेर
क्षण-कपाल धार, वक्ष पर नृत्य करती सी यह रात!

तारों पर, लोहे के टुकडों से,
आसमाँ की छाती पर जडी हुई कीलों से उन सितारों पर
विचारों के पंख पसार कर उड रहा मैं।
उमडती कल्पना के आसुंओं के
मानस में बह रहा मैं।

निराशा के बिछलते फर्श पर
दुरालोचना के केले के छिलके बिछी
राह पर फिसल-फिलल गिर जाता मैं।

फिर भी धीरज धर, फन उठा कर,
फुंकारता ही जाता।
जैसे तैसे आगे बढ़ जाता।

बिखरते पराग सी उल्काएँ,
उडते भौंरों से धूमकेतु
द्राक्षासव सम, तारों का फेन बिखेरती

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विकटिंचिन मस्तिष्कम् लो
भैरव-भेरील्ला म्रोगुतुन्न निमुषालु,
ना अड निलिचायि,
ना वेंट नडिचायि।

महा-मनीषि सुधाकरुडु
विसुरुतुन्न स्वागतांशुवुलु
आकाशपु इंटि कप्पु अंचुलु पट्टुकोनि
इक्कडिक नाकु तेलियनि चाटुकु
नेनु वेल्ल वलसिन,
कानि, नाकु तेलियनि गम्यानिकि
आ कराल काल-रात्रिनि
प्रस्थानं प्रारंभिचानु।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ललचाती निशा-देवी की असित सुषमा;
विकृत भ्रमित मस्तिष्क में
भैरव-भेरी-नाद से गूंजते क्षण-गण !
मेरे पीछे खड़े,
मेरे पीछे पड़े !

महा-मनस्वी सुधाकर के
बिखेरे स्वागत-किरण
अंबर को छत के कोने पकड़ कर,
दूर कहीं, किसी अजानी जगह,
जहाँ मुझे जाना है,
पर जो मेरे लिए अजाना है—
ऐसे गंतव्य को, उस भीषण काल-रात्रि में
मैंने प्रस्थान प्रारंभ किया ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ना वारसुलु

–के. यादव रेड्डी

ई चेतुललोकि रात्रि वच्चि चेरक मुंदे
अस्तित्वं प्रवहिस्तुन्न तीगल नुंडि व्रेलाडिन
रोड्डु प्रक्क दीपं वेलुगु परिधि लो–
नेनु प्रसंविचिन आकारल शरीराल पै व्यापिंचिन
धूलिलेपनं तो गालि कि एंदिगिन अस्थि-पंजराल लो
भारतीय ऋषुलु।
ई ऋषुल स्नायुवुल्लो
चीकटै प्रवहिस्तुन्न चिक्कनि नेत्तुरु !
प्रक्कने पारे नुदुटि चेमट कालुव–
कालुव निलचि पोतुंदि, कारुलनु मुंचेत्तुतुंदि !
रोड्डू मीदि नीडल पै नुंडि पारुतुंदि–
वेलुगु परिधि मात्रम् मुनगदु।
आ परिधि चुट्टू, चीकटि चुंबिच कुंडा
स्मशानम् नृत्यम् चेस्तुंदि।

ना वारसुलु
आध्यात्मिक देशम् प्रतिनिधुलु।
चलि तो आडुतारु, दुम्मुनु प्रेमिस्तारू;
दुम्मुल्लो उम्मुल्लो घनीभविंचिन
ई कटिकि राति मेडल चुट्टू
कुक्कल्ला पारा कास्तारु।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मेरे वारिस

-के. यादव रेड्डी

इन हाथों में रात के आ टपकने के पहले
अस्तित्व के प्रवाह से सजीव तारों से लटकते
सडक पर की बिजली की बत्ती को रोशनी के दायरे में
मेरी प्रसवित आकृतियों के तन पर व्यापित
धूलि-लेप से पैदा हो हवा में पलते अस्थि-पंजरों में
भारतीय ऋषि-मुनि-गण ।
इन ऋषियों की धमनियों में
तिमिर के प्रवाह सा प्रवहित सघन शोणित
और बगल में बहती माथे के पसीने की नाली ।
कभी कभी नाली बंद हो जाती, मोटरों को डुबो देती ।
सडक पर की छायाओं पर होकर बहने लगती ;
सिर्फ रोशनी का दायरा ही बच जाता ।
और उस दायरे के चारों ओर,
अँधेरे को चूमने से रोकते श्मशान का नर्तन !

मेरे वारिस
इस आध्यात्मिक देश के प्रतिनिधि ।
शीत से खेलते, धूल से प्रेम करते
धूल में, थूक में सर उठा खड़े इन
कठिन पत्थरों से बने महलों के चारों ओर
कुत्तों से घूम घूम पहरा देते ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वेन्नेला-कवि-

– नायनि कृष्णकुमारी

वेन्नेल कुरुग्तोंदि
अमृतम् लांटि वेन्नेल !
भूमिनि मुंचि दिक्कुल्कु पोंगि
क्रिंदकि पाल-वाक ला जारुतोंदि !
उत्तुंग-तरंग-राशि तीरस्थ पृथु-शिलाग्र-स्पर्शनं चेसि
अंचुल वेंबडि नुरगलु क्रक्कुतू जारिनट्लु
वेन्नेल कुरुस्तोंदि !

तागिनंत तागि, मत्तेक्कि
अक्षयंगा ऊरे ई वेन्नेलनु
ओल्लंता पुलुमुकोनि परवशिस्तोंदि जगति ।
निर्मलिन स्फटिक-गळ्ळा स्वच्छगामेरुस्तू
सदा शिवत्वान्नि पोंद रहिस्तोंदि ।

अप्सरस लांटि वेन्नेल होयलु चूडनैना चूडक
कवि चंद्रुडि मीद कवित्वं व्रास्तुन्नाडु ।
मोहिनि लांटि वेन्नेल कव्विस्तू उंडगा
तल वंचुकोनि चकचका व्रास्तुन्नाडु
कवि चंद्रुडि मीद कवित्वम् !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चाँदनी और कवि-

— मायनि कृष्णकुमारी

चाँदनी बरस रही
सुधा सी चाँदनी !
रसा को डुबो कर, दसों दिशाओं में छाकर
पय-प्रपात सी झरझर झर झर रही !
उत्तुंग-तरंग-धारा तीर की पृथुल-शिलाओं का स्पर्शन कर
किनारे पर फेन उगलती, गिरती हहरा कर !
चाँदनी बरस रही जगती पर !

जी भर करपी-पीकर, मद से मत्त होकर,
अक्षय-स्रवित इस चाँदनी को
तन पर लिपटा कर परवश हो रही जगती ।
निर्मल स्फटिक-गोल सी शुभ्र-स्वच्छ दमकती ।
ज्यों सदा-शिवत्व पाकर चमकती ।

अप्सरासी चाँदनी के सुषमा-शृंगार से बेखबर,
बेचारा कवि चाँदनी पर कविता रच रहा !
मोहिनी सी चाँदनी ललचाती, छेडती;
मुंह मोड कर, कवि बेखबर कविता रचता जाता—
चाँदनी पर, और उधर वृथा ही सुधा सी चाँदनी बरस रही !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दक्षिण भारत प्रेस, खैरताबाद, हैदराबाद-४